CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राणों का सौदा

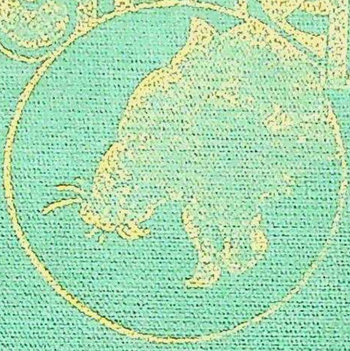

श्रीराम शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राणों का सौदा

State Museum.
LUCKNOW.

हिंदी की पुस्तकें [illegible] का पता
+ गंगा [illegible] +
३० अमीनाबाद पार्क, लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

599.277442

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राणों का सौदा

लेखक

श्रीराम शर्मा

चित्रकार

श्री आर० एस० पण्डित (काठियावाड़)

प्रकाशक
साहित्य-सदन, किरथरा, पो० मक्खनपुर, (मैनपुरी)
शङ्कर-सदन, आगरा

State Museum.
LUCKNOW.

सन् १९३९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिलने के पते

(१) साहित्य-सदन, किरथरा,
पो० मक्खनपुर (मैनपुरी)
E. I. Ry.

(२) शङ्कर-सदन, लोहामंडी, आगरा

(३) विशाल भारत बुकडिपो,
१९५/१, हरिसन रोड, कलकत्ता।

मूल्य तीन रुपए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समर्पण

उनको, जिनकी धमनियों में गरम ख़ून
दौड़ रहा है, और जो जीने के
लिए मरना जानते हैं।

श्रीराम शर्मा

State Museum.
LUCKNOW.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिचय

'प्राणों का सौदा' लेखक के बारह लेखों का संग्रह है। इनमें से कई लेख प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हो चुके हैं।

इस संग्रह के दो लेख—"अपमानजनक मृत्यु" और "रुद्रप्रयाग का आदमखोर" किसी पुस्तक के आधार पर नहीं हैं। शेष लेख चैडविक की Hunters and the Hunted, मेजर फ़ोरन की Kill or be Killed, लैफ़्टिनेंट कैसरले की Dwellers in the Jungle, नोलैज़ की The Terrors of the Jungle and In the Grip of the Jungle पुस्तकों में वर्णित लेखों, और 'वाइड वर्ल्ड' अंग्रेज़ी पत्रिका में छपे दो लेखों के

State Museum LUCKNOW

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आधार पर हैं। लेखक पुस्तकों और पत्रिका के लेखकों तथा प्रकाशकों का बड़ा ही कृतज्ञ है।

पुस्तक में चौदह चित्र हैं। 'यमदूत से साक्षात्' सम्बन्धी तीन चित्र, 'वाइड वर्ल्ड मैगज़ीन' से लिये गये हैं, और शेष ग्यारह चित्र, जीवजन्तु सम्बन्धी चित्र बनानेवाले प्रसिद्ध गुजराती कलाकार श्री० आर० एस्० पंडित ने बनाये हैं। लेखक, भावपूर्ण चित्र बनाने के लिए श्री पंडित का कृतज्ञ है। और वह गुजराती 'कुमार' के सम्पादक मित्रवर श्री रावलजी का भी ऋणी है, जिन्होंने पंडित महाशय का परिचय लेखक से कराया।

बन्धुवर पं० हरिशंकर शर्मा ने पुस्तक की छपाई के लिए जो प्रयत्न किया है, वह तो अकथनीय है। लेखों के चयन, प्रूफ़-संशोधन और छपाई सम्बन्धी सब प्रकार के आयोजन उन्होंने ही किये हैं। पं० हरिशंकर शर्मा को धन्यवाद देना उनका अपमान-सा करना होगा।

परिचय लिखते समय मुझे स्व० व्रजमोहन वर्मा की याद आ रही है। अब से सात वर्ष पूर्व, 'शिकार' की भूमिका लिखने के बाद पं० बनारसी दास चतुर्वेदी और स्व० वर्मा जी के साथ मैं चाय पी रहा था। अपने शिकार सम्बन्धी संस्मरणों को छपाने के लिए नाम की आवश्यकता थी। स्व० पं० पद्मसिंह शर्मा जी से मैंने पूछा कि कोई उपयुक्त नाम बताइये। पर कोई आकर्षक नाम न सूझा। अन्त में सबको मेरे प्रस्तावित नाम 'शिकार' को मानना पड़ा—यद्यपि मैं स्वयम् उस नाम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से न तब संतुष्ट था और न अब। अस्तु, 'शिकार' नामकरण हो जाने के बाद और मशीन पर फ़र्मा चढ़ जाने के बाद अन्य पुस्तकों का ज़िक्र हुआ और स्व० वर्माजी ने एक नाम पेश किया, शिकार सम्बन्धी मेरी दूसरी किताब के लिए, और वह नाम था 'प्राणों का सौदा'। अफ़सोस है, 'प्राणों का सौदा' का नामकरण करनेवाले व्यक्ति अपने बीच में नहीं हैं। अगर साहित्य-शिखर पर वेग से बढ़ने वाला वह व्यक्ति—वर्माजी—आज होता तो यह पुस्तक उसी की देख-रेख में छपती। पर विधि की गति वक्र है! उपर्युक्त शब्द लिखने से, आशा है, वर्माजी की आत्मा, उनके छोटे भाई राजन बाबू, उनके मित्रों और 'विशाल भारत' परिवार को लेखक की भाँति कुछ सान्त्वना मिलेगी।

'इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस' वालों की तत्परता के लिए भी लेखक कृतज्ञ है।

शिकार संबंधी लेख लिखने में मुझे 'विशाल भारत', के पाठक, और अन्य हिन्दी-साहित्य-सेवियों से जो प्रोत्साहन मिला, वह शब्दों में अंकित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक के लिखने का श्रेय पाठकों की अभिरुचि, मित्रों के प्रोत्साहन और हिन्दी-साहित्य के गौरव को मिलना चाहिए। यों लेखक की भी प्रशंसा हुई है, उसी तरह जिस प्रकार गेहूँ के साथ बथुआ को भी पानी लग जाता है।

श्रीराम शर्मा

State Museum LUCKNOW

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

किसी भी साहित्य-सेवी को—विशेषकर वर्त्तमान परि-स्थिति में, हिन्दी-साहित्य-सेवी को—इस से अधिक और क्या आत्मतोष होगा कि उसे साहित्य के किसी अंग विशेष का जन्मदाता माना जाय। हिन्दी में शिकार—मेरे विचार से प्रकृति सम्बन्धी-साहित्य के पितृत्व के गौरव का ख़याल कर के लेखक कभी-कभी यह सोचने लगता है कि यह सब उसके पूर्वजन्म के किसी पुण्य का फल है, वर्ना हिन्दी के विशाल क्षेत्र में किसी अन्य योग्यतम लेखक के माथे यह सेहरा बँधता। पर इस प्रशंसा-प्राप्ति से, पाठक विश्वास करें, लेखक का माथा नहीं फिरा, वरन् उस से तो उसमें नम्रता और संकोच-शीलता की मात्रा बढ़ गई है। हाँ, एक बात का दुःख उसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ज़रूर है, और वह यह कि गत पन्द्रह वर्षों में उसका कोई साथी—शिष्य नहीं—हिन्दी-साहित्य में इस विषय पर नहीं दिखाई दिया। कई मित्रों ने प्रयास किया पर उनके लेखों में लेखन-कला की मौलिकता न आ पाई। और शायद वे थक कर अथवा हतोत्साह हो कर बैठ गये। मुख्य कारण यह था कि वे स्वयम् प्रकृति के सम्पर्क में न आये थे। उन्हों ने प्रकृति-देवी को—आप चाहें तो उसे प्रकृति-परी कहें—उन आँखों से न देखा, जिनसे उन्हें देखना चाहिए था। प्राकृतिक दृश्यों के चित्रण के लिए रायफ़ल और बन्दूक़ की ज़रूरत नहीं, ज़रूरत है सूक्ष्म कल्पनाशक्ति, कोमल भावना, निरीक्षण बुद्धि और अनुभूति की।

*** *** ***

लेखक के शिकार अथवा प्रकृति-चित्रण सम्बन्धी लेखों का इतना मान शायद इसलिए हुआ है कि उनका साहित्यिक महत्त्व है, यद्यपि संकोचवश उसे यह लिखना पड़ता है कि उसके गत २०–२१ वर्ष के साहित्यिक जीवन में शिकार-साहित्य का बहुत कम भाग है। पर किसी चीज़ के अभाव में जब कोई चीज़ आती है तब उस पर सबकी आँखें लग ही जाती हैं। हाँ, लेखक ने शिकार को साहित्यिक और दार्शनिक जामा पहना दिया है। कोई भी चीज़ जबतक कलापूर्ण नहीं होती, तबतक उसका विशेष महत्त्व नहीं होता। बढ़िया से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बढ़िया सागौन की लकड़ी पड़ी हो, पर जबतक कुशल बढ़ई उससे कोई बढ़िया कुर्सी या मेज़ या क़लमदान नहीं बनाता, तबतक उसका कोई विशेष महत्त्व नहीं होता—आकर्षण का तो कोई सवाल ही नहीं उठता। बस लेखक ने शिकार-जीवन की घटनाओं को साहित्यिक समाज की चीज़ बनाने की कोशिश की है।

पाठक पूछ सकते हैं कि 'शिकार' और 'प्राणों का सौदा' में क्या अन्तर है? क्या 'प्राणों का सौदा' मौलिक रचना है? क्या उसका कोई साहित्यिक महत्त्व है? 'शिकार' आप-बीती घटनाओं का चित्रण है, और 'प्राणों का सौदा' कला-विद और मशहूर शिकारियों पर बीती घटनाओं अथवा दुर्घटनाओं का चित्रण है। अँग्रेजी में छपे उन लेखों को आप पढ़ें तो आपको मालूम होगा कि मूल घटनाओं में तनक भी अन्तर—घटाव-बढ़ाव नहीं है। ढाँचा वही है, रत्ती-भर का फ़र्क़ नहीं; पर लेखन-शैली और दार्शनिक तथा साहित्यिक विश्लेषण ने संग्रह को एक नवीनतर चीज़ बना दिया है। चिन्ता, भय, सुख और दुःख सम्बन्धी मनोविकारों को अंकित करने से कथा में जान पड़ जाती है। यदि ऐसा न हो, यदि मनोविकार-चित्रण की आवश्यकता न हो, तो विश्व के लिए साहित्य भी फ़ज़ूल है। रामायण की घटना ही कितनी है; पर काव्य का रूप देने से उसका जो महत्त्व हुआ है, उसे हम ख़ूब समझते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'प्राणों का सौदा' का साहित्यिक महत्त्व क्या है-- इसका उत्तर साहित्य-सेवी ही दें। मैं इस विषय में कुछ न लिखूँगा।

* * *

हिन्दी-साहित्य के नाते, लगे हाथ एक बात और लिख दूँ। हिन्दी में शिकार-साहित्य अभी सागर की एक बूँद के बराबर भी नहीं और शिकार-साहित्य जीव-जन्तुओं के रहन-सहन सम्बन्धी ज्ञान के बिना अधूरा ही समझना चाहिए। अँग्रेज़ी में तो हाथी, शेर और अन्य जानवरों पर बढ़िया पुस्तकें हैं; पर हिन्दी वालों में धनी-मानी हैं और वे शेर मारने के रैकर्ड तोड़ने पर तुले हुए हैं, पर उनसे यह न होगा कि अपने अनुभवों को लिखकर या लिखाकर उन्हें पुस्तक का रूप दे दें। शेर, चीतल, बघेरा, सूअर और हाथी पर इतनी सुन्दर पुस्तकें लिखी जा सकती हैं कि लेखक हिन्दी-साहित्य में अमरता प्राप्त कर सकता है। जंगली जानवरों को मारकर रैकर्ड—कोरे रैकर्ड—तोड़ने की बात में तो बधिकता की बू है।

अनेक हिन्दी-साहित्य-सेवी इंगलैण्ड गये हैं; पर इन पंक्तियों के लेखक ने हिन्दी में 'झील प्रदेशों' (Lake district) का वर्णन नहीं पढ़ा। तात्पर्य यह कि हम में अभी प्रकृति-दर्शन और प्रकृति का मूल्य आँकने की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहुत कमी है, और इसी कमी के कारण, किन्हीं अंशों में, ऐसे साहित्य का निर्माण नहीं हो रहा। परन्तु आशा है, हमारे नवयुवक लेखक और कवि इस ओर ध्यान देंगे और साहित्य की त्रुटि-पूर्ति और अपनी ख्याति की वृद्धि करेंगे।

आगरा,
फाल्गुन, सुदि १५
संवत्, १९९५
५-३-३९

श्रीराम शर्मा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कथा-सूची

संख्या	कथा	पृष्ठ
१	रुद्रप्रयाग का आदमखोर	३
२	प्रेमोपहार	१६
३	बदला	३६
४	अटल नियम	५३
५	अपमानजनक मृत्यु	६७
६	शैतानी समूह	७६
७	यमदूत से साक्षात्	१०१
८	जंगल की दुलहिन	११६
९	जंगल का डाकू	१४५
१०	काले कारनामे	१६१
११	रोमांचकारी कुश्ती	१७७
१२	दुर्घटना	१६१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चित्र-सूची

संख्या	चित्र	पृष्ठ
१	"प्रतिमा को देख कर समझा कि कोई आदमी पेशाब के लिए निकला है।"	१५
२	"नीचे सिंह उचक और कूद कर उसे पकड़ने की वृथा कोशिश कर रहा था।"	३१
३	"मुताशिवी मगर को मारने के लिए कूद पड़ा।"	४६
४	"सिंह भैंसे के विशाल कंधों पर दृढ़ता से चिपटा हुआ, अपने पैने नखों से उसे फाड़ रहा था, दाँतों से काट रहा था और विकराल रूप से बुरी तरह गुर्रा रहा था।"	५७
५	"घोष बाबू ने देखा उनके पलँग और अलमारी के बीच एक भीमकाय शेर बैठा है।"	१०७
६	"घोष बाबू ने शेर की भयंकर साँस महसूस की।"	११०
७	"शेर कम्पोत्पादक ग़ुर्राहट के साथ पलँग पर कूद पड़ा।"	११०
८	"दोनों हाथों से चाक़ू की मूँठ थाम कर वार करने की कोशिश की।"	११४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संख्या	चित्र	पृष्ठ
९	"दैत्य बघेरा पिछले पैरों पर पीछे को हुआ, और उसकी गर्दन में एक तीर बिंध गया।"	१३७
१०	"ज़मींदार पहले तो अवाक् रह गया; पर जब उसने लूती को बुलाया, तब वह उस ओर आई, और ज़मींदार के उसने पैर छुये।"	१३८
११	"रायफ़ल-ध्वनि के उपरान्त गुर्राहट हुई और फिर पीड़ा-जनक भयानक गर्जना।"	१५७
१२	"उसने एफ़० की बाँह फिर पकड़ ली और उनको जंगल की ओर ले चला।"	१७२
१३	"जंगल को दहलाने वाली गर्जन के साथ शक्ति का वह पुंज विद्युत गति से सूअर पर टूट पड़ा।"	१८३
१४	"जैसे ही भैंसे ने ग्रेट्ज़ को उछाल कर फेंका, वैसे ही फ़ायरे ने दन्न से रायफ़ल दाग़ दी।"	२०६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुद्रप्रयाग का आदमख़ोर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुद्रप्रयाग का आदमख़ोर

हृषीकेश-बदरीनाथ-रोड पर, हृषीकेश से लगभग नव्वे मील ऊपर को, पहाड़ के अंचलों में, अलकनन्दा और मन्दाकिनी—काली गङ्गा—के सङ्गम पर, रुद्रप्रयाग एक गाँव है। बदरी और केदार के यात्रियों के लिए वह एक चट्टी—ठहरने का स्थान—है। किसी वृक्ष के तने से, जैसे दो मुख्य शाखाएँ फूटती हैं, उसी भाँति, रुद्रप्रयाग से दो मार्ग फटते हैं—एक तो मन्दाकिनी की ओर से केदार को; और दूसरा अलकनन्दा के किनारे-किनारे बदरीनाथ को। रुद्रप्रयाग में आधुनिक सभ्यता का चिह्न—डाकघर भी है। पर वहाँ ऐसा कोई आकर्षण नहीं है, जिससे प्रकृति-प्रेमी को कोई विशेष आह्लाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हो। रुद्रप्रयाग, है तो हिमालय में; पर ग्रीष्मकाल में, वहाँ हिमालय का कुछ भी आनन्द नहीं आता। पहाड़ की गंजी चोटियाँ, संकीर्ण घाटी और फलस्वरूप असह्य गर्मी—भट्टी की-सी—अच्छे वन का अभाव, इन सब बातों के संयोग से यह प्रतीत होता है, मानो प्रकृति ने रुद्रप्रयाग के समीप एक भयङ्कर षड्यंत्र रच रखा है। वहाँ खड़ा होकर, कोई आँख भर के देखे, तो यह भान होता है कि अलकनन्दा के किनारे वाली पर्वत-मालाएँ मिली आती हैं। न-जाने विधाता ने वहाँ की पर्वत-श्रेणियों और पहाड़ियों को फूहड़पन से बनाया है, या जान-बूझ कर किसी षड्यन्त्र की रचना की है। वहाँ की छोटी-छोटी झाड़ियाँ, टूटी-फूटी और भीमकाय चट्टानें हृदय में गुदगुदी नहीं पैदा करतीं। उनको देखकर दो भाव उठते हैं, एक तो भय-जन्य प्रतिष्ठा और दूसरा आश्चर्य-मिश्रित आतंक। यही नहीं, गर्मी के दिनों में यदि कोई अपने सूखे कण्ठ को सींचने के लिए अलकनन्दा की सलिल-धारा के समीप जाता है, तो उसके हृदय में यह ख़याल आता है कि अलकनन्दा तप्त पहाड़ों के आधार को ठण्डा कर रही है; और ये ऐसे हृदयहीन हैं कि इनपर कुछ प्रभाव ही नहीं पड़ता। यह विचार आते ही, मानो चट्टानों की ओर से कोई मूक हँसी में कहता है—'सहवासी विजानीयात् चरित्रं सहवासिनाम्'—सहवासी के चरित्र को सहवासी—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साथ रहने वाला--ही जानता है। अलकनन्दा हमारी आधार-शिला को सींच नहीं रही; वरन् वह हमारी जड़ काट रही है। उसने हमारी छाती पर आरा चलाया है। काट कर हमें दो भागों में कर दिया है। स्वयम् तो वह अपने जन्म-स्थान से भागी जा रही है; और हमें—अचल प्राणियों को भी—काटकाट कर अपने साथ लिये जा रही है।

***

एक दिन इसी रुद्रप्रयाग के पास, किसी गाँव का एक घसियारा लापता हो गया। लोगों ने ढूंढा और बड़ी खोज के उपरान्त एक झाड़ी में उसका विकृत कपाल, पैर, हाथ और हड्डी के कुछ टुकड़े मिले। स्पष्ट ही यह बाघ की करतूत थी! मनुष्य-भक्षी बाघ का समाचार आस-पास अगले ही दिन फैल गया। घसियारे और चरवाहे जंगल में जाने से सहमे। लोगों ने चारों ओर से एक-एक झाड़ी और नाले को मथ डाला। दो बन्दूक़ वाले भी साथ थे; पर बाघ का कुछ पता न चला। पुलिस में रिपोर्ट कर दी गई। एक आदमी और एक साधारण किसान की मौत का मूल्य ही क्या था! उसके घर वालों के लिए चाहे हो! था भी वह घर का अकेला; पर एक बँदरिया के कम होने से वृन्दावन तो सूना नहीं हो जाता। उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौत से लोग दुखी न थे। वह तो साधारण-सी बात थी; पर लोगों को भय था कि कहीं उसकी छूत न फैले, बाघ और लोगों पर भी हाथ साफ़ न करे। अपने-अपने कुटुम्ब का व्यक्तिगत विचार था। यह बात न थी कि वे औरों की बुराई चाहते थे; किन्तु अपनी बेबसी और असहाय स्थिति के कारण लोग अपना ही ख़याल करते थे। पशुओं के लिए घास और रसोई के लिए लकड़ी तो जंगल से ही आती थीं। वही लोगों का भण्डार था। लोग घास और लकड़ी के लिए गये, पर चार-चार और पाँच-पाँच की टोली में सतर्क होकर। दो-तीन दिन बाद उनका भय कम होने लगा। नदी की बाढ़ के समान, समय पाकर, दो-चार दिन में ही वह सतर्कता की बाढ़ भी उतर गई। लोगों ने समझा कि कोई चलता-फिरता बाघ उधर आ निकला होगा। एक बलि चढ़ गई, चलो अब आफ़त टली।

***

उस घटना के ठीक दस दिन पीछे, रुद्रप्रयाग से १५-१६ मील की दूरी पर, केदार के मार्ग की ओर, चन्द्रापुरी के निकट, एक और आदमी बाघ-द्वारा मारा गया। रुद्रप्रयाग में उसका धीमा-सा कम्प महसूस हुआ। बहुतेरों ने समवेदना प्रकट करते हुए कहा, चलो, खूब बला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

टली; पर वह बला टलनेवाली न थी। बेसुध चुगते हुए पक्षियों के झुण्ड पर, जैसे बाज़ टूट पड़ता है, उसी भाँति, पहली घटना के ठीक एक मास बाद, रुद्रप्रयाग के निकट एक घसियारे को बाघ ने फिर दबोच लिया। अस्थि-पिंजर समेट कर उसकी दाह-क्रिया की गई और अलकनन्दा में चिता की राख को बहा दिया गया। पति-वियोग से दुखी स्त्री सिर धुन रही थी। अलकनन्दा अपने अनित्य कलरव से अलख जगा रही थी। ऊपर झुरमुटों में वायु के झकोरे पहाड़ों से रंगरलियाँ कर रहे थे। आकाश में घोर गर्जन हो रहा था। बादल फिर रहे थे। शोक मनाने के लिए नहीं; किन्तु लोगों की फ़सल को सींचने और दैवी नियम के पालन के लिए। वह घटना—वह तो एक साधारण-सी बात थी। बस, एक किसान मारा गया था!

रुद्रप्रयाग के आस-पास के गाँव हिरनों के समान चौंके हुए थे। पुलिस में रिपोर्ट कराई गई, तो ख़ानापुरी करके ज़ाब्ते की रस्म अदा कर दी गई। कुछ दिन पीछे, रुद्रप्रयाग से ८-१० मील नीचे, श्रीनगर की ओर एक आदमी फिर मारा गया। होते-होते ५०-६० मील के घेरे में दसवें या बारहवें दिन और कभी-कभी सातवें दिन कोई-न-कोई व्यक्ति बाघ-द्वारा उठाया जाने लगा। जैसे गाँव का डाकिया अपने गश्त पर चिट्ठी लेकर आता है, उसी भाँति बाघ का गश्त ठीक समय पर होता था। पहले तो लोगों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का ख़याल था, कि कई बाघ हैं; पर वर्षों के अनुभव से उन्हें पता चला, कि एक ही राक्षस बाघ के रूप में उत्पात मचा रहा है।

प्लेग और हैज़े के प्रकोप से, जैसे लोग चिन्तित हो जाते हैं, पता नहीं कौन कब चल बसे, वैसेही रुद्रप्रयाग के समीपवर्ती लोग घबराये हुए थे। शिकार कर के बाघ न जाने कहाँ चला जाता था। बहुत-से तो उसे भूत-प्रेत समझते थे; पर यह बात स्पष्ट थी कि वह एक स्थान पर न रहता था। आज किसी आदमी को मारा, तो उसे खाकर वह मीलों दूर चला जाता था। लाश पर दुबारा न आता था। जो आदमखोर बाघ दुबारा लाश पर आवे, तो उसे अपवाद ही समझना चाहिए। शेर या बाघ अधिकतर अपने शिकार पर दुबारा लौटने पर ही मारे जाते हैं। बाघ ने कोई गाय मारी, तो वह उसका ख़ून पी जायगा और थोड़ा-बहुत मांस भी खा जायगा और फिर प्रातःकाल ही दुबारा उसी शिकार पर आयगा। शिकारी उस लाश के पास अपने बैठने का स्थान बना लेते हैं, और बाघ के दुबारा आने पर उसे मार देते हैं। आदमख़ोर बाघ से जितना एक बार में खाया जायगा, खा लेगा, फिर दुबारा लाश पर आने का नाम भी नहीं लेगा। दुबारा न आने की तो वह शपथ-सी खा लेता है। कदाचित् मनुष्य का मीठा मांस खाने से उसकी पशुबुद्धि (Instinct) कुछ तीव्र हो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जाती है। अथवा किसी रहस्यमयी शक्ति से उसे यह प्रेरणा मिलती है कि दुबारा आना जोखिम का काम है। वह जोखिम (Risk) का काम नहीं करता। फिर पहाड़ पर रेल और मोटर तो है नहीं; और न वहाँ हथेली-जैसी समतल भूमि है। पैदल चल कर ही कहीं आना-जाना हो सकता है, और ऊबड़-खाबड़ अगम्य स्थानों में आदमी की पहुँच कहाँ? बाघ के लिए ऐसे स्थानों में आना-जाना कुछ भी कठिन नहीं; और सामूहिक शक्ति भी उन पहाड़ों में क्या करे और कहाँ तक करे। गाँव-गाँव बन्दूक़ें भी नहीं हैं। यदि गाँव-गाँव बन्दूक़ें, ठस्सा टोपीदार ही सही, होतीं तो भी बाघ मारने की अधिक संभावना हो जाती। फिर शिकारी भी आदमी हैं। उनके भी बाल-बच्चे हैं। नोन-तेल की चिन्ता उन्हें भी रहती है। किसी को खबर लगी कि बाघ ने पन्द्रह मील पर मार की है, तो पहले तो खबर ही देर से आती है। तार या टेलीफ़ोन तो वहाँ है नहीं और जब तक वहाँ कोई पहुँचे, तबतक तो वह पिशाच अपने गश्त में किसी और जगह चला जाता है। ऐसी ही कुछ कठिनाइयाँ थीं, जिनसे उस बाघ का ऊधम बढ़ता ही गया।

बाघ के उत्पात से हाहाकार मच गया! अबोध बालकों का बिलखना, विधवाओं का चीत्कार और बंधु-विछोह-जन्य क्रन्दन हिमालय की ऊँची चोटियों और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संकीर्ण घाटियों को पार करके देश-भर में फैल गया। बम्बई और कलकत्ता के समाचार-पत्रों में भी दुखियों की आवाज़ पहुँची। निकटवर्ती लोग कहते थे, अब पापों का प्राय-श्चित्त हो गया। क्या अब भी बाघ का अन्त न होगा। दो-चार शिकारी आये; पर बाघ का कुछ पता न चला। शिकारी बैठे हैं किसी गाँव में, बाघ ने मार की किसी दूसरे गाँव में। क्या यह भी प्रकृति का षड्यंत्र था?—शायद।

इसी प्रकार कई वर्ष बीत गये। लोगों की कष्ट-कथा का कुछ ठिकाना न था। ग्रीष्मकाल में तो लोगों का मरण ही था। पहाड़ के छोटे और तंग मकान! रात को इन्हीं में सब सोते थे। बाहर पेशाब और पाख़ाने को निकलना कठिन था। उन तंग घाटियों में, गर्मी के दिनों में, भट्टी की-सी रँधन हो जाती थी। बाघ के आतंक से लोग शौच तक के लिए, रात में बाहर न निकलते थे। बीसियों ही आदमी इसी प्रकार उसके शिकार हुए थे। रात को माता बालक को पेशाब कराने निकली कि वह बाघ का शिकार हुई! बालक के रोने से लोगों को पता चलता कि उसकी माँ बाघ ने मार डाली!

भारतवर्ष के किसी अन्य स्थान में कदाचित् ही एक बाघ का उत्पात इतने दिनों रहा हो; पर अलबेले हिमालय की प्रत्येक बात अद्वितीय है। वहाँ का, और विशेषकर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुद्रप्रयाग का—जहाँ पर प्रकृति ने अपने निर्माण में कुछ षड्यंत्र फैलाया है—तमाशा ही दूसरा था।

इतने दिनों तक संसार के काम तो नहीं रुकते। युद्ध-काल में भी प्रणय होता है। विवाह, मौत और अन्य रीति-रिवाज होते रहते हैं। संसार की कोई बात रुकती नहीं। बड़े-बड़े महात्मा हुए, उनकी अमृतवाणी से संसार तृप्त हो गया। भगवान् बुद्ध, शङ्कराचार्य और अन्य आचार्य आये; पर संसार से पापों का मूलोच्छेदन न हुआ। हाँ, भलाई और बुराई के अनुपात में भले ही अन्तर हो; पर अनुपात कैसे लगाया जा सकता है? रुद्रप्रयाग के बाघ का आतंक होने पर भी विवाह-शादी और आना-जाना तो होता ही था; पर बाघ के शिकार से इलाक़े में लोग सतर्क रहते थे। एक बार एक विवाह था। बरात लौटकर एक स्थान पर ठहरी। अगले दिन प्रातःकाल वधू ग़ायब! घिसटन और ख़ून की धारा और कंगन-युत हाथ ही वहाँ मिला! यह था, उस विवाह—उस पाणि-ग्रहण-संस्कार का अन्त! अनुकूल परिस्थिति में, जैसे बरगद का वृक्ष धीरे-धीरे बढ़ता जाता है, वैसे ही बाघ की निर्द्वन्द्वता और क्रूरता भी धीरे-धीरे बढ़ती गयी। मकानों में घुस-घुसकर, बीस-बीस और चालीस-चालीस की भीड़ में-से वह आदमियों को उठाने लगा।

***

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऐसे उत्पाती बाघ का दुर्गम स्थान में मारना बड़ा कठिन काम था। महीने-दो-महीने का प्रोग्राम बना कर यदि कोई वहाँ बैठता और सैकड़ों रुपये खर्च करने की शक्ति रखता, तो वही कुछ कर सकता था। कई शिकारी बैठे; पर बाघ ने सब को छकाया। एक बार एक साहसी शिकारी पेड़ पर बैठने का स्थान बनाकर रुद्रप्रयाग के पुल के पास बैठा। चाँदनी रात थी, कदाचित् फागुन का महीना था। गुलाबी जाड़े पड़ रहे थे। बाघ पानी में घुसना पसन्द नहीं करता; इसलिए उस शिकारी का यह अनुमान था जो सर्वथा ठीक था कि बाघ अपने गश्त में चन्द्रापुरी से रुद्रप्रयाग की ओर आने में अलकनन्दा का पुल अवश्य पार करता होगा। बिना ऐसा किये वह इधर आही नहीं सकता। शिकारी ने अपने बैठने का स्थान बनाया और सावधानी से, चौकन्ना हो कर, वह मार्ग की ओर देखता रहा।

प्रातःकाल लोगों ने वहाँ जाकर देखा, तो बन्दूक़ पड़ी हुई थी और पास ही पेड़ के नीचे शिकारी की अधखायी लाश थी। उसके होट भी नदारद थे और दाँत बाहर दिखाई पड़ते थे, क्या वे इस बात के प्रमाण थे कि उस साहसी शिकारी ने दख़लदर-माक़ूलात की। या यह भी कोई षड्यन्त्र था? हाँ, कदाचित् ऐसा हुआ होगा कि बाघ को शिकारी का कुछ पता चल गया होगा और उसने मख़मली पंजों से ऊपर चढ़-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर अपना घातक वार किया होगा।

***

राज-शासन-रूपी अजगर आसानी से नहीं हिलता-डुलता। उसे तो भोजन चाहिए, भोजन करके वह सुषुप्तावस्था में पड़ा रहता है; पर यदि उसको हिलाया-डुलाया जाय और लकड़ी की मार दी जाय, या कुछ और हरकत की जाय, भला-बुरा कहा जाय, तो वह हिलता है। बाघ के उत्पात के कारण चारों ओर आन्दोलन-सा उठ खड़ा हुआ। कौंसिल में प्रश्न पूछे गये। सरकार को दोषी ठहराया गया। इस आन्दोलन से एक लाभ और हुआ और वह यह कि कुछ मनचले शिकारी अपना भाग्य आज़माने आये। एक बार दो अंग्रेज़ शिकारी आये। बाघ ने बहुत दिनों से मार न की थी। साहब लोगों ने यह निश्चय किया, कि रुद्रप्रयागवाले अलकनन्दा के पुल के दोनों थूमों पर, उनमें-से एक-एक बैठे, और यदि दोनों में-से किसी को पहले बाघ दिखाई दे, तो रस्सी खींच दे; ताकि वे दोनों सतर्क हो जायँ। उन्होंने एक थूमे से दूसरे थूमे तक, अपने शरीर से लगाकर रस्सी बाँध रखी थी, और दोनों थूमों के पास सूखी नरई और पुआल डाल दिया था, जिससे बाघ के उसपर पैर रखते ही शब्द हो। रायफ़ल भरी रक्खी थी। दोनों अंग्रेज़ों में-से किसी को यह पता न था, कि बाघ केदार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की घाटी से रुद्रप्रयाग की ओर आवेगा या रुद्रप्रयाग की ओर से केदार की ओर जायगा। रुद्रप्रयाग की ओर कुछ दिनों से कोई मारा न गया था; इसलिए वे अंग्रेज़ अपने भाग्य की परीक्षा के लिए वहाँ आये थे। नामी शिकारी थे। बहुत शिकार खेल चुके थे। अनाड़ी न थे; पर रुद्रप्रयाग के आदमख़ोर ने उन्हें भी छकाया। बाघ आया। एक अंग्रेज़ ने उसको देखा। रस्सी खींची और फ़ायर हुआ; पर कदाचित् ठीक समय पर नहीं। प्रातःकाल शोर हुआ, कि पुल के पास ही बाघ ने एक किसान को धर दबोचा और वह उसे चट कर गया! लोगों का कहना है, कि पुल पर शिकारियों को छकाने के उपरान्त उसने उस किसान को मारा था। उन शिकारियों के लिए यह एक अपमान की बात थी; पर क्या करते। ऐसा बाघ उन्होंने न कभी सुना था और न देखा था।

बकरे मारकर उनमें ज़हर डाला गया। जो कुछ किया जा सकता था, लोगों ने किया; पर बाघ का बाल भी बाँका न हुआ। क्या उसको कोई वरदान था? हाँ, अब तक तो था ही।

***

शासन-रूपी अजगर चेता और तहसीलदार, पटवारी तथा अन्य लोगों की देख-भाल में, कैप्टिन कौरबैट रुद्रप्रयाग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

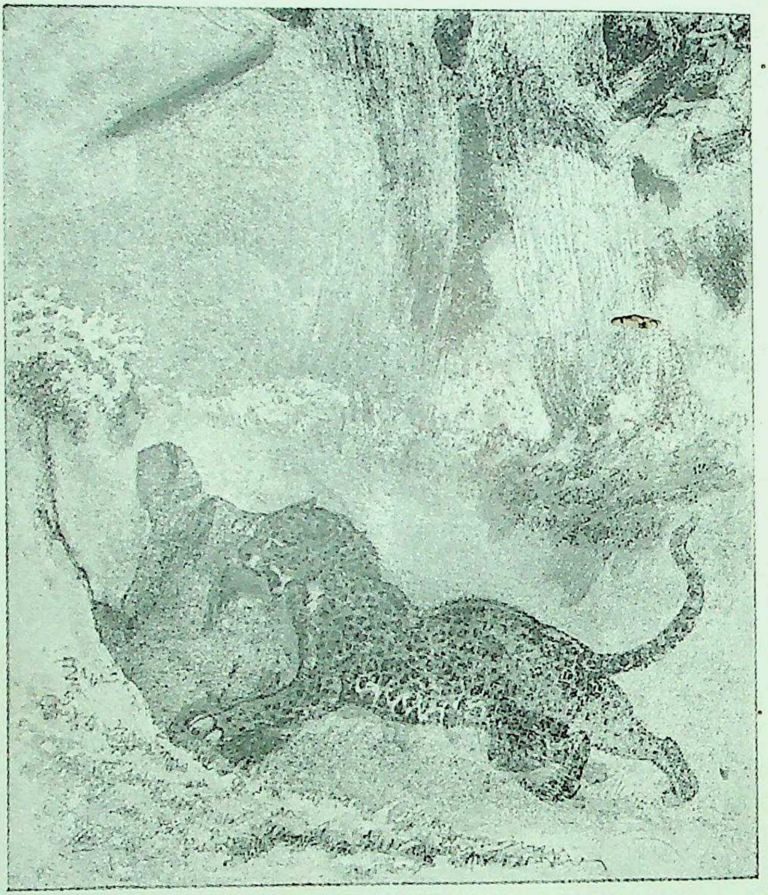

"प्रतिमा को देखकर समझा कि कोई आदमी पेशाब के लिए निकला है।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की ओर आये। कैप्टिन कौरबैट ख्यातनामा शिकारी हैं। शिकार के दाँव-पेंच के जानकार हैं, और सब से बड़ी भारी बात यह है कि उन्हें साधन प्राप्त हैं। सीढ़ी के साधन से पंगु भी छत पर चढ़ जाते हैं, और बिना साधन के हृष्ट-पुष्ट लोग ताकते रह जाते हैं। साधनरूपी सीढ़ी संसार में एक बड़ी चीज़ है। सम्पूर्ण साधन उन्हें प्राप्त थे। कैप्टिन कौरबैट ने एक योग्य जेनरल की भाँति स्थिति का अध्ययन किया। दो-एक बार बाघ ने उन्हें भी छकाया; पर बुद्धि के पुतले मनुष्य के सामने मनुष्य-भक्षक की कब तक चलती? कैप्टिन कौरबैट ने एक मानवी प्रतिमा बनवाकर एक जगह स्थित कर दी और रुद्रप्रयाग से थोड़ी दूर श्रीनगर की ओर एक आम के वृक्ष के पास वे डटकर बैठ गये। पास ही एक कमरे में लोगों को बैठा दिया। कमरा बन्द था। लोग बातें भी कर रहे थे। निर्द्वन्द्व बाघ आया। प्रतिमा को देख कर समझा कि कोई आदमी पेशाब के लिए निकला है। झपट्टा मारा।

धायँ! फ़ायर हुआ और आदमख़ोर मरा पड़ा था! रुद्रप्रयाग की साढ़साती उतर गई! बरसों का तिलस्म टूट गया!!

***

उस दिन के बाद रुद्रप्रयाग के समीपवर्ती लोग सुख से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोये। कौरबैट साहब का यश चारों ओर छा गया। कौरबैट के भाग्य से तो हमें ईर्ष्या है परन्तु उनकी सफलता पर बधाई दिये बिना नहीं रह सकते।

सरकारी रिपोर्ट है कि रुद्रप्रयाग के इस आदमखोर बाघ ने लगभग १२५ आदमियों को खाया था; पर जो गढ़वाल से परिचित हैं, और वहाँ के आदमियों से जिनका सम्बन्ध है, उनका कहना है कि रुद्रप्रयाग के आदमखोर बाघ ने छह-सात सौ आदमियों का सफ़ाया किया!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रेमोपहार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रेमोपहार

अफ़्रीका की क्वैंडो और ओकवैंगो नदियों के बीचवाला प्रदेश बड़ा ही सूखा है। ग्रीष्मकाल में तो वहाँ असह्य जलकष्ट हो जाता है। धूप की तेज़ी से घास और छोटे पेड़ों में-से जान-सी निकल जाती है, और सोतों का पानी भी सूखने लगता है। इस इलाक़े में कुछ बुशमैन रहते हैं, जो 'भूरे (Brown) बुशमैन' कहलाते हैं। वे क़द के नाटे होते हैं, अर्थात् उनकी ऊँचाई चार फ़ुट से कुछ ही अधिक होती है, पर शरीर उनका सुडौल होता है। तीर चलाने में वे बड़े दक्ष होते हैं। पैदल चलने और दौड़ने में उनका मुक़ाबला अफ़्रीकावासी मसाई या ज़ूलू लोग भले ही कर सकें। गर्मी के दिनों में पानी की कमी के कारण शिकार खोजने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में उन्हें, आवश्यकता से अधिक परिश्रम करना पड़ता है, क्योंकि जंगली जानवर पानी के सहारे ही मिलते हैं।

ग्रीष्मकाल में, एक बार इसी इलाक़े में दो अंग्रेज़ शिकारी—फ़्रेड जैक्सन और चैडविक—आए। पानी के निकट एक स्थान पर, पड़ाव डालकर वे शिकार खेलने लगे। पर उनके आने के एक सप्ताह बाद पानी का स्रोत सूख गया। शिकार छोड़, उन्हें पानी की खोज करनी पड़ी, क्योंकि बिना पानी के वे लोग वहाँ रह ही नहीं सकते थे। वे दिन-भर घूमते रहे, पर पानी कहीं न मिला। थके-माँदे और प्यास से व्याकुल वे लौट रहे थे कि सूर्यास्त के समय उन्हें थोड़ी दूरपर धीरे-धीरे चक्कर खाता हुआ, तथा ऊपर को उठता हुआ धुआँ दिखाई पड़ा। 'जहाँ धुआँ है, वहाँ आग है', और उस स्थान में आग के मानी थे मनुष्यों का होना, क्योंकि वहाँ दावानल की कोई आशंका न थी। मनुष्यों के पास पानी ज़रूर होगा, अथवा उनके समीप कोई स्रोत होगा। इसी विचार से पानी पाने की उत्सुकता में दोनों आदमी धुएँ की ओर चले।

बुशमैन पानी का पता प्रायः किसी को देते नहीं, क्योंकि पानी पर उनका और उनके शिकार का जीवन अवलम्बित है; पर फ़्रेड के अनेक बुशमैन मित्र थे, और उससे उनकी बोली भी आती थी।

बीस मिनट चलकर फ़्रेड और चैडविक उस स्थान पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पहुँचे, जहाँ धुआँ निकल रहा था। लगभग आधी दर्जन झाड़ियों में एक भोंडा-सा आश्रम था। उसमें चार छोटे पुरुष (बुशमैन), छह स्त्रियाँ और कुछ बच्चे थे। दोनों को देखते ही बुशमैनों ने, पशुबुद्धि से प्रेरित हो कर, अपने भाले और धनुष संभाल लिये। मरना और मारना उनके लिए साधारण-सी बात है। तोप और मशीनगन उनके पास नहीं, और न वे स्वार्थसिद्धि के लिए वेतन देकर, दूसरों को तोपों और मशीनगनों का ग्रास बनाते हैं। वे स्वयं ही लड़ते हैं। बुशमैनों की इस तत्परता को देख कर फ़्रेड ने उन्हें प्रणाम किया। अभिवादन स्वीकार करके उन्होंने भाले और धनुष रख दिये, और उन दोनों अंगरेज़ों का स्वागत किया।

वार्त्तालाप से अंग्रेज़ शिकारियों को मालूम हुआ कि स्वयं बुशमैनों को बड़ी कठिनाई थी, क्योंकि पानी की कमी के कारण वे जमकर एक स्थान पर नहीं रह सकते थे। उस पड़ाव पर वे केवल चार दिन से थे, सो भी एक दुर्घटना के कारण। मीलों चलकर उन्हें पानी लाना पड़ता था। पानी की बड़ी कमी थी, पर उन्होंने प्रेमवश कुछ पानी—जो गदला था—फ़्रेड को दिया, और उनको क्वैंडो की ओर जाने को कहा। वे स्वयं अगले दिन अपने घायल साथी को वहाँ से ले जानेवाले थे। ये बातें हो ही रही थीं कि इतने ही में कराहने की आवाज़ आई। देखा तो एक बुशमैन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खालों से ढका पड़ा था। वही रोगी था, और उसी पर दुर्घटना घटी थी। उस घायल रोगी का नाम था काना।

काना तरुण था, उसके हृदय का विकास इतना हो गया था कि उसपर दाम्पत्य प्रेम-चिह्न अंकित हो सकते थे। उसका हृदय-मिलिन्द मधुमदवाले पुष्प की खोज कर सकता था। खोज के लिए उसे दूर नहीं जाना था। अपने मुखिया की छोटी लड़की को वह अपना हृदय दे चुका था, पर उसके हृदय देने से क्या होता था। प्रश्न तो स्वीकृति का था। काना के प्रेम-पथ में एक रोड़ा भी अटका हुआ था। एक दूसरा तरुण बुशमैन भी उस युवती का पाणि-ग्रहण करना चाहता था। इस दूसरे चाहनेवाले में एक बात और थी। वह एक दूसरे बुशमैन-दल के मुखिया का लड़का था। सिकासी—वह युवती—यह निश्चय न कर सकी कि उन दो प्रतिद्वन्द्वियों में-से किस को अपना प्राणेश्वर बनाये। उसके प्रति दोनों का ही प्रेम अगाध था। सिकासी-चकोर के लिए वे दोनों ही—एक से—चन्द्रमा थे। सहारा उसे एक का ही लेना था, इसलिए उसने चुनाव करने के लिए दोनों से कह दिया कि 'इम्पाला' हिरन की बढ़िया लाल और सफ़ेद खाल सब से पहले जो उसे उपहार में दे सकेगा, वही उसका पति बनेगा।

इम्पाला हिरन बड़ा ही सुन्दर और अत्यन्त चौकन्ना होता है। उस जलहीन प्रदेश में तो कदाचित् ही कभी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई इम्पाला नर दिखाई पड़ता हो, पर काना को मालूम था कि उसके स्थान से बीस मील दूर, एक नदी की सूखी धार के निकट, नरकलों से आच्छादित पानी के गढ़े के समीप, इम्पाला हिरनों की छोटी टोली रहती है, जिसका नायक एक बढ़िया इम्पाला नर है। काना का खयाल था कि उसके प्रतिद्वन्द्वी को इस बात का पता नहीं है, इसलिए वह उस ओर गया, और अपने साथियों से कह गया कि वे उस गढ़े के निकट शिकार को न आएँ, आये तो इम्पाला की वह टोली वहाँ से बिदककर कहीं भाग जायगी। हाँ, वे उससे कभी-कभी मिलने आ सकते थे, पर जब तक वह अपनी प्रेयसी के लिए उपहार-स्वरूप—इम्पाला नर की खाल—प्राप्त न कर ले, तव तक वे उधर शिकार न खेलें। इम्पाला के चौकन्ने पन, तीव्रगति और ऊँची कुलाचें लगाने के स्वभाव के कारण तीर-कमान से उसे मारना कठिन था। जाल में फँसाने की सूरत ज़रूर थी, पर जाल में कोई दूसरा इम्पाला भी आ सकता था। अतएव इस साधन से सफलता की पूरी आशा न थी। फिर विरह से व्याकुल प्रेमी के लिए, यह अनिश्चित साधन कैसे ग्राह्य हो सकता था। इसलिए काना ने एक पुरानी टोपीदार बन्दूक़ (Muzzle loader) किसी मित्र से उधार ली, और कुछ छर्रे तथा गोलियाँ लेकर वह अपनी भावी सहगामिनी के लिए उपहार की खोज में चल दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक सप्ताह में तो काना इम्पाला की उस टोली का पता लगा पाया, और दो सप्ताह उसके निशाना लेने के उचित स्थान की तलाश में बीत गये। बीसों बार वह साँप की भाँति रेंग-रेंगकर, उस अल्प झाड़ और अल्प छिपाव की भूमि में होकर, मार की दूरी तक पहुँचा, पर सन्तरी मृगी या चकित शावक के सिगनल से सब टोली भाग जाती थी, और उसे निशाना लेने का अवसर ही न मिलता था। अनेक बार वह जलाशय के समीपवर्ती नरकल में, इस आशा से छिपा कि, इम्पाला की टोली पानी पीने के लिए, अमुक दिशा से आयेगी, पर उसका यह अनुमान ग़लत निकला। टोली किसी दूसरी दिशा से ही आती और उसकी गन्ध पाकर तीन-तेरह हो जाती, और फिर कभी अँधेरे में पानी पी जाती।

काना का मनोरथ अभी सिद्ध नहीं हुआ था, उसे अभी एक भी फ़ायर करने का अवसर न मिला था, इतने ही में उसके मुखिया ने कहला भेजा कि यदि वह अपने प्रयत्न में शीघ्र ही फलीभूत न हुआ, तो और लोग भी उधर शिकार खेलने आयेंगे; क्योंकि पानी की कमी के कारण उस इलाक़े में शिकार खेलना असम्भव था। इस समाचार से विरहाकुल काना को और भी कष्ट हुआ, क्योंकि दूसरे लोगों के उधर आने से इम्पाला नर के मारने का कोई मौक़ा ही नहीं रहता। उनकी पैंछट से मृग-टोली किसी दूसरे स्थान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को चली जा सकती है। नरकल में छिपा काना अपने भाग्य को कोस रहा था, और कभी-कभी यह भी खयाल करता था कि उसके प्रतिद्वन्द्वी ने कहीं से सिकासी को वह चीज़ अवश्य ला दी होगी। ऐसा विचार आते ही उसे अपना भविष्य बड़ा ही विषादमय दिखाई पड़ता था। वह अपने आप को सिकासी के बिना हेच समझता था। सिकासी के कहने से वह आग में कूद सकता था, सब कुछ कर सकता था, पर उसे यह गवारा न था कि सिकासी किसी और की हो कर रहे। विचारों की इन तीव्र तरंगों में सामने से उसे इम्पाला की टोली दिखाई पड़ी। क्या सिकासी के प्रति उसका प्रेम उन्हें उसकी ओर खींचे ला रहा है, अथवा उसकी एक मास की कठिन तपस्या से देवी-देवता प्रसन्न हो गये हैं? जो हो, वह रक्त वर्ण टोली, सूर्यास्त से कुछ पहले, पेड़ों की छाया में होकर, नदी के सूखे नाले की ओर आ रही थी। कुछ गज़ आगे बढ़ती थी, और फिर मुंह उठा कर गन्ध लेने को सतर्क हो जाती थी। काना ने अनुमान किया कि उसके छिपने के स्थान से, लगभग दो-सौ गज की दूरी पर, वह टोली पानी पियेगी। और दो-सौ गज़ के लिए उसकी बन्दूक़—वह भी ठस्सा—बेकार थी। पर हवा ठीक थी, अर्थात् इम्पाला-टोली की ओर से काना की ओर को बह रही थी, इसलिए टोली उसकी गन्ध न ले सकती थी। काना सौ गज़ उस स्थान की ओर रेंगा जहाँ पर उसने पानी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पीने के लिये उस टोली के आने का अनुमान किया था। उसके सामने एक-एक कर के इम्पाला, नरकल में पानी पीने के लिए घुसा। बड़ा इम्पाला नर झुण्ड के पीछे था, वह खुली जगह में खड़ा हो गया। हवा में ऊँची नाक करके देखने लगा, और एक चौकन्ने सन्तरी की तरह वह अपने अनुयायी झुण्ड को तनक-सी आशंका पर सिगनल देने को तैयार था। काना की ओर उसकी बग़ल थी, और ढलते हुए सूर्य की किरणें उसकी लाल खाल पर पड़ रही थीं। काना बन्दूक़ चलाने में अभ्यस्त न था, इसलिए निशाना लेने में उस के हाथ ज़रा हिल गये। क्यों? कुछ आतुरता से—क्योंकि उसी निशाने पर उसका और सिकासी का सम्बन्ध निर्भर था। उसकी टस्सेदार बन्दूक़ गरजी। धक्के के मारे वह चारों शाने चित गिरा, और दूसरी ओर इम्पाला नर हवा में उछल कर क़ुलाचें मारता हुआ भाग गया! उसके पीछे उसके डरे हुए अनुयायी भी रफ़ूचक्कर हो गये!

बन्दूक़ थाम कर काना उस स्थान की ओर लपका, जहाँ पर हिरन पहले खड़ा था। दस गज़ आगे उसे ख़ून से सनी बालू मिली, और पचास गज़ आगे खोज से मालूम हुआ कि हिरन की पिछली टाँग घायल हो गई है। प्रसन्नता से वह उछल पड़ा! उसने सोचा कि वह हिरन उसका हो चुका। क्या वह अपने दल का सब से तेज़ दौड़ने वाला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्यक्ति न था? क्या उसने बिना घायल इलैंड को बीसियों बार भगा और थका कर नहीं पकड़ा था? तब घायल इम्पाला उससे कैसे निकल सकता था, और फिर जब उस हिरन की प्राप्ति पर उसका जीवन निर्भर था? उस हिरन पर तो वह जीवन की बाज़ी लगा चुका था, इसलिए आँखों को खोज पर गाड़े और कुछ झुके हुए, दुल्की चाल से वह दौड़ने लगा। भोजन और पानी की उसे कोई चिन्ता न थी। दोपहर का खाना खा चुका था और दो दिन के लिए पानी और जंगली फल काफ़ी थे, वह अभी एक घंटा ही अपनी खोज पर दौड़ा होगा कि रात ने दिन के कपाट बन्द कर लिये। काना को रुकना पड़ा, पर उसको इस बात की चिन्ता न थी। अगले दिन उषाकाल में ही वह खोजपर चलेगा और सूरज डूबने तक अभीष्ट हिरन उसके हाथ लग जायगा—यह विचार कर काना ने आग जलाई और अपने पासवाली खाल को वह देह से लपेट कर बैठ गया। बैठा हुआ वह—ध्यानावस्थित—लौ की ओर टकटकी लगा रहा था, मानो उस प्रज्वलित प्रकाश में सिकासी की मधुर मुसकान देख रहा हो, और कानों से अपने भावी बच्चों की हँसी सुन रहा हो।

विरही को नींद कहाँ? काना नाममात्र को सोया, और प्रातःकाल फिर खोज पर दुल्की चाल से चलने लगा। उस चाल से वह—आवश्यकता पड़ने पर—दिन-भर जा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सकता था।* दो-एक मील चलने के बाद काना को मालूम हुआ कि वह हिरन झुण्ड से अलग हो गया है, और उस ओर गया है, जिस ओर उसके साथी पड़ाव डाले हुए थे। यह तो उसके लिए और भी अच्छा था। भगवान् की यह तो विशेष कृपा हुई। उसके मित्र उसी दिन प्रातःकाल उससे मिलने आनेवाले थे और खून की खोज पाकर वे उसकी—काना की—खोज में आयेंगे, पर यदि हिरन उसी भाँति, उसी दिशा को, चलता रहा, तो वह पड़ाव के बहुत निकट पहुँच जायगा, फिर पड़ाव पर मांस ले जाने में उसे बहुत कठिनाई भी न पड़ेगी। दूसरी बात—जिससे उसकी प्रसन्नता और बढ़ गई—थी हिरन का झुण्ड को छोड़ देना। जब हिरन बहुत घायल हो जाता है, तब वह झुण्ड की गति से नहीं दौड़ सकता, इसलिए वह उससे हट कर अलग हो जाता है। काना के हिरन की भी यही बात थी, इसका प्रमाण आगे मिला। दस मील बाद काना को कई स्थानों पर बैठने से दबी और खून से सनी हुई घास मिली।

---

*अर्थात् दिन-भर के १३ घंटों में १०० मील के लगभग हुआ। संसार का सबसे तेज़ दौड़नेवाला फ़िनलैण्ड का नुरमी है। संसार के ओलम्पिक खेलों में वही अव्वल आता है, पर उस संसार में बेचारे अफ़्रीका के वीर काले आदमी नहीं हैं। अफ़्रीका में नुरमी जैसे सैकड़ों ही आदमी होंगे। —लेखक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिरन वहाँ दम लेने के लिए बैठा था। सफलता शीघ्र ही मिलेगी, और सिकासी को वह अपनी कह सकेगा—इस खयाल से काना का हृदय बल्लियों उछल रहा था। उसने अपनी बन्दूक़ और भाले को और भी मज़बूती से पकड़ा। हिरन के अन्तिम बार बैठने के स्थान से दस मील और आगे, उसे अपनी चीज़ मिली—पर मुर्दा हालत में। उस की प्राप्ति के साथ, उसकी आशा—प्रणयपूरित आशा—निराशा में परिवर्त्तित हो गई, और साथ ही क्रोधज्वाला जाग उठी।

जिसकी खाल के लिए उसने देवी-देवता मनाये, जिसकी प्राप्ति के निमित्त उसने इतनी तपस्या की; भूखा-प्यासा निर्जन बन में पड़ा रहा, और जिसकी खाल ले जाकर सिकासी को भेंट करता—वह विकृत और अधखवा पड़ा था। फटी खाल—सो भी टुकड़े—किस काम के थे! अधखवे हिरन और उसकी लाश की खोज से मालूम हो गया कि काना के साथ किसी ने धूर्त्तता की है। उसके शिकार पर किसी ने डाका डाला है। डाकू सिंह था। उषाकाल में जब काना कुछ प्रकाश की प्रतीक्षा में था, तभी उसके खोज पर चलने से पूर्व, किसी बड़े सिंह ने घायल इम्पाला को धर दबाया, और काना के करे-धरे पर पानी फेर दिया! पर क्या उसके किये-कराये पर पानी फिर गया था? इस विचार के आते ही उसे खयाल आया कि उसने किसी बुशमैन को अकेले सिंह को मारते नहीं सुना। कम-से-कम उसके प्रतिद्वन्द्वी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ने तो कभी मारा ही नहीं। यदि वह सिंह का पीछा करके उस लुटेरे को मार डाले, तो कैसा रहे? सिंह ने भर-पेट दावत खाई है, इसलिए वह बहुत दूर न गया होगा। "यदि मैं स्वयं सिंह को मार कर उसकी खाल सिकासी के पास ले जाऊँ, तो कैसा? क्या वह इम्पाला की खाल के बदले उसे स्वीकार न करेगी"—ये विचार उसके मन में आये। साथ ही सिंह ने उसके मांस को चुराया था, और जो बुशमैन के मांस को चुराता है, वह जीवित नहीं रह सकता—चाहे वह आदमी हो, या सिंह। काना की बन्दूक़ भरी तो थी ही। बस, क्रोध और आशा की वह छोटी-सी मूर्ति, ख़ूंख़्वारी के साथ, सिंह की खोज पर हो ली। बड़ी सावधानी से खोज के मार्ग में आनेवाले घास के प्रत्येक समूह और प्रत्येक झाड़ी की छानबीन करता हुआ, वह तेज़ी पर निस्तब्धता से, चलने लगा। सिंह की खोज भी उसके साथियों के पड़ाव की ओर थी; पर उसकी उसे अब क्या चिन्ता थी, क्योंकि मांस तो उसे उधर लादना ही न था।

दो घंटे खोजने के बाद वह एक टीले के पास पहुँचा, जो घनी झाड़ियों से आच्छादित था। उसने अपनी गति को धीमा और नज़र को ख़ूब सावधान कर दिया। उसे इस बात का विश्वास था कि उसका शत्रु वहाँ होगा। साँप की भाँति रेंग कर बड़ी सावधानी से वह उस टीले तक गया, और चुपचाप उस पर चढ़ कर चारों ओर देखने लगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

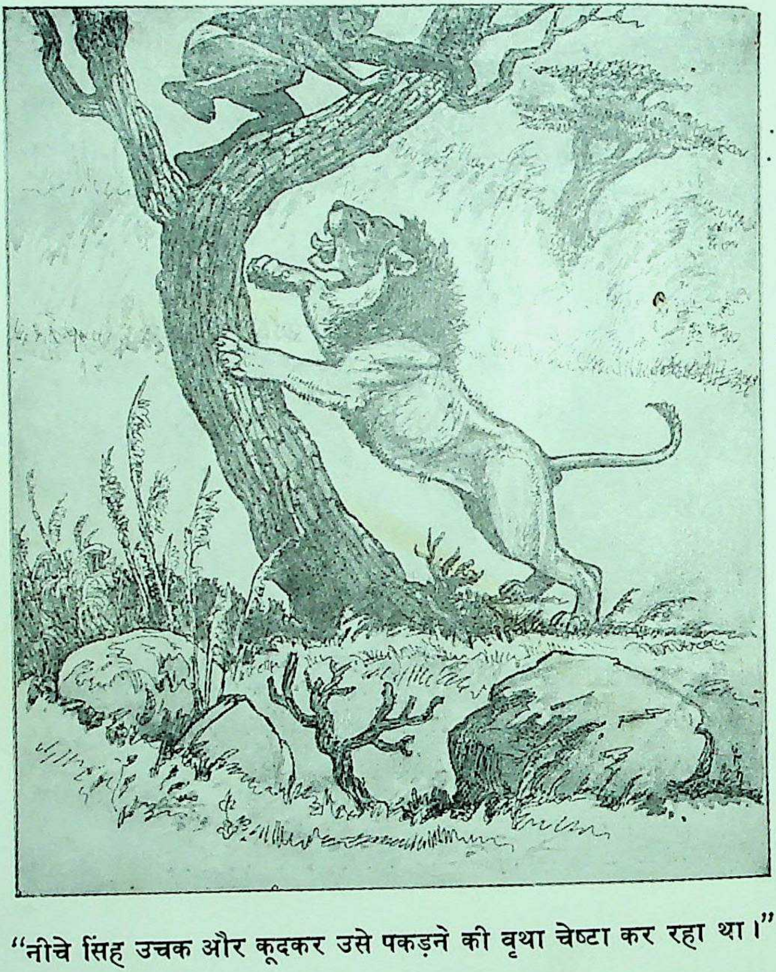

"नीचे सिंह उचक और कूदकर उसे पकड़ने की वृथा चेष्टा कर रहा था।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निगाह गड़ा कर जो देखा, तो उससे पाँच गज़ की दूरी पर कुछ मटमैली खाल दिखाई दी। वह सिंह था। जैसे ही उसने अपनी बन्दूक़ उठाई, वैसे ही खुलती और बन्द होती हुई, पीली आँखों का, एक जोड़ा उसकी ओर हुआ। उसी समय काना ने फ़ायर कर दिया।

फ़ायर की प्रतिध्वनि के साथ गूँजनेवाली क्रोधपूर्ण गर्जना हुई और झाड़ियों में छटपटाहट। बिजली की चमक की भाँति काना एकदम मुड़ा, और टीले से दो गज़ दूरी वाले पेड़ की ओर लपका। बन्दूक़ को छोड़, पेड़ पर कूद, वह तेज़ी से ऊपर चढ़ने लगा। चढ़ने में उसे पीछे से सिंह की झपट की आहट सुनाई पड़ती जाती थी। काना के पुष्ट पुट्ठे उसे छह—आठ—और दस फ़ुट ऊँचे पेड़ पर ले गये, और ज्यों ही उसने और ऊपर चढ़ने को एक शाखा पकड़ी, त्यों ही उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो गरम-गरम तेज़ चाक़ुओं से किसी ने उसकी कमर और नितम्ब चीर दिये हों। सिंह नीचे से उछला था, और उसके अगले पंजे काना की कमर पर पड़े थे। चोट और पीड़ा से काना के हाथ पेड़ की पकड़ से ढीले हो गये, और वह नीचे गिरने से बाल-बाल बचा। उसकी कमर, नितम्ब और रान उधड़ गई थी। जैसे ही काना कुछ ऊपर—चौदह फ़ुट ऊपर—एक शाखा पर बैठा, वैसे ही उसकी पीठ और टाँगों पर से खून के पतनाले बह-निकले। नीचे सिंह उचक और कूद कर उसे पकड़ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की वृथा चेष्टा कर रहा था। अन्त में शेर काना को अपनी पहुँच से दूर पाकर गुर्राता हुआ वहीं पड़ रहा। थोड़ी देर बाद सिंह के गुर्राने में कराहने की ध्वनि भी आने लगी, जिससे काना को ज्ञात हुआ कि सिंह भी कष्ट में है। एक—सिंह—घायल नीचे पड़ा था और दूसरा—काना—घायल दो चोटों से—नयन-वाण और सिंह-नख से घायल—ऊपर पेड़ पर टँगा था। अपनी पीड़ा के होते हुए भी सिंह की पीड़ा से काना को कुछ सन्तोष और आनन्द मिला।

थोड़ी देर बाद सिंह उठा और एक पेड़ की छाया की ओर चला, जो वहाँ से बीस गज़ दूर था। अपने आसन से काना ने सिंह की गति देखी। सिंह धीमे चल रहा था, और कभी-कभी लड़खड़ाता भी था। कुछ चल कर सिंह पीछे मुड़ कर काना की ओर देखता भी था, मानो उसने काना के पकड़ने की आशा अभी न छोड़ी हो; पर गोली ने सिंह के पेट और तिल्ली को भून-सा दिया था, और अपनी पशु-बुद्धि से उसे भासने लगा था कि बस अब उसके आखेट के दिन समाप्त हो गये! काना ने सिंह को पेड़ के नीचे गिरते देखा। इस समय उसे एक विचित्र और भीषण बात सूझी। कमज़ोरी बढ़ रही थी, और उसका सिर घूम रहा था, पर उसने पेड़ से उतर कर अपने शत्रु का अन्त करना चाहा। वह जानता था कि उसके साथी उसकी खोज पर आ रहे होंगे। यदि वे आ गये और सिंह को उन्होंने मार दिया,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तो सिकासी जो समाचार सुनेगी, वह यह होगा कि काना अपने शिकार में असफल रहा और उसके साथियों ने उसकी जान बचाई। काना के लिए कितने अपमान की बात होगी—यदि उसकी प्रेयसी उसके विषय में ऐसा समाचार सुने। उसने अकेले ही सिंह को चुनौती दी थी, और अकेला ही वह उसे मारेगा या मरेगा—ऐसा उसका दृढ़ संकल्प था।

काना यह भी जानता था कि एक बार पेड़ से उतर कर फिर वह उस पर नहीं चढ़ सकेगा, क्योंकि पेड़ की छाल और चिथड़ों से बँधे होने पर भी उसके घावों से ख़ून की धार बह रही थी, और—ख़ून की कमी से—उसे गहरी नींद-सी लग रही थी, पर काना उस तन्द्रा को टालता हुआ इस घात में रहा कि सिंह कब विद्युत-गति—आक्रमण के लिए अयोग्य हो। दो जीवों—जंगली पशु और दूसरा जंगली आदमी—के बीच सहनशक्ति की परीक्षा थी। यद्यपि सिंह की अपेक्षा काना की शक्ति तुच्छ थी, तथापि वीरता और चालाकी में वह भी पुरुष सिंह था।

सूर्य-किरणें जब तिरछी पड़ने लगीं, तब काना ने सिंह की लम्बी कराहट सुनी। साथ ही वह अपनी बग़ल के बल पसर गया, कभी-कभी उसकी पिछली टाँगें छटपटा जाती थीं, मानो वह अपने पिछले पंजों से अपने पेट को जान-बूझ कर खरौंच रहा हो। काना के क्लान्त मुख पर सुख की एक आभा झलक गई, और वह समझ गया कि अब उचित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घड़ी आ गई। सिंह वैसे भी मर जाता, पर अपनी मृत्यु-वेदना में वह वहाँ से कहीं दूर जा कर मरा तो? जब तक काना के होश दुरुस्त थे और उसमें अणुमात्र भी शक्ति शेष थी, तब तक वह सिंह की मौत के बारे में किसी प्रकार की अनिश्चिन्तता नहीं होने देने का।

धीमे से पेड़ पर से उतर कर काना ने अपनी बन्दूक़ उठाई। वह उसे भर और टोपी चढ़ा कर बड़ी सावधानी से शत्रु की ओर रेंगा। सिंह से छह क़दम पर वह रुका और घुटनों के बल बैठ कर निशाना ठीक किया। ग़ुर्राहट के साथ सिंह लड़खड़ा कर उठ खड़ा हुआ, पर उसके आक्रमण से पूर्व बन्दूक़ दाग़ दी गई थी। भारी गोली से सिंह के हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो गये, और सिंह-हृदय-विच्छेद से काना का हृदय सिकासी के हृदय से जुड़ गया। बस, वह यही चाहता था। सिंह को उसने गिरते देखा, और बन्दूक़ के धक्के से उसे भी मूर्च्छा आ गई। थोड़ी देर बाद जब मूर्च्छा जगी, तब उसने सिंह को मरा पाया। अब काना में बैठने-तक की शक्ति न थी, इस समय वह चाहता था कि किसी प्रकार सिकासी यहाँ आकर उसका पवित्र प्रेम देख सके।

अब एक और कठिनाई सामने आई। सिंह की खाल यदि शीघ्र ही नहीं काढ़ी गई, तो सड़ने लगेगी, और सड़ी खाल सिकासी के पास कैसे ले जाई जा सकती है। काना ने कातर दृष्टि से डूबते हुए सूर्य की ओर देखा और अनुपम सहिष्णुता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से चाक़ू निकाल कर वह सिंह की खाल खींचने लगा। ख़ून की कमी से मूर्च्छा का दौरा हो जाता था। हाथ काँप रहे थे। दो-चार इंच खाल निकालने के बाद उसे विश्राम के लिए रुकना पड़ता था। पर सहिष्णुता और धैर्य की भी सीमा होती है। काना घंटों पूर्व उस सीमा का उल्लंघन कर चुका था। खाल निकालने में एक बार उस के हाथ आवश्यकता से अधिक हिले। प्रकृति ने अपने नियम का पालन किया, और काना काँप कर सिंह पर गिर गया।

***

गोधूली के समय काना के साथियों ने उसे सिंह पर बेहोश पड़े पाया। उस दिन प्रातःकाल से ही वे उसकी खोज में थे, और अधखवे इम्पाला को देख कर वे समझ गये थे कि काना सिंह के पीछे गया है। आगे बढ़ कर उन्होंने वह भयानक दृश्य देखा। झटपट साथियों ने काना के मुँह में पानी डाला और जंगल से जड़ी-बूटी तोड़ कर उसकी मरहम-पट्टी की। रात-भर वहीं तीमारदारी करके प्रातःकाल वे उसे पड़ाव पर ले आये।

सिकासी से जब कहा गया कि कोई भी मूर्ख इम्पाला की खाल प्राप्त कर सकता है, और पैसेवाला ग़ुलाम तक उसे ख़रीद सकता है, पर काना-जैसा वीर पति उसे नहीं मिल सकता, तब सिकासी ने कुछ उत्तर नहीं दिया, वरन्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसने अपने रसीले नयन नीचे कर लिये। काना का वह प्रेमोपहार अवश्य स्वीकृत हुआ होगा। प्रमाण? सिकासी के दो गवाह—नयन—काना के पक्ष में थे। काना उसकी आँखों में समा चुका था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बदला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बदला

मानवहृदय, महासागर के जल के समान, प्रत्येक देश में समान ही है। विरोधात्मक भावनाएँ तो महासागर की तरंगों के समान हैं, जो आपस में लड़-भिड़ कर फिर एक हो जाती हैं। जब मानव-समाज का स्रोत एक है, तब वास्तविक गुण भी एक हुआ। हाँ, परिस्थिति के कारण सत, तम और रज के अंशों में भेद अवश्यम्भावी है। अवस्था अथवा स्थिति के कारण किसी गुणविशेष का प्राधान्य हो जाता है, इसीलिए प्रत्येक समाज में भले और बुरे दोनों प्रकार के व्यक्ति पाये जाते हैं, और इसी कारण प्रेम, द्वेष तथा सिद्धान्त के लिए मर-मिटने की आकांक्षा और स्त्री-पुरुष का पारस्परिक प्रेम किसी समाजविशेष अथवा देशविशेष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की बपौती नहीं हैं, और न इनका सम्बन्ध अमीरी और ग़रीबी से है। गोरे और काले, पीले और भूरे चमड़ों के भीतर भगवान् की एक ही निधि—हृदय—छिपी हुई है। वे लोग बड़ी भूल करते हैं, जो मानव-समाज के मूल स्रोत को भुलाकर बाह्य आडम्बर को ऊँच-नीच की कसौटी बनाते हैं।

***

दक्षिण-पश्चिमी अफ़्रीका के उत्तरी भाग में, ज़म्बज़ी नदी के निकटवर्ती प्रदेश में, मसूबिया नामक एक अफ़्रीकन जाति रहती है। यह जाति अपनी भीरुता के लिए बदनाम है, पर असभ्य और कायर कही गई, मसूबिया जाति के लोग अपने भरण-पोषण के लिए ख़ंजर और भाले चलाने में प्रवीण हैं, और शायद सभ्य लोगों से कहीं अधिक ईमानदार हैं। जंगल में जैसे हिरन, बाघ और बन्दर विहार करते हैं, वैसे ही वे भी वहाँ स्वच्छन्दतापूर्वक विचरते हैं। परमात्मा की एक सृष्टि है। हाँ, उन्हें यह नहीं आता कि वे अपने प्रदेश को छोड़कर दूसरों की रोटी छीनें, अथवा अपने रीति-रिवाज को दूसरों से मनवावें। यह काम तो आजकल सभ्य कहलानेवाली जातियों का ही है।

अब से आठ-नौ वर्ष पूर्व की बात है। प्रसिद्ध अंग्रेज़ शिकारी चैडविक मसूबिया जाति के लोगों के एक गाँव के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समीप जाकर ठहरे। चैडविक महाशय अपने शिकार की मुहिम पर थे। सायंकाल को वे अपने तम्बू में बैठे थे कि गाँव के समीप से आतंक-जन्य कोलाहल सुनाई पड़ा। तम्बू से बाहर आये तो देखा कि गाँव की स्त्रियाँ झील के पनघट से बिलखती, चिल्लाती और डरी हुई गाँव की ओर भागी आ रही हैं। उनकी चिल्लाहट सुनकर गाँव के आदमी पनघट की ओर बढ़े। चैडविक महाशय भी कौतूहलवश उधर गये। जाकर देखा तो मालूम हुआ कि एक नव युवती को एक मगर पकड़ ले गया। घाट पर ज्यों ही वह जलपात्र भरने झुकी—अभी घड़े ने पानी को छुआ ही था—कि सामने से पानी फटा और मुँह फाड़ कर एक मगर उस पर लपका। युवती की एक चीख निकली, और 'फच्च' शब्द के साथ मगर उसको लेकर गहरे पानी में बैठ गया। उसका घड़ा भी वहीं डूब गया, मानो उस मानिनी के बिना वह अपना मुँह दिखाना लज्जास्पद समझता था।

वह युवती हाल में ही विवाह-सूत्र में बँध कर मुतशिवी नामक व्यक्ति के यहाँ आई थी। अभी उसे अपने सुहाग-जीवन का कुछ विशेष अनुभव नहीं हुआ था। पेड़ का सहारा पाकर जिस प्रकार बल्लरी दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती है, उसी प्रकार अपने नवीन सहारे मुतशिवी को पाकर उस युवती के नवीन जीवन में कोंपलें निकली थीं; पर मुतशिवी के घर की वह जगमगाती ज्योति मनहूस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मगर ने बुझा दी! मुतशिवी को जब यह समाचार मिला कि मगर उसकी प्रियतमा को ले गया, तब वह एकदम विवेकशून्य-सा हो गया, और दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ कर सिसक-सिसक कर रोने लगा। इस विपत्ति-वज्रपात की उसे स्वप्न में भी आशंका न थी। अकस्मात् उसकी जीवन-नौका डूब गई। इस समय वह अपने आप को मुर्दे से भी अधिक तुच्छ समझ रहा था। आख़िर ध्येयहीन तथा सुखहीन जीवन से क्या लाभ, इसी मर्मस्पर्शी संकट की चोट से वह कुछ देर बेसुध-सा बैठा रहा, थोड़ी देर बाद उसकी आकृति बदली। झुका हुआ सिर ऊपर को उठा। हाथों को उसने घुटनों पर रखा। उसकी आँखें अध-निकले आँसुओं को निगलने लगीं। मेघवर्ण ललाट के नीचे अंकित आँखों में बिजली चमकी, और खड़े होकर वह गरजा—"वह मगर मूर्ख है! उसने मेरी स्त्री—नेमातुशा—को मारा है, और अब मैं—मुतशिवी—उसे मारूँगा! वह कल मरेगा!"

मुतशिवी की ऐसी प्रतिज्ञा तो उचित थी; पर चैडविक महाशय की समझ में यह न आया कि वह उसे पूरा कैसे करेगा, इसलिए उसने कहा—"देखो मुतशिवी, वह मगर—जैसा कि तुम कहते हो—अवश्य मरेगा; पर तुम एक फन्दा लगाओ मैं उसे तुम्हारे लिए मार दूँगा।"

मुतशिवी—"नहीं मालिक, यह नहीं हो सकता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फन्दा लगाऊँगा और मैं स्वयं ही उसे मारूँगा। मगर ने मेरी कुटिया का दीपक बुझा दिया है, उसे ज्योतिहीन कर दिया है, अब मैं अपने हाथ से उसका जीवन-प्रदीप बुझाऊँगा। या तो यह होकर रहेगा, या फिर मैं नमातुशा का अनुगामी हूँगा।"

मुतशिवी के दृढ़ निश्चय को सुन कर चैडविक के आश्चर्य की सीमा न रही। उन्होंने पूछा—"आखिर तुम बदला कैसे लोगे? उसकी योजना क्या है?"

मुतशिवी—"सूर्योदय और सूर्यास्त के समय प्रतिदिन पानी के किनारे कुत्ता बाँधूँगा, और पास ही छिपकर बैठ जाऊँगा। इस तरकीब को मैं तब तक काम में लाऊँगा, जब तक मगर उसे पकड़ने न आवे। कुत्ते को पकड़ कर मगर जैसे ही पानी में जायगा, मैं भी उसी के पीछे कूद पड़ूँगा और अपने खंजर से उसे मार डालूँगा।"

चैडविक ने मुतशिवी को बहुत-कुछ समझाया कि खंजर की अपेक्षा गोली कहीं अधिक कारगर है, गोली से मारने में अपनी जान का भी कोई खतरा नहीं है। खंजर की चोट पड़ी न-पड़ी, और फिर पानी में मगर की शक्ति का क्या ठिकाना! यदि मगर को तनक भी चोट लग गई, तो रूक में उसे कुत्ते के साथ आदमी का मांस और मिलेगा। चैडविक ने मगर मारने के लिए मुतशिवी को अपनी रायफ़ल तक देने का आग्रह किया, पर वह टस-से-मस न हुआ और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तेजित हो कर उसने कहा—"यदि मैंने उसके गोली मारी, और गोली खा कर कहीं वह डूब गया, तो मुझे यह कैसे मालूम होगा कि मैंने उसे मार दिया? हाँ, यदि मेरे ख़ंजर पर उसका ख़ून लग जायगा, और यदि मैं उसके पेट को सम्पूर्णतया चीर सकूँगा, तो मुझे ज्ञात हो जायगा कि मैंने उसका बध कर डाला।"

मुतशिवी का ख़ंजर चौड़े फलवाला था। उसकी धार इतनी पैनी थी कि उससे मगर के पेट को फाड़ना कुछ कठिन बात न थी, पर मगर के पेट के नीचे पहुँचने की समस्या थी। चूहे यदि बिल्ली के गले में घंटी बाँध दें, तो धोखाधड़ी से बिल्ली चूहों को नहीं पकड़ सकती। पर म्याऊँ का मुँह पकड़ना बड़ा कठिन है। अमुक बात होने से अमुक बात होगी—ऐसी कोरी बातें करने से कुछ नहीं होता। पानी में मगर के पीछे कूद और उसके पेट के नीचे पहुँच कर, उसे फाड़ देना—कुछ असम्भव-सा था। शेर को उसकी मांद में जाकर रस्से में बाँधने के समान था। हाँ, एक बात तो थी। मुँह में कुत्ता पकड़े हुए मगर उसे तब तक नहीं काटेगा, जब तक कि ख़ंजर उसके न भोंकी जाय। प्रशान्त महासागर-स्थित साउथ-सी टापू के निवासी शार्क को तो इसी प्रकार मारते हैं, पर मगर तो शार्क नहीं है, और न मुतशिवी वहाँ का निवासी। बहुत-कुछ समझाये जाने पर भी मुतशिवी अपने निर्णय पर अटल बना रहा। उसके हृदय में स्वयं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बदला लेने की भावना और उसके फल को निश्चित रूप से जान लेने की प्रबल इच्छा हिमालय के समान अचल और विशाल थी। वह अपने पथ से विचलित होनेवाला न था, इसलिए सायंकाल को दर्शक के रूप में चैडविक भी उसके साथ छिप कर पानी के किनारे बैठ गये।

* * *

उस सायंकाल को और अगले दिन प्रातःकाल तक कोई विशेष बात न हुई। ज़म्बज़ी की सहायक क्वैंडो नदी द्वारा बनाई गई, उस झील के किनारे मुतशिवी छिपा बैठा था। उसके आगे, पानी के बिल्कुल समीप कुत्ता बँधा था। मुतशिवी की आँखें उन आँखों की खोज में थीं, जिनकी ज्योति को वह बुझाना चाहता था। बगला और ढेंक किनारे पर आते थे। कुछ अपना चुगा खोज कर और कुछ पाकर उड़ जाते थे। कुत्ते ने वहाँ से छूट कर भाग जाने के लिए अनेक प्रयत्न किये। खिच कर, सिकुड़ कर, अपने बंधन को दाँत से काट कर और काँय-काँय कर के वह थक गया; पर उसके बूते वे बंधन न खुले। दस-बारह मिनट के लिए, कुत्ता चुप हो जाता और जीभ बाहर निकाले कातर-दृष्टि से इधर-उधर देखता, पर उसे मुक्ति न मिलती। बलि-पशु की मुक्ति जीवन से मुक्त होने पर भले ही हो, फिर वह तो नक्रदेव द्वारा बलि होने के लिए ही बाँधा गया था। मुतशिवी की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साध तो तभी पूरी होती, जब उस झील का आततायी उस कुत्ते को लेकर जलमग्न हो जाता।

प्रतीक्षा और सहिष्णुता का फल प्राय: मिलता ही है। सायंकाल को नरकल में मुतशिवी जा कर बैठा ही था कि कुत्ते का भौं-भौं भौंकना एकदम कष्टपूर्ण काँय-काँय में बदल गया। मगर कुत्ते को मुँह में दबा कर गहरे पानी में कूदा, उसकी बड़ी, काली और भयानक पूँछ से पानी का वह भाग मथ-सा गया, और झील में झाग-ही-झाग दिखाई देने लगे। मगर के साथ-ही-साथ बिजली की भाँति एक दूसरा जीव भी पानी में गिरा। वह मुतशिवी था। कितना विकट साहस! कितना दृढ़ संकल्प! उसके प्रेम और बदले की भावना को कोई नाप सकता था! चैडविक को उसके निर्णय पर कुछ सन्देह था। उनका खयाल था कि आवेश में आकर मुतशिवी ने लम्बी-चौड़ी बातें बघार दी हैं। मगर की विकराल आकृति देख कर वह सहम जायगा और पानी में न कूदेगा। पर उसके पानी में कूद पड़ने पर चैडविक ने चुपचाप उससे अपनी भूल के लिए मानसिक क्षमा-याचना की।

मुतशिवी मगर को मारने के लिए कूद पड़ा। प्रेमी के लिए जान देना कुछ कठिन बात नहीं है, पर चैडविक के सम्मुख प्रश्न था कि मुतशिवी अपनी स्त्री का अनुगामी बनेगा या उसके शिकारी का शिकार करेगा। वह इसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

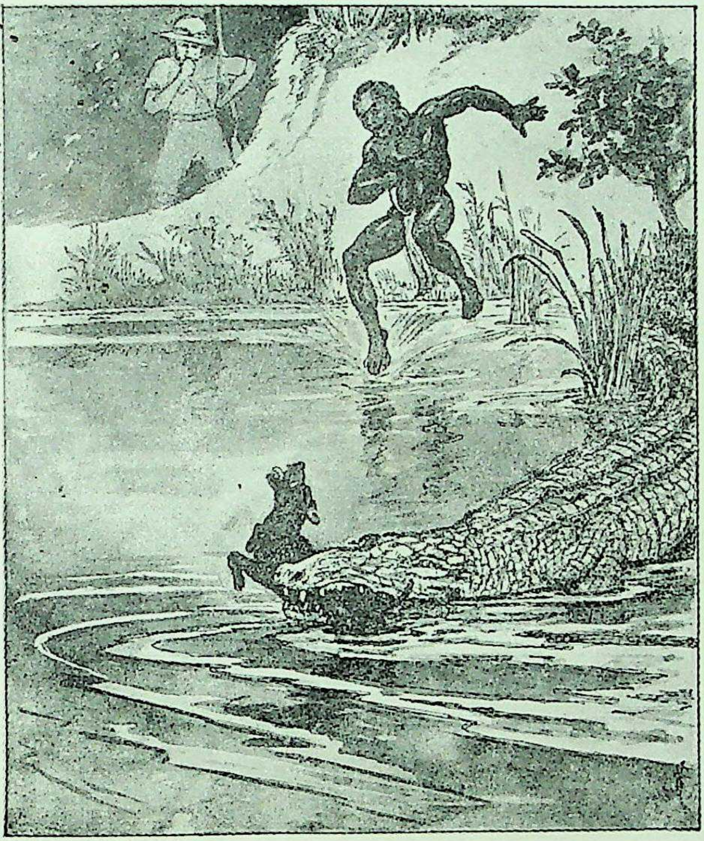

"मुताशिवी मगर को मारने के लिए कूद पड़ा।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उधेड़-बुन में थे कि थोड़ी देर में ही मगर की थूथड़ी पानी के बाहर निकली। उसके मूँह में कुत्ता था। मगर ने झील के दूसरे किनारे की ओर जाने की कोशिश की, पर उसकी यह गति तो ग्राह-स्वभाव के विपरीत थी, क्योंकि मगर अपने शिकार को पकड़ कर उसको डुबाने की ख़ातिर नीचे पानी में बैठ जाता है। अपने शिकार को लेकर पानी में डूब कर तुरन्त ही किनारे की ओर जल से बाहर जाने का अर्थ था कि कोई अवांछनीय वस्तु उसके नैसर्गिक दुर्ग—गहरे पानी —में थी, जिससे विचलित होकर वह ख़ुश्की की ओर जाने की चेष्टा कर रहा था। घर में जब आग लगती है, तब बाहर को ही तो भागते हैं। कभी-कभी मनुष्य तक के लिए उसके जाति वाले वन-पशुओं से भी अधिक क्रूर हो जाते हैं। ऐसी दशा में मनुष्य उनकी सूरत तक देखना पसन्द नहीं करता। फिर वह तो मगर था। कुछ गड़बड़ हुई होगी। मुतशिवी ने अपने पैने खंजर को रक्तपान कराया होगा। मगर चाहता तो वह मुतशिवी को उसकी प्रियतमा के पास पहुंचा कर; उसी के स्थान पर दफ़ना सकता था; पर उसके मुँह में तो रसगुल्ला—कुत्ता—रखा था। अपने स्वादिष्ट भोजन को उसने न छोड़ा। बहुत-से लोगों को जान की अपेक्षा जीविका अधिक प्यारी होती है। तिसपर मगर को यह समझ थोड़े ही थी कि उसकी जान का गाहक कोई वहाँ गया था। कुत्ता और बकरा वह पकड़ा ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करता था। एक दिन एक स्त्री पकड़ ली, तो क्या हुआ।

कुत्ते को मुँह में पकड़े ज्यों ही मगर पानी के धरातल पर आया और दूसरी ओर किनारे की ओर चलने लगा, त्यों ही एक गोलाकार काली-सी चीज़ पानी पर उछली। वह मुतशिवी था। एक निमेष के लिए वह बाहर निकला और फिर डूब गया। एक क्षण बीतने पर फिर मगर ऊपर को तड़पा और पानी के धरातल से आधा उठ गया, और अपने कठोर जबड़ों से कुत्ते को छोड़ दिया। मगर के आस-पास चारों ओर का पानी रक्त-वर्ण था, मानो खून के नल खोल दिये हों। मगर की बग़ल में मुतशिवी भी दिखाई पड़ा। मगर ने ज्यों ही कुत्ते को छोड़ा, मुतशिवी एकदम मुड़ा और किनारे पर बाहर आने के लिए प्राणपण से कोशिश करने लगा। अब उसे अपनी जान के लाले पड़े हुए थे कि कहीं मगर उस पर वार न कर बैठे, पर उसके किनारे पर आने से पूर्व ही मगर विलीयमान हो चुका था।

***

"मुतशिवी, क्या तुम मगर तक पहुँच सके थे ?"—चैडविक ने पूछा।

मुतशिवी—"मेरी ख़ंजर की धार देखो। मगर के मांस के छीछड़े अब तक इस पर चिपटे हुए हैं, और तनक झील के पानी पर दृष्टि डालो कि वह कितना लाल है!"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चैडविक—"तो क्या मगर मर जायगा ?"

आवेश में आकर मुतशिवी ने कहा—"वह तो मर चुका मालिक, कल इसी समय हम लोग उसकी खाल निकालेंगे।"

***

अगले दिन सूर्यास्त से दो घंटे पूर्व मगर उलटा—पीठ के बल—झील में तैर रहा था। मुतशिवी के खंजर ने उसकी स्त्री की जीवित क़ब्र को चीर डाला। डोंगियों के सहारे मुर्दा मगर किनारे पर लाया गया। नापा तो पन्द्रह फ़ुट लम्बा निकला, और इस हिसाब से आयु में शायद सौ वर्ष का होगा! पन्द्रह फ़ुट का मगर साधारण मगर नहीं होता, और छिपकली के-से थूथनीवाले (Snub-nosed) मगर के लिए यह ख़ासी अच्छी लम्बाई है। इतने बड़े और भयंकर मगर को गहरे पानी में जाकर मारना साधारण बात नहीं है। और न इससे यह ख़याल करना चाहिए कि हरएक इस प्रकार मगर को मार सकता है, या मनुष्यभक्षक मगर का मारना इतना सरल है।

मगर का पेट फाड़ा गया। भीतर से और चीज़ों के साथ स्त्री के गहने, अधगली टाँगें और केश निकले। उनको पहचानने वाला भी वहीं था। उन्हें देख कर मुतशिवी फूट-फूट कर रोने लगा। विकृत तथा अधगले शरीर ने मुतशिवी के सम्मुख उसके सुखमय गार्हस्थ्य-जीवन का चित्र खींच

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिया। उसके हृदय का ज्वालामुखी धधकने लगा, और इस ज्वालामुखी के दो मुँहों (Crater) से आँसू लावा के रूप में निकलने लगे। हिचकियों से उसका शरीर काँप रहा था और अश्रु-धारा बह रही थी।

***

उन आँसुओं से उसने अपनी स्त्री को अश्रु-अंजलि दी, पर विरह का ज्वालामुखी उसके हृदय में जलता ही रहा, और वह उसके जीवन-भर जाग्रत रहेगा। उसे केवल एक सन्तोष और अभिमान है कि उसने अपनी प्यारी के खून का 'बदला' खून से लिया। वह बदला था या नहीं—यह कहना कठिन है, पर मुतशिवी को उस बदले से कुछ सान्त्वना ज़रूर मिली, और उसका स्नेह अपनी मृत पत्नी के प्रति और भी गाढ़ा हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अटल नियम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अटल नियम

शासन-प्रणालियाँ समयानुसार क़ानून बनाती हैं। आज आर्डिनेंस जारी होता है, तो कल प्रेस-ऐक्ट पास होता है। ब्रिटिश पार्लमेंट तक सदासुहागिन की भाँति, इसी उधेड़बुन में, अपने अधिपति मंत्रिमण्डल को बदला करती है; पर 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की तरह जंगल का एक अटल नियम है, जो अनादिकाल से उसी रूप में व्यवहृत होता आया है, और अनन्तकाल तक उसी भाँति होता रहेगा। वह है आवश्यकता पड़ने पर मारने या मर मिटने के लिए तैयार रहना। लड़ना और युद्ध करना निन्दनीय है। उसमें पशुता है; पर देवताओं और महात्माओं को छोड़ कर किसमें पशुता नहीं है, इसीलिए जब मार-काट और जीवन के सौदे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की नौबत आ जाय और बिना लड़े काम ही न चले, तब इस नश्वर शरीर को बलि चढ़ाने और शत्रु को परास्त करने में आनाकानी न करनी चाहिए। कदाचित् इसी अटल नियम को दृष्टि में रख कर जनरल रौलिंसन ने कहा था—"जब लड़ाई पर आ बीते, तब घोर युद्ध करो, और उसका अन्त ही करके छोड़ो।"

मानव-समाज में जंगल के इस क़ानून के अनेक अपवाद देखे जाते हैं। अनेक लोग विशेष कारणों से कायरता के कूप में गिर पड़ते हैं; पर जंगली जीवों में—उनमें, जिनमें लड़ने और मरने-मारने की आदत है—इस नियम का पालन प्रायः हुआ ही करता है। दूसरे की जान लेने और अपनी देने के लिए वे आवश्यकतानुसार सर्वदा तैयार रहते हैं। उन्हें इस बात का अन्देशा नहीं होता कि, उनके बाद कोई उनका नामलेवा भी रहेगा या नहीं, और न वे गीता के इस उपदेश को समझते हैं—'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्'। प्राण देना और प्राण लेना उनके जीवन की नैसर्गिक, पर साधारण-सी बात है।

एक बार मेजर फ़ोरन और उनका शिकारी साथी हामिसी, पूर्व-अफ़्रीका में, सावो के निकट, कूडू हिरन की खोज पर जा रहे थे कि खोज के मार्ग में, कुछ दूर आगे, झाड़ी में कुछ खड़खड़ाहट सुनाई दी। मेजर फ़ोरन ने चौकन्ने होकर उस ओर अपना ध्यान और आँखें लगाईं; पर न

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तो वहाँ कुछ दिखाई देता था और न खड़बड़ से ही किसी जीव का अनुमान किया जा सकता था। बड़ी सावधानी से, चुपचाप आगे बढ़ कर जो कान लगाये, तो पहले डरावनी गुर्राहट और तीव्र हुंकार, फिर कुछ क्रोधपूर्ण फुफकार और अन्त में सिंह की गहरी गर्जन सुनाई पड़ी। उन संकेतों और ध्वनियों से स्पष्ट था कि प्राणों की बाज़ी लगा कर दो लड़ाके लड़ रहे हैं। मानवीय सभ्यता से दूर, प्रकृति के प्रांगण में दो वीर, जीवन और मृत्यु का वास्तविक नाटक खेल रहे थे। अभिनय को देखने के लिए मेजर फ़ोरन बड़ी तेज़ी के साथ दुलकी चाल से उस ओर बढ़ा। हामिसी भी उसकी बग़ल में उसी गति से चला। टिकट तो लेना ही न था, और न उस अभिनय के पात्रों को दर्शकों की वाहवाही लूटनी थी। दर्शकों में, वृक्षों और प्रकृति-सुन्दरी को छोड़ कर, वहाँ था ही कौन? फ़ोरन और हामिसी चोरों की भाँति वहाँ जा पहुँचे। हाँ, वृक्ष और प्रकृति-परी निष्पक्ष दर्शक थे, जो उस रोमांचकारी लड़ाई को देख रहे थे। उन्हें किसी भी प्रतिद्वन्द्वी का पक्ष लेना मंजूर न था। वे तो न्यायाधीश की भाँति उस रोमाञ्चकारी संग्राम को देख रहे थे। गुर्राहट और तर्जन, हुंकार और फुफकार से प्रकृति-सुन्दरी के रोंगटे ज़रूर खड़े हो जाते थे; पर थे सब तटस्थ। और उन दो मानवी चोलों की क्या दशा थी?

दुल्की चाल से कुछ दूर चल कर मेजर फ़ोरन और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हामिसी एक खुले हुए मैदान के किनारे आये। वह स्थान घनी झाड़ीवाले जंगल के बीच में था। वहाँ आकर दोनों एकदम रुक गये। आँखों के सामने जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे वे स्तम्भित ही नहीं, वरन् संज्ञाहीन भी हो गये। फ़ोरन को तो अपनी रायफ़ल की भी सुध न रही। वह तो बस मूर्तिवत् खड़ा उस दृश्य को घूरता ही रह गया। उससे न तो बोला जाता था, और न वह किसी तरह की हरकत ही करता था। हामिसी भी फ़ोरन के समीप सरक आया। आश्चर्य-भरी प्रसन्नता से उसके मुँह से निकला—"अरे"?

उन दोनों के सम्मुख काले केसरवाला एक बहुत बड़ा सिंह और एक भीमकाय भैंसा घमसान युद्ध में संलग्न थे। फ़ोरन और हामिसी के पास रायफ़लें थीं; पर उस युद्ध में इनका हस्तक्षेप करना न केवल दख़ल दरमाक़ूलात होता, वरन् वह एक अच्छे खिलाड़ी के सद्भावों के विरुद्ध भी था। फ़ोरन के लिए यह कौन कम सौभाग्य की बात थी कि उसे वह दुर्लभ दृश्य देखने को मिला। एक अच्छे शिकारी की भाँति, फ़ोरन ने उन दोनों लड़ाकों के द्वन्द्व को अन्त तक देखने का निश्चय किया। क्या ही अच्छा होता, यदि फ़ोरन के पास उस समय मूवी कैमरा होता।

फ़ोरन और हामिसी को यह पता न था कि सिंह और भैंसा कब से लड़ रहे हैं। किसकी ओर से और कब उत्तेजना हुई। 'बिनायमुख़ासमत' क्या थी, इसका तो कुछ पता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

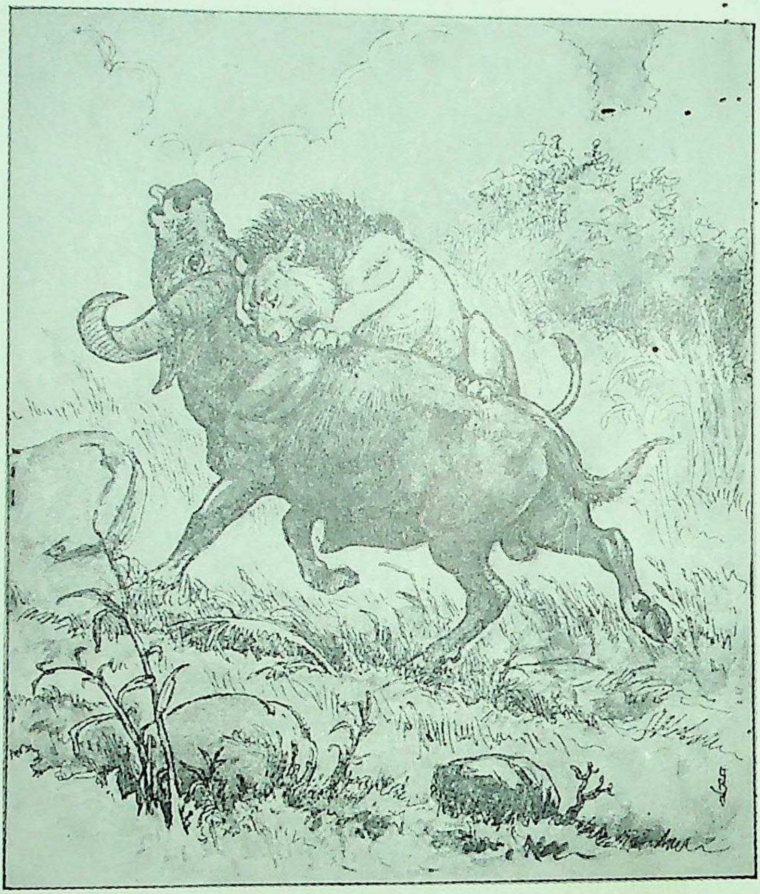

"सिंह भैंसे के विशाल कन्धों पर, दृढ़ता से चिपटा हुआ, अपने पैने नखों से उसे फाड़ रहा था, दाँतों से काट रहा था। और विकराल रूप से बुरी तरह गुर्रा रहा था।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही न था। हाँ, एक बात साफ़ मालूम होती थी, वह यह कि, वह घातक लड़ाई बहुत देर से ठनी हुई थी। फ़ोरन और हामिसी तो उस नाटक के अन्तिम अंक की समाप्ति पर आये थे, और वहाँ आकर उनको समय का कुछ भान ही न रहा। उस भयंकर द्वन्द्व की प्रत्येक प्रगति और चढ़ाव-उतार के देखने में आँखें चिपक-सी गईं। समय की गणना—घंटा और घड़ी—की सुध ही न रही।

***

जिस समय फ़ोरन घटना-स्थल पर पहुँचा, उस समय सिंह भैंस के विशाल कन्धों पर, दृढ़ता से चिपटा हुआ, अपने पैने नखों से उसे फाड़ रहा था, दाँतों से काट रहा था और विकराल रूप से बुरी तरह गुर्रा रहा था। भैंसा अपनी अपार शक्ति और मक्कारी का प्रयोग अपने प्रतिद्वन्द्वी को गिराने में कर रहा था, जिससे वह उसे अपने सींगों के अंटों पर चढ़ा सके। इस प्रकार के अवसर के लिए न-मालूम वह कितनी देर से प्रयत्न कर रहा होगा। कौन-कौन से पैंतरे उसने न बदले होंगे? कितनी बार उसने सिंह को अपनी पीठ पर से न गिराया होगा? भैंसे के हथियार थे सींग, टक्कर और उसका भारी बोझ। पर सिंह की चार थापों में लगे पाँच-पाँच पैने छुरे, दाँत और तिस पर उसकी विद्युत गति एवं कम्पोत्पादक गुर्राहट ग़ज़ब ढा रहे थे। मुँह से काट कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और दोनों पंजों से फाड़ कर और झटका दे कर भैंसे की गर्दन तोड़ने का प्रयत्न सिंह करता था। अभी तक वह विफल रहा था। भैंसे की चाल भी सिंह पर न चली थी। भैंसा पहाड़ की काली चट्टान की तरह खड़ा था, जिसमें से ख़ून का प्रपात जारी था।

भैंसे ने सिंह को गिराने के बहुत दाँव-पेंच किये। अन्त में उसने उसे अपनी पीठ से ज़मीन पर गिरा दिया। सिंह के सँभलने से पूर्व भैंसे ने एक सींग अपने प्रतिद्वन्द्वी के घुसेड़ कर उसे ज़मीन से बाँध-सा दिया। उस अवस्था में भी दोनों ख़ूब लड़े। भैंसा सींग गड़ाये उसे वहीं रगड़ रहा था। सिंह ग़ुर्राता हुआ भैंसे की खोपड़ी और गर्दन को अपने नखों से खरोच रहा था। सिंह की गर्जना और भैंसे की हुंकार, जंगल में प्रतिध्वनित हो कर, वायु को चीरती हुई चली जाती थी। वहाँ पर प्रलय-सा मचा हुआ था। आसपास के जीव चौकन्ने और घबराये हुए थे। सिंह और भैंसे के दाँव-पेंच से फ़ोरन को रोमांच हो आया, बिलकुल तन्मयता हो गई थी। आँखें उस दृश्य को पीते-पीते अघाती न थीं।

थोड़ी देर में सिंह की चढ़ बनी, और देवी का वाहन, प्रतिभट महिषासुर के बन्धन से मुक्त हो सका; पर मुक्त होने से पूर्व उसने भैंसे को बुरी तरह फाड़ दिया था। खाल और मांस के लम्बे टुकड़े भैंसे के शरीर से लटक रहे थे। ख़ून और मिट्टी की कीच दोनों के चारों ओर हो रही थी। दोनों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ओर के प्रहारों से घबरा कर मानो ख़ून, शरीर छोड़ कर ज़मीष में छिपने को घुसा जाता था। पैंतरे बदल कर दोनों घात-प्रतिघात करना चाहते थे। सिंह भैंसे के सींग और टक्कर बचा कर उसकी पीठ पर उछल कर बैठना चाहता था। उसके शरीर के घाव से उसकी शक्ति क्षीण हो रही थी; पर क्रोध और शत्रु को परास्त करने की उसकी लालसा में कुछ भी अन्तर न आया था, इसीलिए वह डटा हुआ था; और भैंसे पर उछल कर बैठने की घात में था। बस, डर उसे यही था कि उछलने में कहीं वह भैंसे की टक्कर न खा जाय, या किसी सींग से न टकरा जाय। सिंह जैसे-जैसे वच-बच कर दाएँ-बाएँ ग़ुर्राता, छलांग मारने की घात में पुट्ठ सिकोड़ कर बैठता कि भैंसा भी बिजली की गति से, अपनी ढाल और तलवार—सिर तथा सींग—उधर कर देता। भैंसा अपनी रक्षा ही न कर रहा था, वरन् आक्रमण करने का अवसर भी ताकता था कि सिंह को कब कुचल कर कोफ़्ता बना दे, या उसे सींगों से छेद कर अपनी विजय पर प्रसन्न हो सके। घूम-घूम कर, ग़ुर्राते और हुंकारते, नाक और मुँह से ख़ून बहाते, घावों और हार-जीत की बात भुला कर, उधड़े और फटे हुए शरीरों को इधर-से-उधर करते हुए, वे दोनों अपने-अपने अवसर की प्रतीक्षा में थे। और कब? तब, जब उनके शरीरों से जीवन-प्रवाह पहाड़ी नाले की तरह गरम ख़ून के रूप में बहा जा रहा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ़ोरन ने जब खयाल किया कि सिंह पर काफ़ी मार पड़ चुकी है, अब वह रण-क्षेत्र से भाग कर हाँपता हुआ, कहीं जाकर अपने घाव चाटेगा, तभी आकस्मिक तीव्रता से सिंह उछला और बिजली की भाँति भैंसे के कन्धों पर जा गिरा। वह भैंसे की गर्दन पर जाकर चुभा-सा रह गया। उसका शरीर भैंसे की पीठपर मेरुदण्ड के ऊपर लम्बा पड़ा हुआ था। ढंगों से प्रतीत हुआ कि भैंसे का 'राम नाम सत्य' होने ही वाला है, और सिंह भैंसे की मोटी गर्दन को काट कर, रीढ़ की हड्डी तक पहुँच कर, एक ही झटके में उसे तोड़ देगा और बलशाली भैंसा मर कर गिर पड़ेगा। सिंह और उसके बिरादरी के जीव इसी प्रकार बड़े जीवों को मारते हैं। फ़ोरन प्रतिक्षण भैंसे को गिरता हुआ देखने की आशंका में था।

पहले तो फ़ोरन ने अपनी रायफ़ल सँभाली; पर थोड़ी ही देर में उसने उस लड़ाई में हस्तक्षेप करने का विचार छोड़ दिया। प्रवल शक्ति के उस भयंकर प्रदर्शन में किसी योद्धा को विजय के सम्मान से वंचित् करना बड़ा ही अनुचित था। जंगल के क़ानून ने उस नाटक को रचा था, उसमें हस्तक्षेप करना अन्याय और धूर्त्तता होती।

फ़ोरन का अनुमान था कि भैंसा शीघ्र ही मृतप्राय होकर गिरेगा। भैंसा घुटनाया, पर उस दशा में भी वह अपने शत्रु को पीठपर से गिराने का भगीरथ प्रयत्न कर रहा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। उस अखाड़े में वे दोनों, उसी अवस्था में, अटल निश्चय और बड़ी क्रूरता से लड़ते रहे। कुछ देर बाद भैंसा तीव्र गति से अपनी एक बग़ल के बल गिरा। ऐसा प्रतीत हुआ कि सिंह भैंसे की गर्दन तोड़ने में सफल हुआ; पर वास्तविक बात कुछ और ही थी। भैंसे ने गिर कर एक पलटा खाया, और सिंह के मृत्युपाश से मुक्त हो कर वह खड़ा हो गया। भैंसे का खड़ा होना था कि सिंह भी तड़प कर फिर उसकी पीठ पर जा बैठा। अबकी बार वह भैंसे की गर्दन और कन्धे पर सींगों की पहुँच के ठीक पीछे—आड़ा अड़ा था। भैंसे को तेज़ी और ज़ोर से काटता हुआ वह उससे सट गया। भैंसे ने पीड़ा के कारण ज़ोर से रँभाना और कराहना प्रारम्भ किया; लेकिन निर्भय भैंसा घबराया न था। पीड़ा और कष्ट से कराहट और आह निकलना साधारण-सी बात होती है। वह तो इन्द्रियों का धर्म है—पशुता है। लड़कों के बध का समाचार सुन कर गुरु गोविन्दसिंह जैसे पहुँचे हुए व्यक्ति के आँसू निकल पड़े थे। उनके एक शिष्य ने पूछा—"महाराज, आप औरों को तो उपदेश देते हैं कि जीवन और मृत्यु पर हर्ष-विषाद न करो, परन्तु आप स्वयं रो रहे हैं।" गुरु ने गम्भीरता से उत्तर दिया—"मैं शोक नहीं कर रहा, आँसू जो टपक रहे हैं, उनसे कोई हानि नहीं है। बेल से जब फल तोड़े जाते हैं, तब डंठल पर पानी आ ही जाता है। इस शरीर-रूपी बेल से मेरे बच्चे तोड़ लिये गये हैं—मारे गये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं—आँखों से आँसू गिरते हैं, सो स्वाभाविक है; पर वे मेरे कर्त्तव्यपथ में बाधक नहीं हो सकते।" तब एक भैंसे के दिल से फाड़ने और काटने के कारण कराहट निकली, तो क्या आश्चर्य? हाँ, भैंसे की युद्ध-प्रवृत्ति में लेशमात्र भी अन्तर न पड़ा था। वह बड़े क्रोध से लड़ रहा था और सिंह को गिराने के उद्योग में था। सिंह और भैंसे का युद्ध सिक्खों के इस 'शबद' "बोटी-बोटी कटि परै औ तोऊ न छोड़ै खेत, सूरा सोई पहचानिये जो मरै दीन के हेत" का जीता-जागता चित्र था।

भैंसे ने तव मानो अपनी बची-खुची सारी शक्ति एकत्र करके, एकदम अपने-आप को पीछे की तरफ़ गिराया। अर्ध चन्द्राकार में सिंह का शरीर, भैंसे के सिर पर होकर घूम गया। वह पीठ के बल भैंसे के भीमकाय शरीर के नीचे गिरा। उस जीवित चट्टान के नीचे होने के कारण सिंह फ़ोरन की आँखों से ओझल हो गया। सम्भवतः धक्के और बोझ से उसका हलुआ बन गया।

उनके अखाड़े में चारों ओर ख़ून-ही-ख़ून था। वह स्थान बूचड़खाना-सा बना हुआ था। एक क्षण के लिए दोनों लड़ाके मुर्दे की भाँति पड़े रहे। अस्थि-पंजर के उस ढेर में कोई गति ही न हुई। दोनों ही मौत के मुँह में प्रतीत होते थे। फ़ोरन उस अभिनय का पटाक्षेप देखने के लिए बड़ा ही उत्सुक था, इसलिए आश्चर्यान्वित हो कर उसने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हामिसी की ओर ताका। हामिसी के मुखमंडल पर पसीने का झरना झर रहा था। उसकी त्यौरी फटी हुई थी, मुँह खुला हुआ था, और रुक-रुक कर वह लम्बी साँसें ले रहा था। हामिसी पर मोहिनी-सी फिरी हुई थी। उसकी सम्पूर्ण श्रवण और मननशक्ति उस अनहोने दृश्य पर लगी हुई थी। फ़ोरन ने उसकी यह दशा देख कर अपनी आँखें घातक संग्राम पर लगाईं।

धीरे-धीरे लड़खड़ाते हुए भैंसे ने उठने का प्रयत्न किया, जिसमें वह सफल भी हुआ। उसने अपने प्रतिद्वन्द्वी के कुचले शरीर को घूर कर देखा। सिंह निस्तब्ध पड़ा था। भसे की क्रोधाग्नि अभी शान्त न थी। उसे आशंका थी कि कहीं वे तीखे छुरे और क्रूर दाँत फिर न उछल पड़ें। सिंह का कचूमर निकल गया था; पर भैंसे को अभी इसका पूरा विश्वास न था। इसीलिए उसने दो-तीन भयानक हुड्डें सींगों से मारीं, परन्तु सिंह निस्तेज हो गया था। विजयी भैंसा सन्तुष्ट हो कर पराजित और मृतक सिंह पर खड़ा था। उसकी टाँगें शराबी की टाँगों की तरह इधर-उधर डगमगा रही थीं, आँखें चमक रही थीं और विजयासव का स्वाद उसे आ रहा था।

घोर परिश्रम से ली जानेवाली साँसों और टाँगों के इधर-उधर झूमने के अतिरिक्त और कोई गति ही न थी। चारों ओर श्मशान की-सी शान्ति थी। फ़ोरन को तो अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिल की तेज़ धड़कन भी सुनाई पड़ती थी।

भैंसे की टाँगें कुछ और डगमगाईं, उसकी जीवन-ज्योति बुझने ही वाली थी। कुछ दम-सा घुटा और उसकी आत्मा सिंह की आत्मा से मिलने चली गई। 'धम्म' से भैंसे की लाश सिंह के शव पर पड़ी। विजेता और विजित दोनों तर-ऊपर पड़े थे। घंटों का अभिनय समाप्त हो चुका था।

जंगल का क़ानून निभाने में दोनों ने ही अपनी बाँकी अदा दिखाई थी। दोनों ने मर-मिटने की ठान ली थी। कोई चारा न रहा होगा। मरने में ही उन्होंने ज़िन्दगी समझी होगी। और जब कोई प्राणी मृत्यु को ही जीवन समझ ले, तब उसके प्रत्येक अवयव से यही स्वर झंकरित होता है—

"सिर से क़फन लपेटे क़ातिल को ढूँढ़ता हूँ।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपमानजनक मृत्यु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपमानजनक मृत्यु

जो पैदा हुआ है, वह मरेगा। यदि जीवन बुरी चीज़ नहीं है, तो मृत्यु भी बुरी नहीं हो सकती। बच्चा पैदा होता है, फिर बढ़ता है, बढ़ कर जवान और जवान से बूढ़ा हो कर फिर उसी फेर—पुनरपि जननं पुनरपि मरणं—में प्रड़ जाता है। पर, मौत के भेद हैं। कोई हँसी-ख़ुशी शूली को हार बनाता है, और कोई कीड़े पड़ के सड़ कर मरता है; तो कोई रण-क्षेत्र में लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त होता है! मरना सब को है, पर सद्गति बिरलों की ही होती है।

यही बात थोड़ी-बहुत पशुओं के लिए भी लागू है। शर, और बाघ गोली से मारे जायँ तो कोई आश्चर्य नहीं, चींटी पैर के नीचे दब कर मर जाय तब भी कोई विशेष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बात नहीं। पर यदि शेर को घेर कर लाठियों से मार दिया जाय तो शेर के लिए यह घोर अपमान है !

अभी हाल की बात है। मैं पेचिश से पीड़ित आगरा में पड़ा था। कमज़ोरी बहुत थी और तिस पर पेट में इतनी पीड़ा, मानो, कोई सैकड़ों सुइयाँ चुभा रहा हो। शिकार खेलने से कई इन्द्रियाँ बड़ी प्रबल हो जाती हैं—विशेष कर, आँखें और कान। सो, मैंने पास के कमरे में, अपने विषय में बात-चीत करने वाले दो मित्रों को कहते सुना—"इस बीमारी के साथ इन्हें तपेदिक़ का भी डर है। यदि फेफड़ों पर असर नहीं हुआ, तो अब होने वाला है। किसी प्रकार बदन में ताक़त आनी चाहिए।" मैंने इस बात पर कुछ ध्यान न दिया, और न उस बात से मुझे कोई आराम मिला। पलंग पर पड़ा वेदना को भुगत रहा था कि गाँव से एक आदमी मेरे समाचार लेने आया और कहा—"पंडितजी, बल्टीगढ़ के पास लोधों ने एक शेर मारा है।" शेर की बात सुनते ही कुछ ध्यान बटा और पीड़ा कम मालूम होने लगी। एक ओर को करवट लेकर कहा—"शेर! क्या कहते हो केसरी? क्या स्वप्न में शेर मारा है, या आज तुमने कोई नशा किया है?"

केसरी—(काली-सी सूरत बना कर)—"नहीं मालिक, मारा है। मोटर में लाद कर वे कलक्टर साहब के पास लाये हैं। मैंने ख़ुद देखा है।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मैं—"अरे चरख होगा। वहाँ पर शेर कहाँ? ३००, ४०० वर्ष पहले भले ही हों। यहाँ शेर आ ही नहीं सकता। तुम्हें समझावे कौन। यह तुम जानते ही नहीं कि शेर कहाँ पाया जाता है। तुमने देखा था तो बताओ रंग कैसा था ?"

केसरी—"मालिक ! गिलहरी पर जैसी धारें होती हैं, वैसी काली तो उस पर धारें थीं; और रंग पीला था—"

मैं—"और टाँगें ?"

केसरी—(हाथों से मुटाई बताते हुए)—"बड़ी-बड़ी टाँगें और बहुत भारी था।"

मैं—"तुमने ख़ुद देखा था ?"

केसरी—"हाँ मालिक, मेरे सामने मोटर पर गया था।"

मैं—"कुछ समझ में नहीं आता। तुमने देखा नहीं। आख़िर आया कहाँ से ? तेन्दुआ तो आ सकता है—जमुना के खादर से ! शेर क्या आसमान से टूटा ? हिमालय की तराई और ग्वालियर के जंगल से आ नहीं सकता। फिर कहाँ से आया।"

केसरी—"मालिक, मैंने शेर देखे हैं; कलकत्ता का चिड़ियाघर कई बार देखा है। लोधों ने जो जानवर मारा है, वह तो शेर ही है।"

प्रत्यक्ष के लिए क्या प्रमाण। पर फिर भी दिल गवाही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

न देता था कि शेर मारा होगा। अन्त में पड़े-पड़े पेचिश की पीड़ा को भूलते हुए, इस उधेड़-बुन में लगा कि अगर (अगर तो लगा ही रहा) शेर ही मारा है, तो वह कहाँ से आया होगा और फिर खेतों में ठस्सा बन्दूक़ चला कर लट्ठों और भालों से लोधों ने कैसे शेर मारा? लोधे कोई अफ़्रीका के मसाई लोग तो हैं नहीं, जो बरछों से, केवल दो आदमी मिलकर शेर-बबर[1] को मार डालते हैं। यों ताक़त, पांडित्य, राज्यशासन किसी की बपौती नहीं। पर वंश-परम्परा कोई चीज़ होती है, और साधारण चीज़ नहीं। रगों में बाप-दादों का ख़ून असर रखता है। खेतों में लोधों का मुक़ाबिला करना कठिन है। 'बनियाँ बंज, लोधरा खेती। और करै सो हौंड़ा होड़ी'! फिर अनुभवहीन लोधों ने अनायास ही शेर—और सो भी लाठियों से कैसे मारा? पड़ा-पड़ा ये बातें सोचता रहा और केसरी को बुला कर सब विस्तार से पूछा। और, पूछ कर दूसरी ओर करवट बदल ली।

***

नवम्बर का महीना था। सूखा पड़ने से किसान खेतों

---

[1] शेरबबर (Lion) से शेर (Tiger) अधिक बलवान और अधिक लड़ाका होता है।—लेखक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को सींच कर उन्हें रब्बी के लिए तैयार कर रहे थे। बहुत-से कर चुके थे। पर, कुछ लोग पीछे रह ही जाते हैं। खरीफ़ को टिड्डी चट कर गई थी इसलिए जो कुछ चारा बचा था, उसकी ख़ासी रखवाली करनी पड़ती थी। सिंचाई के लिए प्रातःकाल से सायंकाल तक बैल और आदमी लगे रहते थे, और तड़के ही खेतों में-से चारा लाकर और कूट कर तब कुआँ पर लोग जाते थे। ध्रुव की भाँति यह नियम गाँव में अटल है। प्रतिदिन की भाँति बल्टीगड़ गाँव का एक जवान आदमी अपने खेत में चारा काटने गया। पर, ज्योंही वह खेत में घुसना चाहता था कि दूसरी ओर मेंढ़ के किनारे, उसे कोई घोड़ा-सा जानवर बैठा दिखाई दिया। उसे देख कर युवा किसान बहुत चिढ़ा और ख़्याल किया कि घोड़ा खेत खाकर धूप में आनन्द से बैठा है। खेत में-से ३–४ पत्थर के टुकड़े उठाकर और गालियों की बौछार करता हुआ—जिसमें किसान बड़े प्रवीण होते हैं—वह उस कल्पित घोड़े की ओर गया और कुछ दूर जाकर एक पत्थर फेंक कर मारा और लगा देने गालियाँ; पत्थर उस जानवर को लगा नहीं, पर उसके पास जाकर गिरा।

जानवर उठा और गुर्राया। "अरे जि चरखा ऐ कै (अथवा) लिरिया (भेड़िया) ऐ!" कह कर किसान कुछ सहमा और फिर "जाती ना बितै" (उधर जाता नहीं) कह कर एक पत्थर तान कर मारा जो उस "चरखा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

या लिरिया" के लगा। फिर क्या था। विजली-सी चमकी। तीन क़ुलाचों में शेर आ गया।

***

किसान की लाश पड़ी थी। और उसके चारों ओर आदमी जमा थे। उसकी स्त्री का वैधव्य-रुदन हृदय में धक्के मार कर आँसुओं के फाटक खोले देता था।

लाश में तीन-चार गहरे छुरे के-से घाव थे और कमर टूट कर भुर्ता हो गई थी। एक आँख बाहर निकल आई थी। कौन-से जानवर ने इसे मारा है? किसी की समझ में न आता था। सूअर की चोट थी नहीं, क्योंकि बराह भगवान् से तो लोग अनभिज्ञ न थे। पर, शेर का उन्हें स्वप्न भी न था। पर, सत्य बात कभी-कभी गल्प से भी अधिक आश्चर्यपूर्ण होती है।

***

अगले रोज़ कुछ दिन चढ़े लोगों को मालूम हुआ कि एक दूसरे गाँव के पास जुआर के झुओं (जुआर की पुलियों का पुंज) के निकट शेर बैठा है। चारों ओर के गाँवों में हू-हल्ला मचा और आदमी शेर को देखने आने लगे।

संसार के बड़े-बड़े कार्य प्रायः हृदय कराता है। एक प्रकार से संसार भावनाओं का पुंज—समूह है। भावनाएँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही संसार को क़ायम रखे हुए हैं। मस्तिष्क से भी कार्य होते हैं। पर, वीरता, साहस, दूसरों के लिए बलि चढ़ जाना ये सब हृदय की हिलोर और हूक के बाह्य रूप हैं। संसार की कविता का स्रोत मन नहीं, हृदय है।

इसी प्रकार, अज्ञान भी मनुष्य से ऐसे काम करा बैठता है, कि जिन्हें कोई समझदार आदमी नहीं कर सकता। ज्ञान का उद्गम भी तो मस्तिष्क ही है। इसी लिए तो अज्ञानी, प्रेमी और कवि को शेक्सपियर ने एक ही कोटि में रखा है—

The lunatic, the lover and the poet,
Are of imagination all compact.

मुझसे कोई कहता कि शेर को जाकर मार दीजिये, तो मैं किसी पेड़ पर चढ़ कर फ़ायर करता। किसी गुप्त स्थान से शेर की नज़र बचा कर फ़ायर करता। क्यों? इसीलिए कि अब शिकार का अनुभव है। शेर की शक्ति का पता है। बालक अज्ञानवश साँप को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ा सकता है, पर, बड़ी उमरवाला नहीं। इसी लिए लोधे लोग शेर को यों ही मारने को तैयार हो गये। और वह शेर क्या कुत्ता था, जो योंही बैठा रहा! शेर डटा बैठा था। लोग उसके मारने की तैयारी कर रहे थे। आखिर एक ठस्सा बन्दूक़ आई और बन्दूक़ वाले के साथ उसकी सेना भालों तथा गड़ासों से सुसज्जित थी। शेर साहब बैठे थे—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'ज़मीं जुम्मद न जुम्मद गुलमुहम्मद।'

लोग शेर के ३० गज़ के लगभग पहुँच गये। बन्दूक़ वाला कभी दायें घुटने पर बैठता और कभी बायें पर। "हाँ, चलाबतूं। हुसियार हैजैओ भैया! ऐ तो लेउ।" धाँय। भाग्यहीन शेर इस नाटक को देखता ही रहा। समझता होगा कि यहाँ भी सरकस है। लोग उसे देखने आये हैं। पर गोली नाक में लगी। बिल्ली के भाग से छींका टूटा। लोहागढ़ी-ठस्सा-बन्दूक़ की गोली लगी पर उसने शेर की नाक ही तोड़ी। गहरी न गई, पर फिर भी थी तो गोली। शेर तड़प कर गर्जा और उछला, और उछल कर जुआर के झुओं में फँस गया। इतने में तो 'तू चल' और 'मैं चल' मच गई। "हाँ, निकलने न पावे। मार, औ धर्मजीता। मार—रे के। और बतसिया के भानजे मार...रे के, गड़सा ही गड़सा।" थोड़ी देर में शेर का सारा शरीर भालों के घावों से छलनी हो गया।

अब उस बन्दूक़ चलानेवाले का मिज़ाज सातवें आसमान से भी ऊपर था। उसने तो अपने आप को अर्जुन ही समझ लिया।

***

लट्ठों, भालों और गड़ासों से दुर्गति-प्राप्त शेर लौरी पर लाद कर कलक्टर साहब के पास ले जाया गया। भाग्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से कलक्टर मिले नहीं। गाँवों में शोर मच गया कि इनाम में बन्दूक़ और जागीर मिलेगी; मानो युद्ध में उन लोगों ने ब्रिटिश-राज्य को बचाया हो।

लौट कर आये, तब तक खाल सड़ने लगी। दुर्गन्ध से उसके पास तक न खड़ा हुआ जाता था। अन्त में कुल्हाड़ियों से उसका सिर काटा गया और एक पेड़ से लटका दिया गया। 'न दें कलक्टर साहब इनाम; पर नाहर तो हमने मार ही लिया' सन्तोष के लिए वह बन्दूक़ चलाने वाला लोगों से यह कह दिया करता था।

* * *

असल में बात यह थी कि किसी सरकस का शेर छूट गया होगा। सरकस से निकल भागने के पश्चात् बन्दी शेर, पहले मनमाना चला होगा। फिर किसी प्रकार पेट भरता हुआ वहाँ आ निकला। छोटेपन से कटहरे में बन्द रहने के कारण उसे बहुत चलने का अभ्यास न था, और न उसे आदमियों से झिझक थी। आदमियों की भीड़ देखने का अभ्यस्त था, इसलिए, जब आदमी एकत्र होने लगे, तब उसे कोई नवीन बात नहीं मालूम हुई। जंगली शेर और बाघ तो आदमी की आहट से दूर हो जाते हैं—आदमी की गन्ध के पास होकर नहीं निकलते। उन्हें तनक भी पता चले कि आदमी आ रहा है, तो हट कर दूर हो जावेंगे, या छिप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जावेंगे। चोट खाने या छेड़खानी करने पर तो हज़ारों में हमला करेंगे और इसी बात के तो शेर हैं। आदमखोर शेर, बाघ को छोड़ कर, बिना छेड़खानी के किसी आदमी के पास नहीं फटकेगा। यो हीं अकस्मात् मिलने पर, बच्चे वाली शेरनी या बाघिन को छोड़ कर, कोई शेर या बाघ आदमी से नहीं बोलेगा।

***

पर उन लोधों से कोई कहे कि वह शेर पालतू था, तो वे थोड़े ही माननेवाले हैं। और, क्यों मानें? फिर कभी शेर से उनका मुक़ाबिला थोड़ा ही होगा। उनसे यह कहना कि शेर या बाघ के शिकार में जान जोखम में होती है, मूर्खता है।

***

मुझे एक बात का दुःख है—वह यह कि शेर की मौत बड़ी अपमानजनक हुई। इसलिए नहीं कि वह बेचारे ग़रीब किसानों को न मार सका; वरन् इसलिए कि एक वीर के लिए इस प्रकार अपमानजनक मौत मरना शोभा नहीं देता!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शैतानी समूह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शैतानी समूह

पिल्ला बैठा यों ही खुजा रहा था कि पास से उड़नेवाली मक्खी पर उसने झपट्टा मारा। भाग्य से वह खाली गया। अच्छा ही हुआ, क्योंकि पिल्ले ने जिसे मक्खी समझा था, वह मक्खी न थी, वरन् राज-बर्रं थी—जिसके डंक के मारे आदमी का हाथ कई दिनों तक बेकार हो जाता है। पिल्ला बहुत ही बेचैन था और खेलने के लिए किसी चीज़ को चाहता था।

उसके समीप चारों ओर भिन्न-भिन्न उमर के अनेक कुत्ते जंगल की बेगरी छाया में सो रहे थे। मध्य भारत के जंगलों में, झाड़ियों और घने पत्तों के पेड़ों की कमी नहीं; किन्तु ग्रीष्म में पेड़ों की पत्तियाँ गिरने लगती हैं, सो, इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समय पत्तियाँ तपी पृथ्वी पर टपटप करके गिर रही थीं। पेड़ों की छाया कम होती देख वे कुत्ते सरक-सरक कर झाड़ियों के नीचे आ रहे थे। कुत्तों के कान खड़े थे। उनकी पूँछ काली थी, और बग़लें तथा पीठ लाल और पेट कुछ पीलापन लिए हुए।

चढ़ती जवानी के जोश को रोकना कठिन है। इसलिए डेढ़ महीने का पिल्ला, झुलसाने वाली सूर्य-किरणों में बैठा हुआ, खेलने के लिए किसी साथी की तलाश में था। पर उसका कोई भाई-बहन खेलने को राज़ी न हुआ। वह बैठा हुआ, जीवन की अकर्मण्यता पर कुछ सोच रहा था कि उसकी नज़र एक चलती परछाईं पर पड़ी। सूखी घास पर एक विचित्र जीव जा रहा था। वह आकार का भौंडा था। उसकी पीठ पर कुब्ब था। भूरी और काली धारियाँ उसकी बग़ल में थीं और रीढ़ की हड्डी पर खड़े हुए बाल थे। उसकी मुखाकृति भयंकर थी, और उसके आतंकपूर्ण दाँतों से उसके मुँह पर ग़ुर्राहट के चिन्ह चिर-अंकित थे। वह चरख (Hyena) था; भेड़िया के बराबर बड़ा था—शेर से अधिक दृढ़ जबड़ोंवाला, पर चूहे से भी अधिक कायर।

डरावनी चालढाल से उसने सोते कुत्तों की ओर देखा और चला गया। ज्योंही उसकी नज़र पिल्ले पर पड़ी, उसकी आँखों में क्रूर ज्योति आ गई। पिल्ला भी उठा। पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वह यह निश्चय नहीं कर पाया कि उसे उसपर गुर्राना चाहिए या उस अजनबी के पास जाकर खेलने की प्रार्थना करनी चाहिए। चरख भूका था और अनजान पिल्ला, जिसने मैत्री-संकेत से पूँछ हिलाई, उसके लिए स्वादिष्ट ग्रास होता। पर चरख ने उसके सोते हुए साथियों की ओर एक बार फिर देखा और अपने स्वभाव के विपरीत इस नतीजे पर आया कि सोते कुत्तों से छेड़खानी अच्छी नहीं। चरख नहीं चाहता था कि पिल्ले को छेड़ कर वह पूरे झुण्ड का शिकार बने।

चरख ने बुद्धिमत्ता की। उससे कहीं अधिक वीर जानवर जो एक चट्टान की छाया से पिल्ले को देख रहा था, उसी नतीजे पर पहुँचा था। वह बाघ—तेन्दुआ—था जो अति साहसी और वीर होता है, साथ ही कुत्ता खाने का शौकीन भी। पर बाघ अपनी शक्ति-सीमा समझता था, और वह कोई मूर्ख बाघ नहीं था। खुली लड़ाई में वे छोटे जानवर, जो झाड़ियों में पड़े सो रहे थे, और गीदड़ से छोटे ही होते हैं, बाघ के सामने १०–२० होने पर भी नहीं ठहर सकते थे। पर वह एक ही साथ ६–७ दर्जनों से नहीं लड़ना चाहता था। और बाघ को जो दिखाई पड़ रहे थे, वे तो जंगली कुत्तों के दल का एक भाग ही थे।

जंगली कुत्ते भारतीय जंगलों के सब से अधिक भयानक और सब से अधिक संहारक जीव होते हैं। यहाँ तक कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शेर भी उनसे भागता है, और यह उसका भाग्य ही समझना चाहिए, जो उनसे उसका पिण्ड छूटे।

यदि ये कुत्ते शेर को मारना चाहें तो निःसन्देह वे उसे मार ही डालेंगे। वे उसका पीछा करेंगे, बिना एक सैकिंड के रुके हुए और बड़ी क्रूरता के साथ, दिन में और रात में भी, तपी भूमि पर, झुलसानेवाली धूप में भी वे उसके पीछे लगे रहेंगे। वे उसको आराम नहीं लेने देंगे, सोने नहीं देंगे—यहाँ तक कि इतना भी अवकाश न देंगे कि वह किसी पास के सोते में एक बार जीभ भी मार ले। शैतान की भाँति वे उसके निकट, आगे, पीछे, बग़ल में और उसके चारों ओर रहेंगे—और ठीक इतनी दूर पर कि उसकी मार या पकड़ से बचे रह सकें। आख़िर शेर थक कर, प्यास से व्याकुल होकर, घबराकर डगमगाने लगता है, और कुत्तों को वह अवसर देता है, जिसके लिए वे प्रतीक्षा करते रहते हैं—अर्थात् जब वे उस पर झपट्टा मार सकें और वह झपट्टा तलवार के घाव से कड़ा घाव करता है, जिससे उसका पेट फट जाता है, और वह अपनी अतड़ियों में उलझता हुआ गिर पड़ता है।

अनमने पिल्ले को यह पता न था कि वंश-परम्परा से वह इतना भयंकर है। यद्यपि इस बात को चट्टान वाला बाघ जानता था। चरख जब उससे नहीं खेला तो वह फिर बैठ गया। पिल्ला करता ही क्या? अपने सभ्य भाई की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भाँति उसके पास साधन नहीं थे। चबाने के लिए बूट नहीं थे। अपने भाग्य की परीक्षा के लिए वहाँ पर सड़कें भी न थीं, जिनपर पड़ कर वह भोंपू बजवा लेता।

वह पिल्ला जंगली कुत्ते का पिल्ला था। भारतवर्ष में जंगली के मानी असभ्य हैं। पर, यह पिल्ला तो बड़ा ही सरल था। अन्त में वह उठा, और पास की झाड़ी में घुस कर अपने साथी पिल्ले के साथ खेलने का प्रयत्न करने लगा। पर वह पिल्ला गुर्राया। वह वास्तव में जंगली था, जो अकारण उस पिल्ले पर गुर्राया। जब कभी जंगली पिल्ला दंगली पिल्ले को देखता, तभी वह इस पर गुर्राता। जब से जंगली और दंगली ने आँखें खोलीं, तभी से जंगली दंगली से डाह रखता था। पर, दंगली बड़ा नेक था। जंगली झुण्ड के किसी भी पिल्ले से न खेलता था। दंगली को खेलने के लिए अपनी ओर आते देख जंगली ओठ सिकोड़ कर, दाँत निकाल कर, उसपर झपटा। दंगली स्वभाव का नेक था। पर कायर न था। दोनों में कुश्तम-कुश्ता हो गई। काटने, भँभोड़ने और लड़ने के शब्द से झाड़ियों की शान्ति भंग हो गई। झुण्ड के बड़े-बूढ़ों ने आँख खोल कर देखा। एक बड़ा कुत्ता उठा और उन दोनों को अलग-अलग कर दिया। जंगली को जब अलग किया गया तब भी वह गुर्राता रहा। पर, दंगली पूँछ हिलाता हुआ और पिल्लों के साथ खेलने चला गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सायंकाल को कुत्तों का समूह आगे बढ़ा। वे जंगल के पशुओं का इतना संहार करते हैं, कि जंगल के एक भाग में बहुत दिनों तक नहीं रह सकते। प्रायः रात में शिकार करते हैं, और जहाँ होकर निकलते हैं, वहाँ दावानल की भाँति स्वाहा करते जाते हैं। बचेखुचे जानवर भयभीत होकर, भाग जाते हैं। उस बच्चे वाली बेचारी चीतल या साँभर की कष्ट-कथा का कौन वर्णन कर सकता है, जिसका वे पीछा करें। घबराई हुई मा पहले तो बच्चे को अपनी बग़ल में करके उसकी रक्षा करती है, लात और सींग से कुत्तों पर प्रहार करती है। पर उसका यह सब प्रयत्न व्यर्थ जाता है। उसके पीछे से उसके बच्चे की मृत्यु-वेदना-सूचक चीख़ आती है, और वह समझती है कि कुत्तों के पैने दाँत उसकी बग़ल फाड़ रहे हैं। और, ज्योंही वह बच्चे की रक्षा के लिए मुड़ती है, त्योंही ख़ूँख़्वार कुत्ते उसको उसके अधमरे बच्चे के ऊपर गिरा देते हैं।

बड़े से बड़ा बारहसिंगा, जिसके सींग की मार से आदमी तुरन्त मर जावे, इन कुत्तों के लिए कोई चीज़ नहीं। वे उसको मार कर ही छोड़ते हैं। जंगल के असली शिकारी शेर और बाघ, जंगली कुत्तों से उतना ही डरते हैं, जितना कि निर्दोष भोले हिरन और अन्य जानवर। कुत्तों का दल जिस जंगल में होकर निकलता है, उसके सब जानवरों में भगदड़ मच जाती है। बचेखुचे हिरन और सूअर जङ्गलों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को छोड़ कर दूर भाग जाते हैं। तब शेर और बाघ भी भोजन के अभावं से उस जङ्गल को छोड़ देते हैं।

दंगली भी धीरे-धीरे बढ़ने लगा और शिकार में जाने लगा। उसकी चालढाल उसके भावी नेतृत्व की सूचक थी। और जब से उसने पहला वार चीतल के बच्चे पर किया था, तब से उसकी धाक जम गई थी। वह अति तीव्रगामी, अथक और निडर था। और जब सन्तुष्ट हो कर पेड़ों के नीचे लेटता था तब वह अति सीधा था। पर जङ्गली इससे बड़ी ईर्ष्या रखता था। यों तो एक दल के कुत्तों में प्रायः लड़ाई हुआ ही करती, और दङ्गली-दल में भी कभी-कभी कुत्ते आपस में इतने घायल हो जाते कि कोई मर भी जाता; पर, जङ्गली का बैर आदमियों का-सा था। दंगली जंगली से लड़ाई बचाया करता था, इसलिए नहीं कि वह कायर था वरन् इसलिए कि वह नेक था। पर, जब सहनशीलता की सीमा का उल्लंघन हो जाता, तब दंगली जङ्गली की उद्दण्डता के कारण उससे भिड़ पड़ता और उसको लोहूलुहान कर देता। जङ्गली लँगड़ाता, कराहता और घाव चाटता हुआ एक ओर को हट जाता और मन में बैर की अग्नि प्रज्वलित करता।

इसी प्रकार कुत्तों का यह दल शिकार करता हुआ घूमता फिरा। एकदिन यह दल तापती नदी के किनारे आया। इस स्थान पर, गर्मियों में तापती का पानी बहुत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गहरा रहता था। और स्थानों में नदी सूख जाया करती थी। कुत्तों को यह स्थान अति प्रिय था; क्योंकि वहाँ पर दूर-दूर के जानवर पानी पीने आते और कुत्तों को शिकार की सुविधा कर देते थे। प्रायः प्रातःकाल के शिकार के उपरान्त कुत्ते पानी पीने आया करते और अक्सर वहाँ पर पड़े पेड़ के-से तने जैसी कुछ चीज़ों को देखते।

बड़े-बूढ़े कुत्ते उन तनों के पास न जाते और दूसरों को भी न जाने का आदेश करते। पर, युवक हठी होते हैं। एक दिन एक हठी और खोजी ताज़ा जवान कुत्ता एक तने को सूंघने गया। उसके आश्चर्य की सीमा न रही। उस तने का एक सिरा एक बड़े कटे हुए मुंह के रूप में परिवर्त्तित हो गया और दो क्रूर आँखें और पीले दाँतों की क़तारें खुलीं। डरा हुआ कुत्ता ज्योंही बचने को पीछे हटा, त्योंही उसने एक चपेट मारी और कुत्ते को ऐसे पकड़ लिया, जैसे बगला मेंढ़की को पकड़ता है। 'तना' उसे लेकर पानी में कूद गया और आँख से ओझल हो गया। ये तने न थे, मगर थे।

बरसों बीत गये। दंगली और जंगली पूरी उमर के कुत्ते हो गये थे, और वे दल के अगुआ थे। जंगली उससे अब लड़ता न था, हाँ, उसकी ईर्ष्या कम न हुई थी। जब कभी किसी मादा के ऊपर, उनमें अनबन हो जाती तो जंगली को लेने के देने पड़ जाते।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रति वर्ष दल में कुछ न कुछ परिवर्त्तन होता रहता था। पुराने कुत्ते छूटते जाते थे। बुढ़ापे या बीमारी के कारण और विशेष कर भूक के कारण उनकी दुर्गति होती थी। दल आगे बढ़ जाता था और वे पीछे रह जाते थे। फिर वे घसिट कर झाड़ियों में घुस जाते और लम्बी घास में मरने के लिए छिप रहते, जिससे उनपर गृद्ध-दृष्टि न पड़ने पावे। पर यह सब प्रयत्न व्यर्थ रहता। आकाश में एक काला बिन्दु धीरे-धीरे बढ़ता और झप-झप करता नीचे उतरता। उसको नीचे आते देख चारों ओर से गिद्ध टूट पड़ते। तब ये यम-सहोदर, मरते हुए कुत्ते के पास जाते, और जब कुत्ते की टिमटिमाती हुई जीवन-ज्योति बुझने को होती और वह बेचारा ज़ोर लगाकर गुर्राता तो वे पीछे को फुदक आते। फिर जब कुत्ते का सिर नीचे गिर पड़ता, तब वे एक दम टूट पड़ते और कीकी खीखी शब्द करते हुए, लाश को ढँक लेते और लड़ते-झगड़ते, पंख फटफटाते हुए अपनी चोंचों से मांस नोच खाते।

अपने दल के बूढ़े और अपाहिजों का कुछ खयाल न करके वे जंगली कुत्ते आगे बढ़ते जाते। शेर और बाघ उनको तरह ही देते थे।

पर प्रत्येक नियम का अपवाद होता है। एक घनी घाटी में, जहाँ से एक नाला तापती की ओर जाता है, अपनी शक्ति के मद में चूर एक जवान शेर रहता था, जो अपने को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विशाल भुजदण्डों के बल पर, आसपास के जंगल का राजा समझता था। जंगल में इस शेर के समान और कोई तेजस्वी तथा बलवान न था। जंगली हाथी और गैंडा, जिसके लिए शेर को मार्ग छोड़ना पड़ता है, मध्यप्रान्त के जंगलों में नहीं हैं, इसलिए, यह शेर अपने आप को निरंकुश और सब कुछ समझता था।

यद्यपि जङ्गली कुत्तों का गश्त लम्बा-चौड़ा होता है, तो भी उस शेर को उनके देखने का अवसर न मिला था। एक दिन की बात है कि शेर ने एक हिरन को पानी पीते में धर दबोचा और अपना पेट भर कर तथा शेष अंश फिर के लिए वहाँ छोड़ कर, वह घनी छाया में सुख की नींद सो गया। थोड़ी देर बाद उसकी नींद विचित्र प्रकार की ध्वनि—हू-हू-हू-ही-ही-ही—से, जिसको उसने कभी नहीं सुना था, भंग हो गई, और आँख खोल कर जो देखा तो १०-१२ विचित्र प्रकार के छोटे गीदड़—उसने उन्हें गीदड़ ही समझा—उसके भोजन को खा रहे हैं। वायु लाश की ओर से शेर की ओर को चल रही थी, इसलिए कुत्तों को शेर का कुछ पता न चला। सन्देह दूर करने के लिए हरी पत्तियों में-से उसने सिर उठा कर अच्छी तरह देखा और दंग रह गया। शेर का भोजन गीदड़ खावें—और वह भी उससे छीन कर। इस अभियोग का दण्ड केवल एक था—मौत !

चुपचाप बिना आहट के मदमाता शेर उठा और ज़मीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर अपनी मखमली गद्दियाँ रखता हुआ, आगे बढ़ा और आड़ ही आड़ कुंत्तों से १० गज़ दूरी पर आ गया। पत्तियों के हरे पर्दे से उसने चोरों को देखा। बिना आवाज़ की गुर्राहट में उसने अपने ओठ पीछे सकोड़े—उसकी शक्ति का प्रदर्शन हुआ—उसकी मूँछें टेकुए-सी खड़ी हो गईं—और फिर एकदम वह जंगल का क़ानून तोड़नेवालों पर टूट पड़ा। दो तो एकदम ही कराह कर ठण्डे हो गये। दो को उसने दस-बीस गज़ दूर पटक कर चकनाचूर कर दिया। दो-एक घायल हुए और शेष १०–१२ विचित्र चीख़ से भागने लगे। शेर उनके पीछे भी पड़ा; पर एक दो छलाँग के बाद तवे-सी तचती धरती आ गई। वह रुक गया। क्योंकि शेर धूप पसन्द नहीं करता। बचे-खुचे कुत्ते नाले के ऊपर चढ़ गये। शेर गुर्राता हुआ अपने भोजन के पास लेट गया। लेटते ही मरे कुत्ते की गन्ध उसकी नाक में आई। पंजे से उसने उसे अपनी ओर खींचा और ज़रा चखा। बड़ा मज़ा आया। वह कुत्ते को खाने लगा। एक हड्डी उसके मुंह में लगी थी, कि नाले के चारों ओर से भाँय-भाँय और हू-हू की ध्वनि उसकी ओर आने लगी। उसको उन्हीं चोर-उचक्कों का भान हुआ, जो उसके भोजन पर आये थे। ज़रा रुक कर सुना तो मानो नाले पर किसी ने हल्ला बोल दिया हो। चारों ओर से चक्रव्यूह तंग-सा होता आता था। भाँय-भाँय हू-हू उसके पास ही आने लगी। जंगली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुत्ते भोंकते नहीं, यह तो उनके सभ्य भाइयों का ही गुण है। उनकी आवाज़ें भयउत्पादक थीं। पर, शेर जानता था कि उससे छेड़ख़ानी करने की किसकी मजाल। पर, कुत्ते उसके चारों ओर आ गये। यह उसकी शान के ख़िलाफ़ था, कि वह उन तुच्छ जन्तुओं को अपने ध्यान में भी लाता, पर उसका यह कम अपमान न था कि वे उसके चारों ओर खड़े थे! अन्त में शेर रक्त नेत्रों से मुँह फाड़े उठा। और आवेश में आ कर उन पर गुर्राया। कुत्ते आगे बढ़ने से तो रुके, पर, भयभीत हो कर भागे नहीं जैसी कि वह आशा करता था। प्रति-उत्तर में वे भी गर्दन के बाल फुलाये शेर पर गुर्राने लगे, और अपनी थूथड़ी आगे करके, दाँत निकाल, उस पर अपना रोष प्रकट कर रहे थे। शेर को बड़ा आश्चर्य था। उसके भाई-बिरादरी तो उससे ऐसा कर सकते थे; पर, ये तुच्छ प्राणी उसके मुक़ाबले का साहस करते हैं! वह आक्रमण-आसन पर बैठा। उसके सामने वाले कुत्ते कुछ पीछे हटे। इतने ही में बग़ल की झाड़ी से एक कुत्ते ने झपट्टा मारा और उसकी बग़ल पर वार किया। विद्युत गति से शेर मुड़ा और पीछे से किये गये वार से उसने रक्षा की, क्योंकि शेर के लिए सब से बड़ा अपमान पीछे से घाव कराना है। शेर बड़ी विकट दहाड़ के साथ अपने आक्रणकारी पर टूटा। पर शेर के अन्धाधुन्ध आक्रमण ने उसे एक काँटेदार झाड़ी से टकरा दिया, जिसमें हो कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसका शत्रु भाग गया। ज्यों ही वह काँटों से सुलझा त्योंही उसको अपनी पूँछ में पीड़ा मालूम हुई और ज्योंही वह पूँछ की ओर मुड़ा तो देखता क्या है कि एक कुत्ता उसकी पूँछ को छोड़ कर दूर भग गया है।

इस घोर अपमान से तो शेर आग-बबूला हो गया और प्रत्येक समूह पर अंधाधुन्ध टूटा। वह किसी को पकड़ पाता नहीं था और शीघ्र ही पीछे के हमले के बचाव के लिए उसे मुड़ना पड़ता था। अन्त में जब इस नट-नृत्य से उस की नाक में दम आ गया, तब वह नाले की खुली जगह में खड़ा हो गया और अपने शत्रुओं के निकट-आगमन की प्रतीक्षा करने लगा।

पर, कुत्ते मूर्ख नहीं थे। वे जानते थे, अभी अथक तथा विकट शत्रु से इस प्रकार पेश नहीं जावेगी। वे उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगे और कभी-कभी उसकी ओर को आते प्रतीत होते थे, ताकि शेर यह समझे कि वे आक्रमण कर रहे हैं। पागल बनाने वाली कुत्तों की ये हरकतें उसके लिए असह्य थीं। लज्जा और क्रोध से शेर नाले में चलने लगा। यह ख़याल करके कि उसकी हार हुई, और रणक्षेत्र उसे छोड़ना पड़ा, शेर को बड़ा क्रोध आ रहा था। पर ऐसे शत्रुओं से कैसे पार पाता। इसलिए वह अपना भोजन छोड़ कर मैदान से हटा।

पर, यह जानकर वह बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुत्ते भोंकते नहीं, यह तो उनके सभ्य भाइयों का ही गुण है। उनकी आवाज़ें भयउत्पादक थीं। पर, शेर जानता था कि उससे छेड़खानी करने की किसकी मजाल। पर, कुत्ते उसके चारों ओर आ गये। यह उसकी शान के ख़िलाफ़ था, कि वह उन तुच्छ जन्तुओं को अपने ध्यान में भी लाता, पर उसका यह कम अपमान न था कि वे उसके चारों ओर खड़े थे! अन्त में शेर रक्त नेत्रों से मुँह फाड़े उठा। और आवेश में आ कर उन पर ग़ुर्राया। कुत्ते आगे बढ़ने से तो रुके, पर, भयभीत हो कर भागे नहीं जैसी कि वह आशा करता था। प्रति-उत्तर में वे भी गर्दन के बाल फुलाये शेर पर ग़ुर्राने लगे, और अपनी थूथड़ी आगे करके, दाँत निकाल, उस पर अपना रोष प्रकट कर रहे थे। शेर को बड़ा आश्चर्य था। उसके भाई-बिरादरी तो उससे ऐसा कर सकते थे; पर, ये तुच्छ प्राणी उसके मुक़ाबले का साहस करते हैं! वह आक्रमण-आसन पर बैठा। उसके सामने वाले कुत्ते कुछ पीछे हटे। इतने ही में बग़ल की झाड़ी से एक कुत्ते ने झपट्टा मारा और उसकी बग़ल पर वार किया। विद्युत गति से शेर मुड़ा और पीछे से किये गये वार से उसने रक्षा की, क्योंकि शेर के लिए सब से बड़ा अपमान पीछे से घाव कराना है। शेर बड़ी विकट दहाड़ के साथ अपने आक्रणकारी पर टूटा। पर शेर के अन्धाधुन्ध आक्रमण ने उसे एक काँटेदार झाड़ी से टकरा दिया, जिसमें हो कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसका शत्रु भाग गया। ज्यों ही वह काँटों से सुलझा त्योंही उसको अपनी पूँछ में पीड़ा मालूम हुई और ज्योंही वह पूँछ की ओर मुड़ा तो देखता क्या है कि एक कुत्ता उसकी पूँछ को छोड़ कर दूर भग गया है।

इस घोर अपमान से तो शेर आग-बबूला हो गया और प्रत्येक समूह पर अंधाधुन्ध टूटा। वह किसी को पकड़ पाता नहीं था और शीघ्र ही पीछे के हमले के बचाव के लिए उसे मुड़ना पड़ता था। अन्त में जब इस नट-नृत्य से उस की नाक में दम आ गया, तब वह नाले की खुली जगह में खड़ा हो गया और अपने शत्रुओं के निकट-आगमन की प्रतीक्षा करने लगा।

पर, कुत्ते मूर्ख नहीं थे। वे जानते थे, अभी अथक तथा विकट शत्रु से इस प्रकार पेश नहीं जावेगी। वे उसके चारों ओर चक्कर लगाने लगे और कभी-कभी उसकी ओर को आते प्रतीत होते थे, ताकि शेर यह समझे कि वे आक्रमण कर रहे हैं। पागल बनाने वाली कुत्तों की ये हरकतें उसके लिए असह्य थीं। लज्जा और क्रोध से शेर नाले में चलने लगा। यह ख़याल करके कि उसकी हार हुई, और रणक्षेत्र उसे छोड़ना पड़ा, शेर को बड़ा क्रोध आ रहा था। पर ऐसे शत्रुओं से कैसे पार पाता। इसलिए वह अपना भोजन छोड़ कर मैदान से हटा।

पर, यह जानकर वह बड़ा आश्चर्यान्वित हुआ कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लुटेरे लूट के सामान से ही सन्तुष्ट न थे। उसने यह बात महसूस नहीं की कि, खून का बदला खून है, और लड़ाई की लूट से उन्हें सन्तोष न होगा। कुछ कच्ची उमर के कुत्ते लाश की ओर गये और उसे खाने लगे; पर शेष कुत्ते शेर के साथ थे। साथ क्या, कुछ उसके आगे-आगे भागते थे, कुछ बग़ल में दुलकी चाल से चलते थे, कुछ पीछे भी थे। वे बहुत समीप रहते थे; पर, उसकी पहुँच से दूर। कभी-कभी कुछ बहादुर कुत्ते उसकी बग़ल पर झपट्टा मारने का प्रयत्न करते थे।

एक कुत्ता उसके सिर के निकट आगे रहता और मुड़-मुड़ कर उसके पुट्ठे की ओर देखता था। यह कुत्ता, जो पहले कभी पिल्ला था, दंगली था। वह अब कुत्तों के इस दल का नायक था, और जंगली और दो एक उसी की प्रकृति जैसों को छोड़, सब ने उसका नेतृत्व स्वीकार किया था। इस समय जंगली भी था, पर पीछे। इस लड़ाई का सेहरा दंगली और उसके स्वामिभक्त साथियों पर ही था।

दङ्गली को इस समय केवल एक ध्यान था; केवल एक, जो जंगली कुत्तों में विशेष रूप से पाया जाता है—अपने साथियों के हत्यारे से बदला लेना। शेर को अपने पीछे के शत्रुओं पर ही क्रोध आ रहा था और मुड़-मुड़ कर वह उन्हीं पर ग़ुर्राता जाता था। उसको यह पता न था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि आगे वाले—आगे वालों में अति समीप वाले—कुत्ते के वार के मानी हैं, मौत।

अन्त में, क्रोध और झुंझलाहट से शेर रुका। वे भी रुक गये। वे अब नाले के खुले भाग में पहुँच गये थे। वहाँ पर झाड़ियाँ न थीं और नाले के किनारे ऊँचे समकोण थे। शेर गुर्राहट के साथ किनारे की ओर बढ़ा और पहाड़ से पीठ लगा कर बैठ गया। कुत्ते भी उसके चारों ओर अर्ध-चन्द्राकार पिछले पैरों पर बैठ गये। शेर ने अपने धूर्त्त शत्रुओं के खुले मुँह और लटकती हुई जीभें देखीं। क्या ऐसे तुच्छ, नाचीज़ प्राणी जंगल के राजा की कुछ हानि कर सकते थे? शेर को स्वयम् इस बात पर विश्वास न था। दम लेकर वह, उनको घृणा की दृष्टि से देखता हुआ, चला; पर, उसकी बग़ल की आकस्मिक पीड़ा ने उसे पीछे देखने को मोड़ा। देखा तो उसकी बग़ल के घाव से ख़ून बह रहा था, और एक तेज़ कुत्ता मुँह मार कर सट-से एक ओर निकल भागा है। पीड़ा और क्रोध से पागल हो कर वह आक्रमणकारी पर टूटा—पर हाथ कुछ न आया।

तब तो शेर के हृदय में पहली बार डर घुसा। ये हाथ न आने वाले शत्रु बड़े भयानक थे। तो भी, उसने सोचा, वह, यदि उन्हें मार नहीं सकता तो, उनसे पिण्ड तो छुड़ा सकता है। इसलिए, नाले में एक ओर खुला स्थान पा कर, वह ऊपर को छलांग मारकर चढ़ा और ऊपर मैदान में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आकर तीव्र गति से, सूखी घास और कटीली झाड़ियों के मैदान में हो कर, भागा। धूप बहुत तेज़ थी और मृगराज को महसूस भी बहुत हुई। पर क्या करता। समय ही ऐसा था।

लम्बी दौड़ प्रारम्भ हुई। तपे हुए मैदान में शेर ने पीछे को देखा। शत्रुओं से वह पिण्ड न छुड़ा सका और दंगली उसके आगे ही था। और कुत्ते इधर-उधर, बग़ल से पीछे और पीछे से बग़ल में, आते जाते थे; साथ ही जबतब शेर के मुँह मार जाते और ख़ून की धारें बरसा देते थे; पर, दंगली एक ही नेम और एक ही व्रत से अपनी ड्यूटी पर जमा था। वह अपनी और शेर के बीच की दूरी को उतनी ही बनाये हुए था। उसकी मार का समय अभी नहीं आया था। कभी धीमी गति और कभी-कभी सरपट चाल से मध्याह्न तक शेर चलता ही रहा। तब उसको लम्बे पेड़ों की टेढ़ी क़तार दिखाई पड़ी। वह उसी ओर को बढ़ा क्योंकि वह जानता था कि वहाँ नदी थी। कदाचित् वहाँ उसे शरण मिले। नदी के गहरे जल में उसके अथक शत्रु उसका पिण्ड छोड़ें। वह वहाँ पहुँचा और नदी में घुस पड़ा, पर कुत्ते उसके उतने ही समीप थे। पहले तो शेर कमर तक पानी में रुका और एकदम सिर पानी में डुबो दिया। फिर तीन-चार बार लप-लप की; और एक समतल चट्टान पर चढ़ कर बैठ गया। डूबते हुए सूरज की किरणें शक्ति-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वरूप शेर के पुट्ठों पर पड़ रही थीं और कुत्ते उसके चारों ओर चट्टान पर बैठे हुए थे। उनकी टकटकी उसी पर लगी हुई थी। शेर अब भयभीत हो गया था। पर, कुत्ते भी कूद और तैर कर नदी पार कर गये और जब शेर किनारे पर खड़ा हुआ था और जब उसके शरीर से बूंदें टपक रही थीं, कुत्ते भी उसके आगे, पीछे और बग़ल में खड़े थे।

तब शेर ने अपनी गति कुछ तेज़ कर दी। गोधूली तक दौड़ होती रही। शेर दो-चार बार रुका, पर उसके शत्रु उसके निकट ही आते गये और वह भी चलता ही गया। समतल भूमि में, ऊपर, नीचे और फिर ऊपर, और झाड़ियों में शिकार और शिकारी रात में दौड़ते ही रहे।

अन्त में चन्द्रमा निकला और उनका मार्ग प्रकाशमय हो गया। श्रम और नींद के अभाव से थक कर शेर एक चट्टान के नीचे रुका और उसने अपनी पूँछ एक ऊँचे पत्थर के सहारे रख ली, जिससे पीछे के आक्रमण से रक्षा हो। कुत्ते हाँपते हुए उसके आसपास पड़े थे। उस आसन पर जैसा और जो कुछ आराम उसे मिला उसने लिया। सोने का वह साहस कर नहीं सकता था क्योंकि ज़रा आँख झपकी तभी कोई न कोई कुत्ता उस पर हमला कर देता था। आख़िर उसे थोड़ा-सा बदला मिला, क्योंकि उसने दो कुत्तों को पकड़ लिया और एक चपेट में ही उनका भुर्ता बना कर फेंक दिया। वे अनुभवहीन नये कुत्ते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुत्ते तो बारी-बारी से सो सकते थे। पर, शेर सोने का साहस न कर सकता था। प्रातःकाल होते ही शेर फिर चला। कुत्ते उसके साथ थे। वह अन्धाधुन्ध भागा जाता था। नीचे ज़मीन की जलन और ऊपर सूरज की गरमी। शेर का बुरा हाल था। ठीक दोपहर के समय भागते-भागते वह हाल के जले जङ्गल की ओर हो लिया, जिसमें कई इंच गहरी राख थी और जो वायु-वेग से उड़-उड़ कर उसकी नाक और आँखों को भर रही थी।

बस अब अन्त आ गया था। शेर इन यातनाओं को अधिक न सह सका। खाँसते, खखारते और छींकते हुए वह रुका। काँपा। और फिर चलने का प्रयत्न करते ही लड़खड़ाया।

एक ख़ूँख़्वार जवान कुत्ता उसकी पिछली सीधी टांग पर टूटा और छूरे जैसे पैने दाँत नसों और जोड़ों में गाड़ दिये। एक दूसरे ने बाईं टांग के मांस और पुट्ठे में दाँत घुसा कर हड्डी पर हमला किया। दीर्घकाय पीला जानवर—शेर—मानो तांतों से जकड़ा हो।

और तब दंगली ने वार किया। उसका अवसर अब आया था। शेर के मुंह पर उछल कर, बुलडौग की भाँति, उसने शेर की नाक पकड़ ली और उसके सिर को नीचे गिरा कर उसे नितान्त असहाय कर दिया। तब कुत्ते उसकी टाँगों, गर्दन, पेट, नितम्ब, चलती हुई बग़लों आदि पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चारों ओर चिपट गये और एक ने नीचे घुस कर उसके पेट को फाड़ दिया।

शेर सिर के बल आगे को गिरा कि कुत्तों ने उसको ऐसे ढँक लिया जैसे गिद्ध किसी मरे जानवर को ढँक लेते हैं। घोर पीड़ा में शेर ने दंगली को हिला कर फेंकने का प्रयत्न किया। इधर से उधर छटपटाया। टाँगें पीटीं। पर, बहादुर दंगली इधर-उधर पटके जाने पर भी नाक से लगा रहा—अपनी पकड़ नहीं छोड़ी। शेर अन्तिम वेदना में पड़ा तड़प रहा था।

इतने में वे कुत्ते भी आ पहुँचे जो इस शिकार में फिसड्डी रहते थे। उनमें सब से आगे जंगली था। उसने शेर के सिर पर वार करना चाहा। पर, ज्योंही वह शेर पर टूटा त्योंही उसे दंगली की खुली गर्दन दिखाई पड़ी; क्योंकि दङ्गली के दाँत शेर की नाक से जकड़े हुए थे।

जङ्गली ने दङ्गली की गर्दन पर अपने दाँत गाड़ दिये; और उसका मुँह पुराने शत्रु के ख़ून से भरने लगा। मरता हुआ शेर एक वार और छटपटाया और दङ्गली को पंजे से हटाने के प्रयत्न से अन्तिम वार किया। पर, उसका पंजा जङ्गली पर पड़ा, जो दङ्गली की गर्दन से लटका हुआ था। थाप की मार से जङ्गली की कमर चकनाचूर हो गई और वह दङ्गली को कराहता हुआ छोड़ कर एक ओर जा पड़ा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब शेर की रग-रग में-से जान निकल गई, तब दङ्गली ने अपनी पकड़ छोड़ी और अपने घाव को चाटता हुआ वह चला गया। जङ्गली, दङ्गली को जाता हुआ देख कर, पड़ा-पड़ा ग़ुर्राया और समाप्त हो गया !

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यमदूत से साक्षात्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यमदूत से साक्षात्

राजनीतिक जीवन का तत्त्व है स्वातंत्र्य-युद्ध में मोरचा लेना। मनुष्यत्व का सार है दुःखी और पीड़ितों की निष्काम सेवा करना। और, वीरता तथा साहस की कसौटी है औसान रखते हुए आतंकमयी परिस्थिति का मुक़ाबिला करना। जो स्वतंत्रता की कोरी बातें करते हैं, और लड़ाई से दूर भागते हैं, जो अपनी सेवा की डींग हाँकते हैं, और मरने तथा विरोध करने से हिचकिचाते हैं, वे हैं कायर और ढोंगी—बेपेंदी के लोटे, जो तनक-सी विरोध-लहर, कठिनाई और दचोके से ग़ायब हो जाते हैं। चट्टान पर ख़ड़े पौधे की भाँति, जो बरसात के बाद सूर्य-ताप की थोड़ी-सी चोटों के कारण ही सूख कर निर्मूल हो जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सायंकाल को बाबू शरत्कुमार घोष अपने बँगले के बरामदे में बैठे हुए थे, जब उनका नौकर रामसिंह छुट्टी माँगने आया। रामसिंह की वृद्धा माँ क़रीब के गाँव में बीमार थी, इसलिए वह एक रात की छुट्टी चाहता था। उसने बड़ी दयनीय आकृति से कहा—"हुज़ूर! वैसे तो आप को अकेला छोड़ कर जाने को मेरी तबियत नहीं करती; पर, मेरी माँ का रोग असाध्य है। वह बचेगी नहीं, इसलिए मैं आज जाना चाहता हूँ।" रामसिंह की प्रार्थना इतनी युक्ति-युक्त थी कि घोष बाबू से इनकार करते न बना। किसी की माँ मरणासन्न हो, तो कौन भला आदमी अपने नौकर को छुट्टी न देगा, पर घोष बाबू को अपने नौकर को छुट्टी देने के कारण काफ़ी तकलीफ़ उठाने की सम्भावना थी। बात यह थी कि घोष बाबू का बँगला आबादी से दो-तीन मील दूर था, और उनके अन्य नौकर शाम होते ही अपने घरों को—कई मील दूर—चले जाते थे, और उस बँगले में घोष बाबू और उनका नौकर रामसिंह ही अकेले रात को रहते थे।

बँगला एक बड़े खेत के बीचोबीच था, और खेत के चारों ओर जंगल था, जिससे लोग भयभीत थे।

घोष बाबू गर्मी के कारण बँगले के किवाड़ खुले छोड़ कर सोया करते थे। पर अपनी माँ के पास जाने से पूर्व रामसिंह ने घोष बाबू से आग्रह किया था कि बँगले के किवाड़ रात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में खुले न छोड़े जायँ, क्योंकि जंगल में 'फ़ाऊ'-शब्द उसी दिन सुना गया था। 'फ़ाऊ'-शब्द से लोगों के हृदयों में कँपकँपी हो जाती थी।

'फ़ाऊ' एक छोटे जानवर को कहते हैं, जो बिल्ली के बराबर बड़ा होता है, और उसका नाम उसकी बोली 'फ़ाऊ' के कारण रख गया है। लोगों का विश्वास है कि 'फ़ाऊ' मनुष्य-भक्षी शेर या बघेरे के आगमन का सूचक है—एक प्रकार की लेन डोरी-सी। 'फ़ाऊ' शेर के साथ क्यों रहता है, सो तो कहना कठिन है; पर देहात के लोगों के लिए 'फ़ाऊ' एक दैवी सूचना है, जिससे लोग शेर के उत्पातों से कुछ सचेत हो जाते हैं।*

'फ़ाऊ' के विषय में कुछ संदिग्ध होने पर भी घोष

---

* 'फ़ाऊ या 'फ़ियाउली' गीदड़ को छोड़कर और कोई दूसरा जानवर नहीं है। व्रज के देहात में फ़ियाउली एक विचित्र जानवर को कहते हैं, जो किसी के मरने से पूर्व गाँवों में बोलता है—'फेकत्ति है' (देहाती बोली में)। शेर या बघेरे को देखकर डर से गीदड़ फाउ या हाव शब्द करता है, और उसे ही लोग फ़ाऊ या फ़ियाउली कहते हैं। साधारणतया गीदड़ हू-हू हुएँ-हुएँ करता है, पर डरकर वह फ़ाऊ या हाव शब्द करता है। इन पंक्तियों के लेखक ने इसकी ख़ासी जाँच की है।—लेखक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बाबू ने रामसिंह को आश्वासन दिलाया कि वह उनकी तनक भी चिंता न करे, क्योंकि उनकी बंदूक़ की गोली किसी भी शेर के स्वागत के लिए काफ़ी थी, और इसीलिए उन्होंने रामसिंह को आदेश दिया कि जाने से पूर्व वह उनकी बंदूक़ और कुछ गोली के कारतूसों को उनकी चारपाई के निकट-वाली अलमारी की दराज़ में रख दे।

घोष बाबू का सोने का कमरा कुछ छोटा-सा था। उसमें दो द्वार थे। एक तो बरामदे की ओर और दूसरा भोजन के कमरे की तरफ़। उनका पलँग बरामदेवाले दरवाज़े के सामने के कोने में था। पलँग का सिरहाना और उसका भीतरी भाग दोनों दीवारों से लगभग एक फ़ुट की दूरी पर थे। पलंग से सटी श्रृंगार-मेज़ थी, इसलिये पलँग के चारों ओर—उसके बाहरी भाग को छोड़कर—सुकड़-सुकड़ाकर ही जाया जा सकता था। पलंग की खुली ओर को—कोने की दीवारों से लगे पलंग की ओर के दूसरी ओर को—चार फ़ुट की दूरी पर घोष बाबू की दराज़ों-वाली अलमारी (Chest of drawers) रखी थी, जिसके सब से नीचेवाले खाने में रामसिंह ने बंदूक़ रख दी थी। अलमारी के बग़ल से लगा बरामदेवाला दरवाज़ा था।

पलँग काफ़ी भारी था। उसके पाये ६ इंच व्यास के होंगे, पाटियों तथा सेरौं की मुटाई भी इतने से कम न थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार पलँग सात वर्ग फ़ुट का रहा होगा; पर वह बहुत ऊँचा न था। हाँ, उसके नीचे कोई भी आदमी रेंग कर इधर-उधर जा सकता था। पायों से लगे डंडे थे, जिनके ऊपर कोनों से मसहरी के चारों कोने बंधे थे।

घोष बाबू बरामदे के किवाड़ बंद करके अपने पलँग पर जा लेटे, और लगे निद्रादेवी का आह्वान करने। पर अपनी सौत गर्मी के कारण वह न आई। रूठी रानी को घोष बाबू ने बहुत मनाया, मिन्नतें कीं, गिड़गिड़ाए भी और कई घंटे तक उसके विरह में तड़पे, करवटें बदलीं, पर सब बेकार। मोहक गंध पाकर भौंरे फूलों की स्तुति के लिये भागे चले आते हैं, और मंद समीर के झकोरों से निद्रादेवी थके-माँदों के आलिंगन को दौड़ी आती है, और आँखों पर जादू फेरकर लोगों को मंत्र-मुग्ध कर लेती है। पर घोष बाबू के कमरे में गर्मी का साम्राज्य था। निद्रादेवी कैसे आती? अंत में, परेशान होकर और किसी भय को आशंका न करके, उन्होंने बरामदे का दरवाज़ा खोल दिया, और पलँग पर लेट गए। शीतल वायु के झकोरों ने नींदरानी को गुदगुदाया। गर्मी कमरे से भागी, और घोष बाबू सुख-निद्रा के अधीन हो गए।

कितनी देर तक वह सोए, सो तो कहना कठिन है, पर घबराहट और किसी भयंकर दुर्घटना की आशंका की भावना से चौंककर जग गए। कमरे में कुछ दम घुटानेवाला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वातावरण था। हवा गरम और दुर्गंधमयी थी, मानो कोई दूसरा बड़ा जीव भी वहाँ हो। कुछ मिनटों के लिए घोष बाबू उनींदे-से, तंद्रावस्था में रहे, और उन्होंने अपने शरीर को ज़रा भी हिलाया-डुलाया नहीं। उनकी अधखुली आँखें ऊपर को थीं। उनकी इच्छा थी कि तनक उठकर या करवट लेकर देखें कि आख़िर कमरे में है क्या? पर दम घुटानेवाली हवा ने उनकी तंद्रा को भंग ही न होने दिया। उनकी अर्ध मूर्च्छित अवस्था अभी ज्यों की त्यों थी कि उन्हें ऐसा भान हुआ, मानो उन्होंने अपने पलँग के निकट एक गहरी और कर्ण-कटु साँस सुनी हो। आख़िर वह ध्वनि क्या थी? कम होने के बजाय वह प्रतिक्षण अधिक गम्भीर और कड़ी होती जाती थी। वह डरावनी ध्वनि इतनी कंपोत्पादक और मोहक थी कि करवट लेने तक का साहस न होता था। तनक-सी असावधानी, कुछ गड़बड़ और शोरोग़ुल से न-मालूम कौन-सी मुसीबत आ जाय, इसी विचार से घोष बाबू मृतप्राय पड़े रहे। उस रहस्य-पूर्ण और विचित्र साँस लेने की-सी आवाज़ से बचने का सरल उपाय यही था कि औसान ख़ता न होने पाएँ, और हिला-डुला न जाय। पर यह जानना भी आवश्यक था कि वह विचित्र आतंक-पूर्ण आवाज़ थी क्या। उसका एक ही ढंग था, और वह यह कि सिर धीरे-धीरे उधर फेरा जाय, जिधर से—पलँग के बाहर की ओर से—आवाज़ आ रही थी। धीरे-धीरे,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

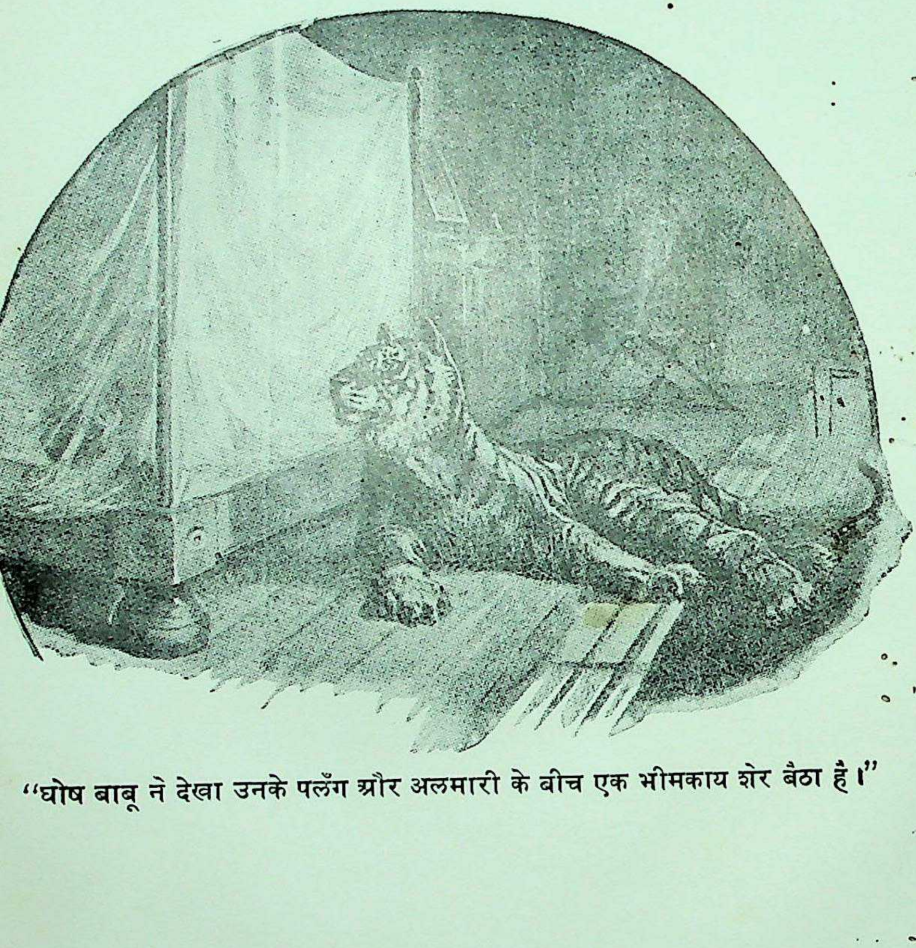

"घोष बाबू ने देखा उनके पलँग और अलमारी के बीच एक भीमकाय शेर बैठा है।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शरीर को बिना हिलाए, अस्पष्ट-सी गति और अधखुले नेत्रों से घोष बाबू ने अपना सिर घुमाया। आँखों की संपूर्ण ज्योति उस आवाज़ के मार्ग पर जा रही थी, जैसे कोई अंधा व्यक्ति परिचित मार्ग पर बिना किसी ग़लती के चला जाता हो। कई मिनटों में जैसे ही आधा सिर उस ओर घूमा, वैसे ही घोष बाबू की अधखुली आँखों पर बिजली-सी गिरी—

कफ़स के सामने बिजली कुछ इस तरह चमकी
नज़र में फिर गई तसवीर आशियाने की

घोष बाबू ने देखा, उनके पलँग और अलमारी के बीच एक भीमकाय शेर बैठा है। उसका सिर घोष बाबू की ओर था, कान खड़े हुए और आँखें—वे जादू-भरी आँखें—घोष बाबू पर केंद्रित थीं। चंद्रमा की धुँधली रोशनी में शेर की विकरालता और भी बढ़ गई थी। कुछ देर के लिये घोष बाबू संज्ञा-हीन हो गए। साक्षात् यमराज, शेर के रूप में, बिना किसी नोटिस के, समीप ही विराजमान थे। घोष बाबू को भान हुआ कि उनके जीवन की कुछ ही घड़ियाँ शेष हैं।

थोड़ी देर के लिये तो उनके शरीर में रक्त-संचार रुक-सा गया—लक़वा-सा मार गया उन्हें। दो मील तक उनकी आवाज़ को भी सुननेवाला कोई न था, इसलिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चीख़ना फ़ज़ूल था। और बंदूक़? बंदूक़ को उन्होंने कितना सँभालकर दराज़वाली अलमारी में रखा था, वक़्त ज़रूरत के लिए। पर यमदूत राम ने पहले से ही प्रवन्ध कर रखा था। अलमारी तक हाथ कैसे पहुँचता, उसके तथा पलँग के बीच ही तो शार्दूल डटा था। प्रबंध सब ठीक था। बस, अपने जबड़े की हथकड़ी में पकड़ने-भर की देर थी, या फिर एक ही चपत में घोष बाबू की अक़्ल दुरुस्त करनी थी। एक ही क्षण में घोष बाबू की सारी जीवन-चर्या उनके दिमाग़ में चक्कर काट गई। पर शेर ने उन्हें अब तक छोड़ क्यों रखा था? उसे तो उन्हें सोते में ही उठा लेना चाहिए था। इतनी देर क्यों हुई? यदि किसी प्रकार उसके आक्रमण करने का कारण मालूम हो जाता, तो शायद उसके उपयोग से घोष बाबू की जान बच सकती थी। घोष बाबू के पक्ष में एक विशेष बात यह थी कि यमराज के प्रथम दर्शन की प्रतिक्रिया के उपरांत उन्होंने हवास ठीक रक्खे। और, होश-हवास की ढाल पर ही वह शेर से भुगत सकते थे। पर निहत्थे आदमी के शेर से मुक़ाबिला करने के मानी हैं, भुनगे का हाथी से भिड़ना। क्या मसहरी देखकर शेर सशंकित हो गया था? शायद मसहरी के भीतर निस्तब्ध व्यक्ति को पड़ा देख कर शेर ने मसहरी-युक्त, पलँग को अपने फँसाव के लिये जाल समझा हो। आदमी का आकार बना कर जाल के भीतर कोई चीज़ रख दी हो,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और उस पर आक्रमण करते ही शेर किसी दाँव या मृत्यु-पाश में न फँस जाय, इसी डर से वह प्रतीक्षा कर रहा था। क्योंकि मसहरी के भीतर यदि कोई जीवित प्राणी होता, तो कुछ हिलता-डुलता ज़रूर। घोष बाबू ने भी समझ लिया कि उनके बचने का केवल एक ही उपाय है, और वह यह कि चुपचाप पड़ा रहा जाय, टस से मस न हुआ जाय, ताकि शेर को यह शंका बनी रहे कि उसके पकड़ने और मारने के लिए धोकाधड़ी की गई है।

घोष बाबू, इसीलिए गुमसुम, एक ही करवट, पड़े रहे। एक-एक क्षण पहाड़-सा प्रतीत होने लगा। साधारण स्थिति में, अपनी इच्छा से, एक आसन पर कोई घंटों पड़ा रहे, पर मन मसोस कर, मूर्तिवत् हो कर, और सो भी मौत के निकट अचल पड़ा रहना टेढ़ी खीर है। पर मौत का डर स्नायुओं और पुट्ठों तक को स्टील-सा बना देता है। मौत के डर से मरघिल्ले लोग भी विकट साहस दिखाते हैं। पर छींक, खाँसी और खुजलाहट भी वे बलाएँ हैं कि खुजलाने को उँगलियाँ बरबस चली जाती हैं, चाहे कोई कितनी ही भयावनी स्थिति क्यों न हो। खाँसी और छींक से भुगतना तो और भी कठिन है। गले में सरसराहट होती है। हाथ से गला दबाने और मुँह बंद करने पर भी भीतर से बारूद फिकती है, और खुल्ल तथा ठुल्ल हो ही जाती है। और, नाक को दबाते-दबाते छींक की टीं भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निकल पड़ती है। नाक को कहीं बुरी तरह पकड़ भी लो, तो छींक आँखों और खोपड़े से निकलने की कोशिश करती है। घोष बाबू पर भी खाँसी ने—गला साफ़ करने की प्रवृत्ति ने—हमला-सा कर दिया, और बहुत गला घोटने पर भी तनक ठुल्ल-सी ध्वनि निकल ही गई। उधर शेर की शंका-समाधि भंग हुई। वह फ़ौरन् खड़ा हो गया, और घूरकर उसने घोष बाबू की ओर देखा, तथा अपना सिर धीरे-धीरे उधर को बढ़ाया। अभी तक उसे कुछ शंका बनी रही; इसीलिए उसने एकदम आक्रमण नहीं किया। पर उसका भारी सिर मसहरी को दबाता हुआ आगे की ओर बढ़ा, मानो वह घोष बाबू के सिर का क़रीब से निरीक्षण करना चाहता हो। घोष बाबू ने शेर की भयंकर साँस महसूस की; पर टस से मस होने का उनका साहस न हुआ। इतने ही में मसहरी की रस्सी चट से टूट गई, और मसहरी झप से घोष बाबू के ऊपर आ गिरी। बिजूका हट गया। मोह-पाश कट गया, और शेर के लिए अब मैदान साफ़ था। पर जैसे ही मसहरी गिरी, शेर कुछ चौकन्ना हुआ, और उसी क्षण विद्युत्-गति से घोष बाबू मसहरी से सरक कर दीवार के सहारे फ़र्श पर जा बैठे। मसहरी गिरते ही, एक-दो सेकंड बाद ही, शेर कंपोत्पादक ग़ुर्राहट के साथ पलँग पर कूद पड़ा, यह समझ कर कि उसकी ख़ूराक वहीं पड़ी होगी। शेर को शकोशुभा तो रहा ही न था। अपना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

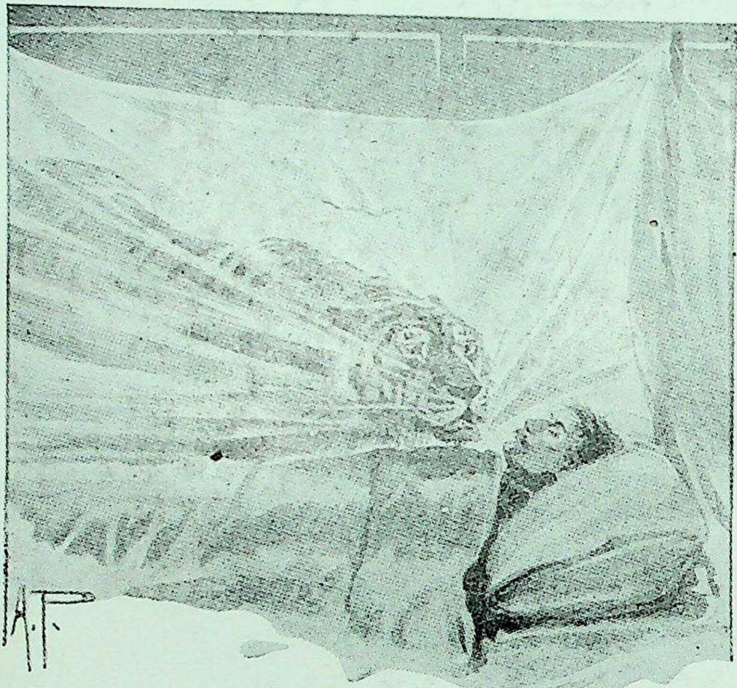

"घोष बाबू ने शेर की भयङ्कर साँस महसूस की।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

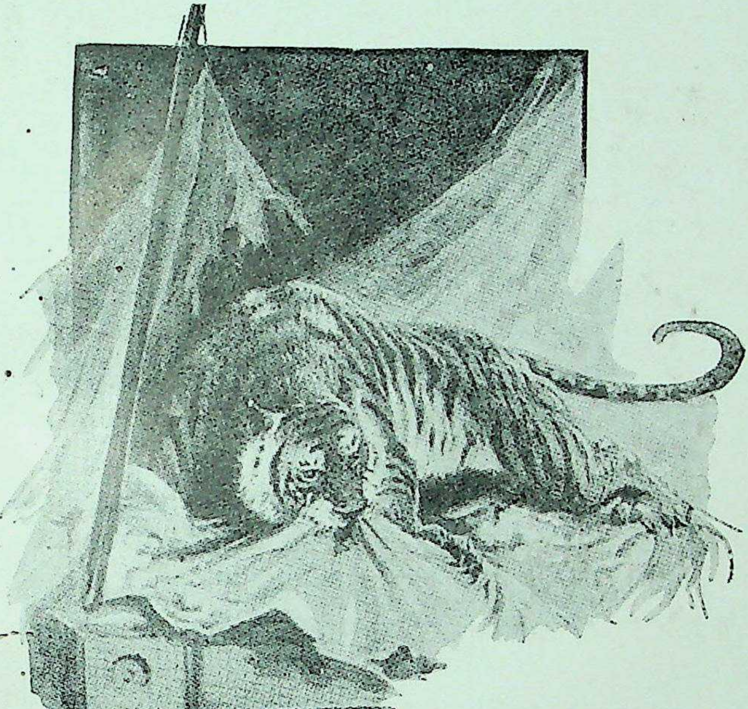

"शेर कम्पोत्पादक गुर्राहट के साथ पलँग पर कूद पड़ा।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिकार पलँग पर न पाकर उसने पलँग को चीरना-फाड़ना शुरू किया। पलँग पर वह फट ही तो पड़ा, मानो वही उसकी रखी-रखाई खूराक निगल गया हो। क्रोध की मूर्ति शेर ने कुछ देर तक पलँग को नोचा-खोंचा, और फिर अलमारी के क़रीब कूद पड़ा। उसकी पूँछ इधर-उधर तड़प रही थी, और क्रोध से भन्नाते हुए होटों को पीछे खींचे हुए वह अपने शिकार को इधर-उधर देख रहा था। ज़रा देर में ही उसने अपने शिकार को पलँग के नीचे, दीवार की ओर गठरी-सा बना, देखा, और एक भयानक दहाड़ के साथ उसने अपना सिर पलँग के नीचे घुसाया। पर पलँग की पाटी से वह टकराया। क्रोधोन्मत्त शेर ने सिर भीतर करने के लिये ठोकर मारी। सिर के एक धक्के और फिर दूसरे तथा तीसरे धक्के से पलँग तो बुरी तरह हिला, पर उसका सिर भीतर न जा सका। तब शेर ने और भी ज़ोर से आक्र-मण किया, भीतर घुसने को, और उसका सिर पलँग के नीचे आ ही गया। उसके माथे की खाल छिल गई थी, और खून तेज़ी से बह रहा था। पलँग की पाटी के किनारों से शेर के सिर में आघात पहुँचा था। उसने पलँग के नीचे घुसने के लिये फिर ज़ोर लगाया। पर संकीर्ण पलँग और अलमारी के बीच उसका भारी शरीर कमान-सा बन गया। भीतर घुसने के लिए, शरीर को उधर बढ़ाने के लिए, पीछे गुंजायश ही न थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शिकार और शिकारी आमने-सामने पड़े थे। घोष बाबू ने अपने शरीर को सिकोड़ कर दीवार से लगा रखा था, मानो उसे फोड़ कर उसमें घुसना चाहते हों। शेर की ख़ूनी और मशाल-सी जलती आँखों का सामना उनसे न होता था। शेर के कीले तो मानो बाबू साहब के शरीर को फाड़ ही रहे थे। शेर की आँखों, दाँतों और आकृति ने मोहिनी-सी फेर दी थी। उन्हें नशा-सा आने लगा। घोष बाबू चूहे की भाँति शेर के शिकंजे से बचने का उपाय कर रहे थे। कुछ मिनट तक दोनों उसी आसन पर डटे रहे। वे मिनट युग के समान बीते। रौरव नरक की यातनाएँ भोग रहे थे घोष बाबू। तेज़ और रुकी हुई ग़ुर्राहट शेर के भयानक जबड़ों से आ रही थी। वह ग़ुर्राहट केवल क्रोध की ही न थी, वरन् पीड़ा की भी थी। पीड़ा खुरसट और चोट की नहीं थी, वरन् पाटी का तेज़ किनारा उसकी गर्दन को भी काट रहा था। जब गर्दन की पीड़ा उसके क्रोध से भी बढ़ गई, तब शेर ने सोचा, लानत है इस प्रकार के शिकार से। सिर निकाल कर शिकार को किसी दूसरे ढंग से पकड़ना चाहिए, इसलिए उसने अपना सिर बाहर खींचने का प्रयत्न किया। सिर बाहर निकालने को उसने ज़ोर लगाया। घोष बाबू के सामने आशा की एक किरण-सी दिखाई पड़ी। शेर का सिर बाहर निकलता ही न था। वह फँस गया था। शेर ने निकलने के लिए क्रोध-पूर्ण ज़ोर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगाया। पलँग डगमगाने लगा। शेर के ज़ोर लग रहे थे ग़ाउ-ख़ाउ, पलँग कर रहा था खटर-खटर, और घोष बाबू का दिल धड़क रहा था धक-धक। डर इस बात का था कि शेर के कशमकश से कहीं पलँग न पलट जाय। पलँग पलटते ही घोष बाबू के भाग्य का तख़्ता भी निस्संदेह पलट जाता, इसलिए घोष बाबू ने अपनी ओर की पाटी ज़ोर से पकड़ ली, ताकि पलँग का बोझ कुछ और बढ़ जाय। शेर ज़ोर लगा रहा था निकलने को, और घोष बाबू पाटी नीचे खींच रहे थे। पर घोष बाबू का प्रयास कुछ नहीं के बराबर था। पलँग की धमा-चौकड़ी, ऊपर और नीचे की गति, झूले की-सी जारी थी। शेर का प्रत्येक झटका प्रबल होता जाता था। पलँग बहुत ज़ोरों से हिलने लगा, मानो घबरा कर वह कहीं भाग जाने का प्रयत्न कर रहा हो। सारे शरीर की ताक़त इकट्ठी कर और जान की बाज़ी लगाकर घोष बाबू एकदम पलँग पर आगए, ताकि वज़न ठीक हो जाय, और पलँग न पलटे। कुछ देर के लिए पलँग की तौल ठीक हो गई। पर प्रश्न यह था कि उस प्रकार की स्थिति कब तक चलेगी? किसी-न-किसी झटके में शेर अपना सिर निकाल सका, तो एक क्षण में ही घोष बाबू की चटनी बना देगा। यदि कहीं बंदूक़ हाथ लग जाती, तो शेर को जहन्नुम-रसीद कर दिया जाता। पर बंदूक़ तो दराज में बंद थी, और शेर के पिछले भाग ने दराज़ को

८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और भी कड़ा कर दिया था। उसका हाथ आना असंभव था।

शेर ने भी भाँप लिया था कि उसका शिकार आँखों से ओझल हो कर उसकी खोपड़ी पर—पलँग पर—सवार था, इसलिए, अपनी मुक्ति के लिए और भी ज़ोर के झटके लगा रहा था।

हथियार कोई था नहीं। हाँ, चौके में एक बड़ा शिकारी चाक़ू ज़रूर था; पर वहाँ तक जाना आसान न था। पलँग से उठते ही कहीं शेर न निकल पड़े। घोष बाबू की स्नायुओं की शक्ति भी क्षीण हो रही थी। उनके दम का भी दम निकल रहा था। ईश्वर का नाम लेकर घोष बाबू चुपचाप उठे, सिरहाने की ओर से दबे पाँव फुरती से गए, और चौके से बड़ा शिकारी चाक़ू ले आए।

दोनों हाथों से चाक़ू की मूँठ थाम कर वार करने की कोशिश की; पर हिचकिचाहट-सी हुई, कहीं ओछा वार हुआ, और चाक़ू का फल हृदय तक न पहुँचा, तो शेर और भी उत्तेजित हो जायगा, भन्ना कर, पलँग को उलट कर घोष बाबू का ख़ात्मा कर देगा। पर मरता क्या न करता, और साहसी व्यक्ति आती मौत से भिड़ता ही तो है। हाँ, एक बात साफ़ थी। घोष बाबू की ओर से एक ही वार हो सकता था।

शेर की अगली टाँगें झटका मारने के बाद जैसे ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

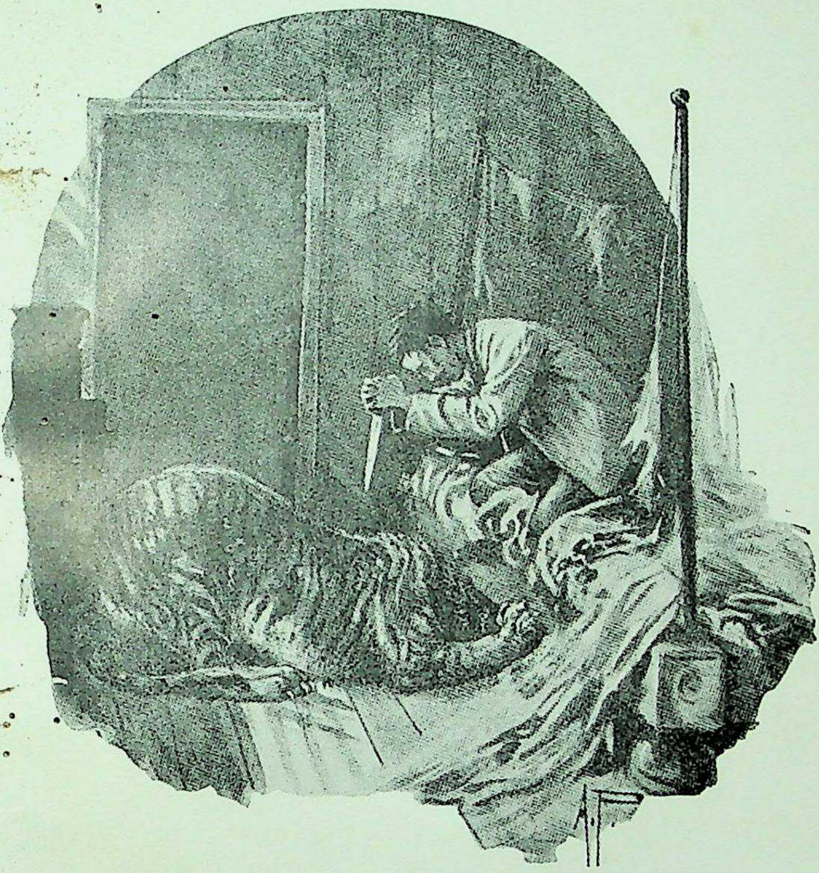

"दोनों हाथों से चाक़ू की मूँठ थाम कर वार करने की कोशिश की।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रुकीं, वैसे ही पीठ में, गर्दन से कुछ हट कर, चाक़ू का नौ इंची फल खचाक से घुस गया, और वह सीधा दिल में जा बैठा।

ज़मीन को हिलानेवाली गर्जना हुई, फिर एक तड़प और उसके साथ धड़ाम का शब्द और उसी के साथ बेहोशी का आलम छा गया!

अगले दिन प्रातःकाल रामसिंह ने उल्टे हुए पलँग के निकट ख़ून में लथपत शेर को मरा और घोष बाबू को, बड़ी तलाश के बाद, दीवार से सटे बिस्तरे में ढका अचेत पाया। बात यह हुई थी कि चाक़ू के भोंकने से शेर ने वह उछाल ली कि पलँग का सारा टाट-कमंडल उछल कर पलट गया, और घोष बाबू भी गेंद की भाँति पलँग की भीतरी ओर को गिरे, तथा दीवार से टकरा गए। ऊपर से बिस्तरे ने संपूर्ण दृश्य पर परदा-सा डाल दिया।

उस घटना के आतंक से घोष बाबू ने पंद्रह दिन तक खटिया गोड़ी, और जीवन तथा मृत्यु की तरंगों पर प्रवाहित होकर भले-चंगे हो गए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जंगल की दुलहिन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जंगल की दुलहिन

घरों और मार्गों से दूर, वन के बीच, खिले सौरभमय सुमनों का आनन्द थोड़े ही व्यक्ति लेते हैं। उँगलियों पर गिने जानेवाले प्रकृति-प्रेमियों की ही वहाँ तक पहुँच होती है। ऐसे लोग उस दिव्यसुरा-रूपी गन्ध का पान भले ही कर लें, नहीं तो वे कमनीय फूल महक कर यों ही मुरझा जाते हैं। हाँ, गन्धहीन, दिखावटी पुष्पों के सौन्दर्य पर कवियों की कोमल-सी कल्पनाएँ ज़रूर जौहर दिखाया करती हैं। जिस प्रकार एकान्तवासी पौदों पर खिले सुमनों की सुरभि का कोई मज़ा नहीं लेता, उनपर कोई विरला ही लिखता है, उसी प्रकार सीधे-सादे देहातियों के शौर्य, अद्भुत प्रेम और त्याग-सम्बन्धी बातों का लोगों को पता तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहीं चलता। उनकी बातें प्रकाशन के चौंध से परे होती हैं। जंगली फूलों की महक के समान उनके साहसपूर्ण कार्यों की प्रशंसा आसपास ही फैल कर लुप्त हो जाती है।

***

गया ज़िले में एक मनुष्यभक्षी बाघ के मारनेवाले को तीन सौ रुपये के पुरस्कार की घोषणा सरकार की ओर से की गई। बघेरा कुछ बच्चों को उठा ले गया था, और एक युवा पुरुष को भी उसने मार डाला था। वह इतना चालाक था कि बहुत प्रयत्न करने पर भी किसी के हाथ न आया। अन्त में मानभूमि ज़िले में चला गया, और एक छोटे ज़मींदार के इलाक़े में उसने अपना अड्डा जमाया। बूढ़े ज़मींदार के गाँव से बघेरा एक पाँच-छह वर्षीय बालक को उठा ले गया, और कुछ ही दिन बाद, पड़ोस के गाँव से, एक दुधमुँहे बच्चे को माँ की गोद से छीन ले गया।

बूढ़ा ज़मींदार स्वयं एक नामी शिकारी था; पर नामी शिकारी होना किसी ज़मींदार का कोई गुणविशेष नहीं है। ज़मींदार को किसानवत्सल होना चाहिए। किसानों को अपनी भुजा समझनी चाहिए, और जो कुछ वे ज़मींदार को देते हैं, उसका कुछ-न-कुछ भाग, किसी-न-किसी रूप में, किसानों को मिलना चाहिए। वह ज़मींदार भी ऐसा ही करता था—किसी नीति के ख़याल से नहीं, वरन् अपना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धर्म समझ कर। अपने इलाक़े के लोगों को अपने हाथ से मुफ़्त ओषधि बाँटता, और दूर के रोगियों को अपने यहाँ ठहरा कर भोजन तक देता। उनके सुख-दुख में हाथ बटाता, और जादू-टोना तक उसी के हाथ से होता। उसके इलाक़े के आदमी भी आधे जंगली थे। मानभूमि ज़िले में रहने वाले जंगली कहे जानेवाले लोगों में विवाह की प्रथा यह है कि कोई भी युवक किसी युवती से (अपने कुल के बाहर) अपने इच्छानुसार विवाह कर सकता है। हाँ, उस युवती के पिता की स्वीकृति अवश्य लेनी पड़ती है। ऐसे लोक-प्रिय ज़मींदार का, जो अपने इलाक़े के लोगों को सिद्धान्त और व्यवहार से अपने घर का ही आदमी समझे, कितना प्रभाव हो सकता है, इस बात की कल्पना सहज ही में की जा सकती है।

***

बघेरे का उत्पात बढ़ता ही गया। उसके मारने का पुरस्कार भी तीन सौ से बढ़ा कर छह सौ कर दिया गया। बूढ़े ज़मींदार ने भी—रुपयों के लालच से नहीं, वरन् आतंक-निवारण के लिए—उस बघेरे को मारने की ठानी। ऐसे अवसरों पर वह अपने सभी गाँवों से प्रसिद्ध शिकारियों को बुलाया करता और शिकार को जाने से पूर्व चाँदमारी (Target shooting) भी कराता था। बूढ़े ज़मींदार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के प्रति लोगों की इतनी श्रद्धा थी कि वे उसकी बात पर जान तक दे सकते थे। उसका शिकार उन बड़े आदमियों के शिकार के समान न था, जो अपने आमोद-प्रमोद के लिए भूखे-प्यासे किसानों को हाँके के लिए बेगार में बुला भेजते हैं। न आने पर उन्हें सताते हैं, और घंटों के हाँके के बाद उन्हें कुछ खाने तक को नहीं देते! बूढ़े का जीवन तो अपने लोगों के लिए ही था। ख़बर पा कर सब लोग तीर-कमान लेकर आ गये। उन आनेवाले नामी शिकारियों में एक हृष्ट-पुष्ट जद्दू नाम का युवक भी था। एक प्रकार से वह सब शिकारियों का अगुआ था। तीर-कमान के निशाने में वह अपना सानी न रखता था। इसके अतिरिक्त वह एक कलाविद शिकारी भी था।

चाँदमारी की तैयारी हुई। ज़मींदार ने विजेता के पीने के लिए आसव भी ला कर रख दिया। जद्दू अपने निशाने में इतना प्रवीण था कि पचास क़दम पर खड़ी रखी हुई दियासलाई के सिरे को अपने तीर से बेध देता था; पर उस दिन की चाँदमारी में जद्दू का एक भी निशान ठीक न पड़ा! जब-जब उसकी बारी आती, तभी तब उसका निशान ख़ाली जाता। उस दिन वह बड़ा ही व्यथित प्रतीत होता था। उसका ध्यान ही कहीं और था। लेने को तो वह निशान लेता था; पर उसका मन उसके साथ न था। उसकी आकृति मानो कहती थी—"इस चाँदमारी में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विजेता होने और बाघ मारने से तेरा क्या बनेगा? तेरे शौर्य का इतना भी तो आदर नहीं, जो तेरी मनः कामना पूरी हो सके। तुझसे तो वे ही अधिक भाग्यशाली हैं, जो न तो अच्छे निशानची हैं, और न बलशाली ही।"

बात यह थी कि जद्दू एक युवती से विवाह करना चाहता था। वह युवती उस इलाक़े की परम सुन्दरी थी; पर जद्दू के कुटुम्ब और उस युवती के कुटुम्ब में पुरानी दुश्मनी चली आ रही थी, इसलिए उसके माता-पिता जद्दू से विवाह करने में अपनी स्वीकृति न देते थे। जद्दू ने बीसों बार बूढ़े ज़मींदार से अनुनय-विनय की कि वह बीच में पड़ कर उसका विवाह करा दे। जद्दू और उस युवती—लूती—ने जो प्रेम-बेलि बोई थी, वह बढ़ती ही गई; पर उनका मिलन न हुआ। दिन बीतने के साथ-साथ ही विरह और निराशाजन्य प्रेम में गुरुता और उत्पीड़न की मात्रा बढ़ती जाती थी। उस दिन चाँदमारी के अवसर पर तो जद्दू का हृदय पुष्पधन्वा के तीरों से विंधा पड़ा था। प्रतीक्षा की सीमा का उल्लंघन हो चुका था। निराशा के अतिरिक्त और कुछ उसे दिखाई ही न पड़ता था। निशाना किससे लिया जाता? वह स्वयं ही निशाना बना हुआ था।

चाँदमारी हो चुकने पर जद्दू ने ज़मींदार से फिर प्रार्थना की कि वह उसके विवाह के मामले में लूती के पिता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से पुराने कौटुम्बिक वैर के भुलाने का आग्रह करे, और उसको तथा लूती को विवाह-सूत्र में बँधा दे। ज़मींदार ने जद्दू को वचन दिया कि यदि जद्दू, लोगों की रक्षा की ख़ातिर, उस बघेरे के मारने में सफल हो सकेगा, तो वह उसके मनोवांछित विवाह में सहायक होगा। जद्दू ने सब के सम्मुख शपथ खाई कि वह उस मनुष्यभक्षी बघेरे का अवश्य ही वध करेगा। ज़मींदार ने वह विशेष आसव जद्दू को ही पीने के लिए दिया। जद्दू ने अभिमान और हर्ष के साथ उसका पान किया, और प्रसन्नवदन वह अपने गाँव को चला गया। जद्दू निराशा-निशा में आया था; पर गया एक विजयी की भाँति, और सो भी आशा-प्रभा की ज्योति में। ज़मींदार की वचन-ज्योत्स्ना में उसकी प्रेयसी लूती, लता की भाँति, उसकी ओर लहलहा रही थी, मानो प्रेमी से मिलने के लिए उसने अपनी लावण्यमयी भुजाएँ बढ़ाई हों। जद्दू अपने घर की ओर जा रहा था; पर प्रसन्नता के कारण उसके पैर ज़मीन पर न पड़ते थे। तबीयत करती थी कि गाँव के कोने पर कहीं लूती मिल जाय, तो वह उसे अपनी चाल-ढाल से वता दे कि ज़मींदार के वचन से अब वह कौटुम्बिक वैर की उस खाई को पाट देगा, जो उसके और लूती के बीच मुँह फाड़े खड़ी है।

***

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अगले दिन मध्याह्न को कई आदमी जद्दू के गाँव से ज़मींदार के पास आये, और बड़ी उत्तेजना के साथ उन्होंने कहा—"कमल-जैसी सुन्दर लड़की—लूती—को, जिसके रूप-लावण्य पर जद्दू निछावर हो चुका था, आज प्रातःकाल बघेरा उठा ले गया। लूती अन्य लड़कियों की भाँति पनघट पर गगरी भरने गई थी कि एकदम बघेरा टूट पड़ा और उसे मुँह में दबा कर चम्पत हुआ। इतना बड़ा बघेरा हम लोगों ने अब तक कभी न देखा था। देखो, लूती की ओढ़नी का यह एक टुकड़ा है, जो झाड़ी में उलझ कर और फट कर वहीं रह गया था। लूती के माता-पिता इस घटना से इतने दुखी हैं और ऐसे हक्केबक्के हो गये हैं कि समझ में नहीं आता, उनको सान्त्वना कैसे दी जाय। जद्दू भी तभी से ग़ायब है। कमान और तर्कश ले कर वह बघेरे के पीछे गया है, और अपनी प्रेयसी की ख़ातिर बाघ से बदला लिये बिना उसे खाना-पीना हराम रहेगा।"

ज़मींदार ने वीरों का एक दल तैयार किया। उनके साथ उसने तीन दिन-रात जंगलों की खोज की; पर कुछ सफलता न मिली। बड़े आश्चर्य की बात तो यह थी कि कहीं भी घसीटन, जद्दोजहद और रक्त के चिह्न दिखाई नहीं दिये। यदि पनघट पर, जहाँ लूती पानी भरने गई थी, बड़े बघेरे के पंजों के खोज न होते—जो लूती के माता-पिता को उस दुर्घटना के प्रमाण के लिए यथेष्ट थे—तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सब का, विशेष कर ज़मींदार का, यह ख़याल होता कि शौर्य की प्रतिमा जद्दू ही लूती को हर ले गया।

***

एक पक्ष बीत गया। जद्दू का कोई समाचार न मिला। इस अवधि में बघेरे ने दो आक्रमण और किये। एक बच्चे को लेकर तो वह चम्पत ही हो गया, साथ ही एक स्त्री को भी घायल कर गया। इस उत्पात से तंग आकर लोगों ने एक सप्ताह तक बघेरे के पीछे लगे रहने की ठानी। नियत समय पर ज़मींदार अपने वीरों के साथ मुहिम पर निकला। ज़मींदार का दल जैसे ही कुछ दूर गया, वैसे ही उसे एक छोटी पहाड़ी पर एक गाड़ी चरचराती हुई अपनी ओर आती दिखाई दी। गाड़ी पत्तों और शाखाओं से ऊपर तक भरी हुई थी। ज़मींदार के वीरों ने निस्तब्ध होकर उस ओर देखा, और वे ख़ुशी के मारे 'अहा हा !' कह कर शोर करने लगे, क्योंकि उस गाड़ी का गाड़ीवान जद्दू था। दौड़ कर लोगों ने जद्दू को घेर लिया। बड़ी कठिनाई से, भीड़ को पार कर के , ज़मींदार जद्दू तक पहुँच सका। गाड़ी के भीतर एक बड़ा बघेरा मरा पड़ा था। सब ने खींच कर उसे बाहर निकाला। जद्दू ने ही उसे मारा था, क्योंकि जद्दू के निशाने के अतिप्रिय स्थान—हृदय—में टूटा हुआ तीर अब भी बिंधा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जद्दू को सरकारी इनाम मिला, क्योंकि उसने वही मनुष्यभक्षी बघेरा मारा था, जिसके लिए सरकार ने इनाम रखा था। पर लोगों को एक बड़ा आश्चर्य था, अपनी प्रेयसी के लिए—जिसकी प्राप्ति के लिए उसने सभी देवी-देवता मना डाले थे, ज़मींदार की अनुनय-विनय की थी, और जिसकी विरहाग्नि में उसने अपना कलेजा जलाया था—जद्दू शोकातुर और चिन्तामग्न प्रतीत न होता था। बघेरा उसने मार ही लिया था, और यदि लूती गाँव में होती, तो बूढ़े ज़मींदार की बात को उसके पिता टालते थोड़े ही। सब काम हो जाने पर लूती जद्दू को न मिलती, तो प्रेम के उस पुराने रोगी को चैन कैसे पड़ता? ऐसी अवस्था में विरही आँसुओं के जल से प्रेमस्मृति-बेल को सींचता है, सूख कर काँटा हो जाता है; पर जद्दू के रोम-रोम से विजय-मिश्रित आनन्द स्रवित हो रहा था। उसके आनन्द में क्या रहस्य था—कुछ समझ में न आता था। शायद प्रेम के शुद्ध रूप त्याग और भक्ति की भावना उसके हृदय में जाग्रत हो गई हो; पर उमड़ते हुए समुद्र की भाँति चढ़ती जवानी में प्रेम की वह पवित्र दिशा—त्याग—नहीं होती। युवावस्था की तरंगें तो आसक्ति की खाड़ी की ओर ही हुँकारती हुई आती हैं। तब जद्दू के हर्ष में क्या कोई रहस्य था? शायद।

***

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ समय पश्चात् चारों ओर ख़बर फैल गई कि जद्दू के गाँव के निकट जंगल में—उस स्थान पर, जहाँ लूती को बघेरे ने पकड़ा था—बड़ी रहस्यपूर्ण घटना घट रही है। जद्दू के मकान के निकट एक विशाल कटहल का पेड़ था, जो इस प्रकार छाये हुए था, मानो उसने धूप से रक्षा करने के लिए मकान को गोद में बैठा रखा हो। उसी वृक्ष से रात्रि के समय लूती का शब्द सुनाई पड़ता। वह अपने वीर प्रेमी का वहाँ से आह्वान करती। जद्दू भी उस शब्द को सुन कर अपनी प्यारी लूती की प्रेतात्मा के पास चला जाता। उनकी कानाफूँसी, दबी हुई लजीली हँसी और कदाचित् लूती की मधुर मुसकान की आभा भी आमों के बौर से सुरक्षित और चन्द्रिका की कोमल किरणों पर आरूढ़ होकर जंगल के प्राणियों को मुग्ध कर लेती, और गाँव के बाहर शीतल मंद सुगंध समीर के झकोरों में सोनेवाले स्त्री-पुरुषों से अठखेलियाँ करके उन्हें जगा देती। आश्चर्यचकित लोगों ने उस दिव्यप्रेतात्मा को देखा भी, और किस वेष में ?

रुपहले डोरों—किरणों—की सुहावनी साड़ी और स्फटिक-माला पहने हुए! नीरव निशा में जब समीर सुप्त प्राणियों को गुदगुदाता हुआ चारों ओर दौड़ता, तब उस छप्पर पर, जिसके नीचे लूती पार्थिव रूप में प्रकट हुई थी, सफ़ेद लत्ते से लिपटा एक तीर आकर लगता। वह लूती के माता-पिता के लिए बुलावा था। उस सिगनल के पाते ही लूती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के माता-पिता उस वृक्ष के निकट जाते। पिता तो नत-मस्तक, पर निस्तब्ध, पेड़ के पास खड़ा रहता; किन्तु उसकी माता के कोमल हृदय में बाढ़-सी आ जाती और वह सिसक कर कह उठती—"मेरी प्यारी बेटी लूती! तू देवताओं के साथ शान्ति से रह। बेटी लूती, हमारे दोषों को क्षमा कर।"

यह सुन कर जद्दू पेड़ से कूद पड़ता, और लूती के माता-पिता को गाँव लिवा जाता। गाँव की स्त्रियाँ, बच्चे और पुरुष—सभी इस बात को देखते। तदुपरान्त जद्दू उस पेड़ की ओर आता और लूती को पुकारता। गाँव वाले लूती की प्रेतात्मा को मानवी आकार में पेड़ से उतरते देखते, और उन दोनों को—जद्दू तथा उसकी प्रेतात्मा वधू को—हिरन और हिरनी के जोड़े के समान जंगल में जाते निहारते। फिर वे जंगल में छिटकी चाँदनी में विलीयमान हो जाते।

तीन मास तक प्रत्येक शुक्ल पक्ष में यह अभिनय-सा होता रहा। अन्त में लूती के दुखी माता-पिता ने अपने कृपालु ज़मींदार से प्रेतबाधा-निवारणार्थ याचना की। उसने उन्हें कष्ट-निवारण के लिए आसव पीने को दिया, और जद्दू तथा लूती की प्रेतात्मा का विवाह कर देने की सलाह दी। प्रेतात्मा से विवाह की तिथि निश्चित हो गई। बूढ़े ज़मींदार को तो विवाह में आना ही था। एक प्रकार से वह उभय पक्षों का पुरोहित था। ज़मींदार ने अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक प्रतिष्ठित अंगरेज़ मित्र को भी विवाह-संस्कार में आमन्त्रित किया।

जद्दू का गाँव दो पहाड़ियों के बीच एक गहरी घाटी में था। जंगल की करधनी पहने, लगभग बीस झोंपड़े ही उस गाँव में थे। अंगरेज़ के लिए आम के पेड़ के नीचे एक चारपाई बिछा दी गई। घाटी लोगों के नाच और ढोल के निनाद से गूँज रही थी। ज़मींदार, जो उन लोगों का वैद्य और ज्योतिषी भी था, अपने काम में लग गया। उसने शीघ्र ही एक आसव तैयार किया। मंत्रों के प्रयोग से एक विशेष पेय बनाया गया। उस पेय का प्रभाव यह बताया गया कि लूती का सूक्ष्म शरीर पार्थिव रूप में परिवर्तित हो जायगा।

वृत्ताकार घेरे में विवाह-मंडप बना था। बीच में कुल-देवता की प्रतिमा थी, उसी के समीप लकड़ी के दो मूढ़े थे। एक पर कमान और तर्कश लिये जद्दू बैठा था, और दूसरा मूढ़ा ख़ाली था; उस पर जंगली फूल चुन कर रख दिये गये थे। जद्दू की दाईं भुजा ख़ाली मूढ़े की ओर इस प्रकार फैली हुई थी, मानो वह किसी का आलिंगन कर रहा हो।

बूढ़े ज़मींदार—उस समय के पुरोहित—ने धीमे स्वर में कहा—"यह प्यारी लूती का सूक्ष्म शरीर है। जब हमारी स्त्रियाँ प्रेयसी कहीं जाती हैं, तब उनके सूक्ष्म शरीर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारे साथ ही तो रहते हैं। सूक्ष्म शरीर एक ही समय में दो स्थानों में रह सकता है। वे लोग, जिनका मस्तिष्क अधिक विकसित होता है, और जिनकी पहुँच अन्नमय कोष से परे होती है, किसी-न-किसी रूप में अपने अनुपस्थित प्रिय जनों की उपस्थिति के लिए प्रार्थना किया करते हैं। जिन में श्रद्धा और भक्ति असाधारण रूप में है, वे अपनी स्त्री अथवा प्रेयसी को साक्षात् रूप में देख सकते हैं, और उसका अनुभव पति अथवा प्रेमी ही कर सकता है। प्रेम एक विचित्र शक्ति है, जिसको न तो ये पहाड़ ही और न जंगली जन्तु ही नष्ट कर सकते हैं।"

चार युवक ताल-स्वर से, मंडप में प्रतिष्ठित प्रतिमा दूल्हा और सूक्ष्म शरीर में विद्यमान दुलहिन के चारों ओर नाचने लगे। गाने की समाप्ति पर दुलहिन के माता-पिता फूलों की मालाएँ लेकर उठे। उन्होंने एक माला तो जद्दू के गले में डाल दी, और दूसरी खाली मूढ़े पर रख दी। फिर उन्होंने हाथ जोड़ कर शुभ कामना की—"महादेव! महादेव! तुम इस पाणिग्रहण के साक्षी हो।" इन शब्दों के उच्चारण होते ही बीसों स्वरों से ये ही शब्द दोहराये गये।

पौ फटी, और दुलहिन के माता-पिता चले गये। मंडप के पास से दर्शकों की भीड़ भी कम होने लगी। उस संस्कार के एक विख्यात दर्शक—चन्द्रमा—की मदभरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आँखें कुछ मिचने-सी लगीं, और दिवाकर की रक्तवर्ण भृकुटी का आभास हुआ। जद्दू अभी तक अपने आसन पर डटा था। सूर्य के तनक सिर उठाने पर वह भी उठा, और प्रतिमा को साष्टांग प्रणाम कर उसने उस विशेष आसव का पान किया। खाली मूढ़े के निकट भी वह प्रणामस्वरूप झुका और अपनी प्यारी लूती के हारों को लेकर, उसके सूक्ष्म शरीर का आलिंगन करता हुआ चुपचाप जंगल में चला गया।

चार मास बाद उसी इलाक़े में एक और मनुष्यभक्षी बघेरा आया। अठारह मास के भीतर यह तीसरा बघेरा था। पहले दो मनुष्यभक्षी बघेरों को तो जद्दू मार चुका था। अगस्त का महीना था। मूसलधार मेह बरस रहा था। ऐसे समय में ज़मींदार अपने प्रतिष्ठित अंगरेज़ मित्र के पास पहुँचा, और मनुष्यभक्षी बघेरे के शिकार में साथ चलने को कहा। लगभग दस दिन से उस बघेरे की खबर मिली थी, तभी से जद्दू अनुपस्थित था, इसीलिए उसकी सहायता दुष्प्राप्य थी।

बघेरा असाधारणतया चालाक था। अपनी रक्षा के विचार से लोग पाँच-पाँच छह-छह की टोली में ही निकला करते। बघेरा धोखाधड़ी से उन पर आक्रमण किया करता। वह कभी खुले मैदान में न आता, वरन् किसी आड़ से एकदम ग़ुर्रा कर दहाड़ा करता, और इस प्रकार टोली को डरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर भगाया करता। ऐसी दशा में कोई-न-कोई भयभीत स्त्री अपनी ओढ़नी या सिरपर बाँधने का कपड़ा गिरा जाया करती। बघेरा उस कपड़े को उठा ले जाता और किसी झाड़ी के किनारे उसे छोड़ कर वहीं घात लगा कर बैठ जाता। ऐसा करने की उसकी बान पड़ गई थी, क्योंकि उसने न-जाने यह कैसे मालूम कर लिया था कि कपड़े की तलाश में जंगल-निवासी स्त्रियाँ अवश्य लौटेंगी। यद्यपि स्त्रियों को काफ़ी सचेत कर दिया गया था, फिर भी कोई न कोई स्त्री इस ख़याल से दो-चार घंटे बाद ज़रूर लौटती कि गिरे हुए कपड़े को उठा लाने में हर्ज ही क्या? उन्हें इस बात पर विश्वास ही न होता था कि बघेरे ने उन्हें पकड़ने के लिए वहीं जाल रच रखा है। बघेरा इस प्रकार स्त्रियों को मारा करता।

ज़मींदार के अंगरेज़ मित्र के बँगले से दस मील की दूरी पर दो नंगे पहाड़ों के बीच एक प्रसिद्ध घाटी थी, उसी में बघेरा देखा गया था। अंगरेज़ ने अपनी बारह नम्बर बन्दूक तो ज़मींदार को दे दी, और स्वयं एक बड़ी बोर की रायफ़ल ले कर वे दोनों उस ओर चले। उनके साथ तीन आदमी और थे, जिन्हें यह बात मालूम थी कि बघेरे ने एक स्त्री के कपड़े को ले जाकर कहाँ छिपाया है। उस घाटी के मार्ग से होकर स्त्री-पुरुषों की एक टोली जा रही थी, और बघेरे ने अपने वही हथकण्डे वहाँ भी दिखाये। अकस्मात्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गर्जन और गुर्राहट से घबरा कर लोग जो भागे, तो एक स्त्री की ओढ़नी गिर गई, और बघेरा उसे उठा ले गया।

ज़मींदार और अंगरेज़ घाटी में खोज कर के बाईं ओर को चढ़ गये। वहाँ से पानी का नाला नीचे दिखाई पड़ा। नाले के पथरीले धरातल से सटी हुई एक गुफा भी दिखाई पड़ी। गुफा के मुँह पर घनी बेलें छाई हुई थीं, और उन पर से बूँद-बूँद पानी टपक रहा था। भीगा और मिट्टी से सना एक कपड़ा भी दिखाई पड़ा। कपड़ा फैला कर ऐसी चालाकी से रखा था कि वह एक झटके में ही वहाँ से खींचा जा सकता था। उसका एक छोर तो एक छोटी झाड़ी के ऊपर था, जो पानी के नाले की ऊँची दीवार के किनारे थी, और दूसरा बड़ा छोर चट्टान की ढलवाँ दीवार पर फैला हुआ था। पथरीली ज़मीन होने के कारण बघेरे का खोज लेना फ़ज़ूल था; पर घाटी से नीचे नाले के मार्ग में पत्थर और कंकर गुफा से ऊपर को हटे हुए थे, और इस बात के प्रमाण थे कि बघेरा उसी गुफा में है।

ज़मींदार और अंगरेज़ पानी के नाले की बाईं ओर एक ऊँची चट्टान पर नाके की जगह पर बैठ गये। उनके चारों ओर आड़ भी थी। अपने साथ के तीन आदमियों को उन्होंने नीचे की घाटी के मुँह पर भेज दिया, जिससे बघेरा उधर से न निकलने पाये।

ज़मींदार और अंगरेज़ एक घंटे तक प्रतीक्षा करते

.CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहे। इस बीच बूँदाबाँदी की कोमल टप-टप ध्वनि होती रही; पर एकदम धीमी-सी 'उग़ा ३' की ध्वनि सुनाई पड़ी, मानो किसी ने लम्बी जम्हाई ली हो।' वही ध्वनि—पर अधिक स्पष्ट—फिर सुनाई पड़ी। कहाँ से? उसी गुफा से। सम्भवतः भयानक मनुष्यभक्षी मध्याह्न की निद्रा से जगा है, और अब निकलने ही वाला है—इस ख़याल से ज़मींदार तथा अंगरेज़ और भी चौकन्ने हो कर बैठ गये। किसी भी क्षण आतंकरूप वह बघेरा निकल सकता था, इसीलिए उनकी आँखें गुफा और कपड़े पर लगी हुई थीं; पर उनके विस्मय की सीमा न रही, जब उन्होंने झाड़ी के ऊपर कपड़े को हिलते देखा। उसके बाद झाड़ी की ऊपर वाली शाखाएँ सरसर कर हिलने लगीं, जिससे चट्टान की दीवार की ओर का कपड़ा भी फरफराने लगा। वायु में तनक भी गति न थी, इसीलिए झाड़ी का हिलना और कपड़े का फरफराना एक विस्मय के अतिरिक्त और क्या हो सकता था। थोड़ी देर उपरान्त झाड़ी के पीछे पत्थरों के टुकड़ों पर असावधानी से रखे पैरों की आहट भी सुनाई पड़ी। इससे यह स्पष्ट था कि वहाँ पर कोई चीज़ या कोई व्यक्ति छिपा अवश्य है। जो भी हो, पर यह बात निश्चित थी कि वह जीव वहाँ पर घाटी के नीचे से बड़ी सावधानी से आया था, क्योंकि उसका आना न तो दिखाई ही पड़ा था, और न उसके आने की आहट ही हुई थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस बात की बड़ी आशंका थी कि कहीं उस झाड़ी के निकट वह कपड़े वाली स्त्री चुपचाप अपना कपड़ा लेने न आई हो; पर बूढ़े ज़मींदार ने सिर हिला कर कहा—"प्रेम-पाश में फँसी स्त्री को छोड़ कर और कोई स्त्री इतना विकट साहस करके मनुष्यभक्षी बघेरे की उपेक्षा नहीं कर सकती।" उसी समय कपड़ा फिर हिला, मानो जान-बूझ कर बघेरे को लुभाया और तरसाया जा रहा हो। उस दृश्य को देख कर ज़मींदार और अंगरेज़ चित्रवत् रह गये, और बघेरे का तो उन्हें खयाल ही न रहा। उसी आश्चर्य-मुद्रा में एक स्वप्न-चित्र-सा उनके सामने खिंच गया। स्वप्नावस्था में जैसे कुत्ते की दुम बढ़ कर पचासों गज़ लम्बा साँप बन जाती है, आदमी के पंख लग जाते हैं, और वह उड़ना भी महसूस करता है, ठीक उसी प्रकार जाग्रत् अवस्था में झाड़ी के निकट दोनों शिकारियों को एक बहुत बड़ा बघेरा दिखाई दिया। थोड़ी देर बाद वह बघेरा निर्द्वन्द्व हो कर चपटी चट्टान पर बैठ गया, और उसकी पूँछ की इधर-से-उधर होने की ध्वनि स्पष्ट सुनाई पड़ने लगी।

चौड़े कन्धों को फैलाये, बड़े सिर को ऊपर उठाये, कनौती किये हुए अविचल दृष्टि से बघेरा झाड़ी को घूर रहा था, जहाँ कपड़ा टँगा था।

एकदम बघेरा तड़पा, मानो वह झाड़ी के दूसरी ओर वाली चीज़ पर आक्रमण कर रहा हो। झाड़ी के पीछे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

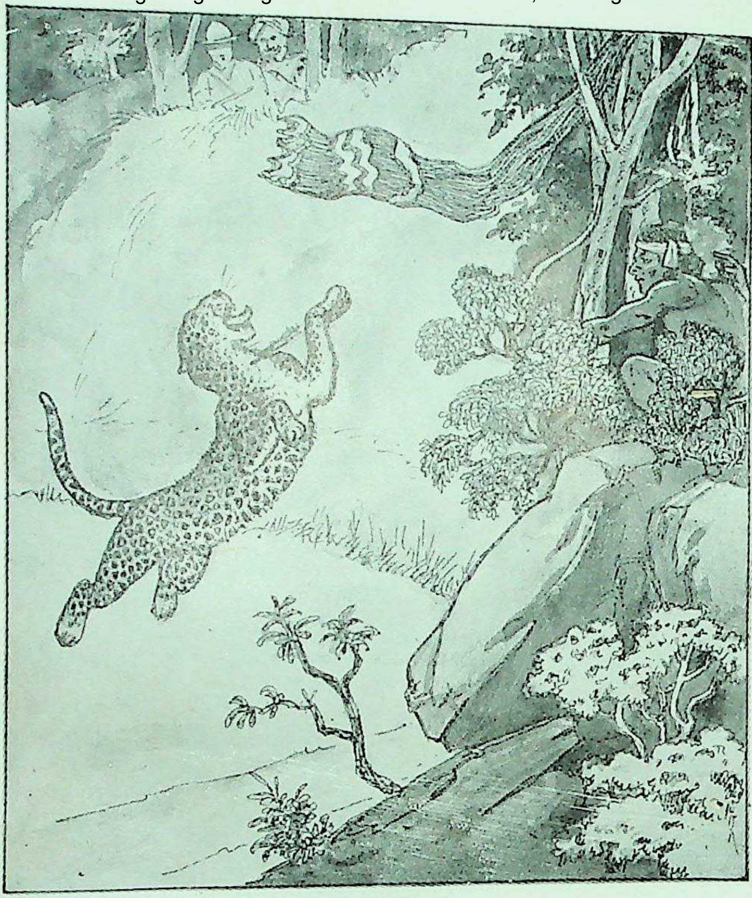

"दैत्य बघेरा पिछले पैरों पर पीछे को हुआ, और उसकी गर्दन में एक तीर बिंध गया।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किसी आदमी या स्त्री के होने की सम्भावना से गोली चलाना भयावह था; फिर भी अंगरेज़ महाशय ने अपनी रायफ़ल उठा ली, और उसी समय 'भिज़्ज़' की ध्वनि हुई। दैत्य बघेरा पिछले पैरों पर पीछे को हुआ, और उसकी गर्दन में एक तीर बिंध गया।

दहलाने वाली गर्जन हुई। इतने में 'भिज़्ज़' की दूसरी ध्वनि हुई, और एक दूसरा तीर बघेरे के कन्धे में प्रवेश कर गया। वह प्राणघातक निशाना था। क्रोधपूर्ण गर्जन हुई, और ज़मींदार तथा अंगरेज़ की ओर कुछ भगदड़ मची। एक तीसरा तीर भी उनकी ओर भन्नाता हुआ निकला, और वे ज़मीन पर लेट गये, ताकि बघेरा उनको न देख सके और उस ओर से आने वाले तीर से भी वे बच सकें। शीघ्र ही घाटी की दाईं ओर को, तीस-चालीस क़दम पर, किसी के गिरने का धमाका हुआ, और भयंकर बघेरे की मृत्यु-वेदना सुनाई पड़ने लगी। इतने में नाले के दूसरी ओर से बादल-कणों से आच्छादित तथा घटाटोप वायुमंडल को चीरती हुई आमोद-भरी आवाज़ गूँजी—"लूती ! प्यारी लूती !"

उस आवाज़ के साथ ही बाँसुरी की मीठी तान कानों में पड़ी। प्रत्युत्तर में एक बीस वर्षीया मृगनयनी युवती झाड़ी की आड़ से निकली। वह काले और लाल रंग के कपड़े से अपनी काया ढके हुए थी। उसके भौंरे-जैसे काले, लम्बे और चमकते हुए बाल बाईं ओर को पड़े थे। छोटे-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छोटे सफ़ेद जंगली फूलों से वह विभूषित थी। इस वेष में लूती की छबि अति कमनीय प्रतीत होती थी।

ज़मींदार पहले तो अवाक् रह गया; पर जब उसने लूती को बुलाया, तब वह उस ओर आई, और ज़मींदार के उसने पैर छुये। ज़मींदार को इस बात पर पूरा विश्वास हो गया कि लूती के सूक्ष्म शरीर ने मानवरूप धारण कर लिया है, क्योंकि जंगली कहलाने वाली जातियों को अपने देवताओं में अटल विश्वास होता है। ज़मींदार का ख़याल था कि शिवजी उस विवाह-संस्कार के साक्षी थे, अतएव उन्हीं की कृपा से लूती को पुनः पार्थिव शरीर प्राप्त हो गया।

जब तक जद्दू हँसता और बाँसुरी बजाता हुआ आया, तब तक सब लोग मरे हुए बघेरे के पास पहुँच गये थे। ज़मींदार ने अब लूती और जद्दू को आदेश दिया—"जाओ, अपने माता-पिता को प्रणाम करो, और अपने आदमियों के साथ आज रात को नाचो-गाओ।"

***

अंगरेज़ को लूती के पार्थिव शरीर में लौट आने की बात पर तो विश्वास न हुआ; पर उसके अदम्य साहस पर—झाड़ी के पीछे से मनुष्यभक्षी बघेरे को ललचाने पर—वह स्तम्भित था। जद्दू, ज़मींदार और अंगरेज़ के आने से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

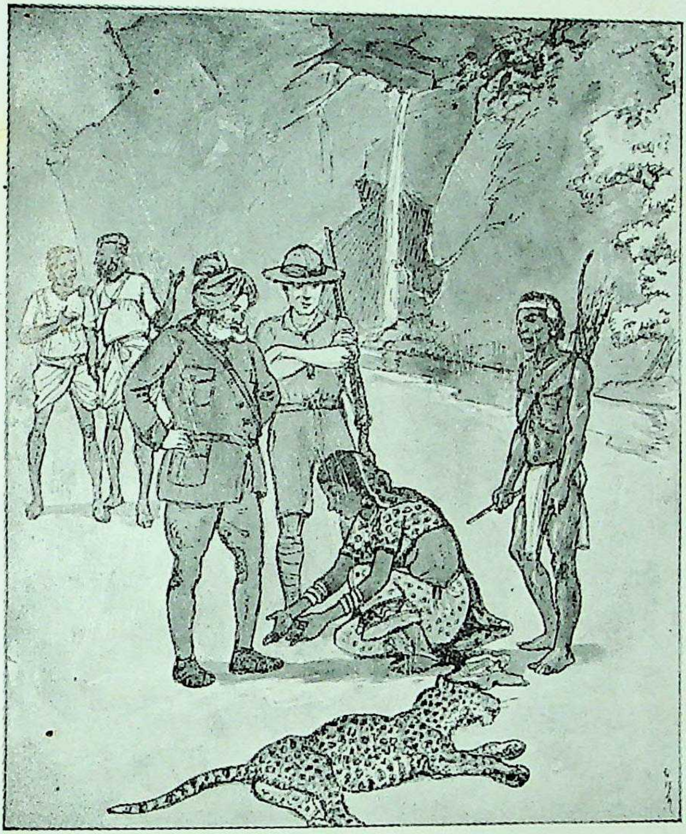

"जमींदार पहले तो अवाक् रह गया; पर जब उसने लूती को बुलाया, तब वह उस ओर आई, और जमींदार के उसने पैर छुए।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक घंटा बाद आया था, और इस सावधानी से आया था कि ज़मींदार के खड़े किये हुए तीन सन्तरियों की उस पर नज़र तक नहीं पड़ी। लूती—जंगली जाति वालों के शब्दों में लूती की प्रेतात्मा—भी उसी समय आई होगी, यह ख़याल करके कि कहीं अँधेरा न हो जाय, उसने कपड़ा हिला कर बघेरे को चकमा दिया था।

जद्दू ने यह बात स्वीकार की कि वह दस दिन से ग़ैरहाज़िर था, और उसी दिन प्रातःकाल आया था। उसको यह बात मालूम हो गई थी कि आतंकरूप बघेरा उस घाटी में देखा गया है।

लौटती बार अंगरेज़ ने अपने ज़मींदार मित्र से लड़की की वीरता—झाड़ी के क़रीब सरक कर जाने और झाड़ी के पास छिपने, उस झाड़ी के पास, जो मनुष्यभक्षी बघेरे की गुफा के पास थी—की चर्चा की। Romance का इससे अधिक ज्वलन्त उदाहरण और क्या होगा? ज़मींदार ने गम्भीरता से उत्तर दिया—"सूक्ष्म शरीर भयरहित होता है, और यह भी मान लिया जाय कि स्वयं लूती मानवी रूप में वहाँ आ कर छिप गई थी, तो भी उसके लिए कोई भय की बात न थी, क्योंकि उसको अपने पति के अचूक निशाने में पूर्ण विश्वास था। स्त्रियाँ जब किसी से प्रेम करती हैं, तब उसे अपना दिल दे बैठती हैं, और ऐसा ही व्यवहार करती हैं।" अन्तिम वाक्य कहने में बूढ़े ज़मींदार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के ओठों पर मुस्कान आ गई। उससे अंगरेज़ को सहमत होना पड़ा, और आश्चर्य में डूबा वह अपने बँगले पर चला गया।

***

एक क्लब में बैठे कई अंगरेज़ जंगली जातियों के विषय में बातचीत कर रहे थे। उनमें ज़मींदार का मित्र भी था। उससे एक व्यक्ति ने आसाम से कुलियों की भर्ती के लिए आये हुए एक अंगरेज़ प्लान्टर का परिचय कराया। बातचीत के दौरान में प्लान्टर ने कहा—"आठ-नौ महीने हुए, जद्दू नाम का एक आदमी मेरे बग़ीचे पर आया था। वह आप के ही ज़िले का था। वह अपने साथ में एक रूपवती युवती को भी लाया था। युवती को बघेरे ने कंधे पर घायल किया था। वह आदमी बड़ा ही सुदृढ़ और अचूक निशानची था। उस युवती को वह हमारे यहाँ छोड़ गया था। अस्पताल में उसका इलाज हुआ, और वह अच्छी हो गई।"

प्लान्टर और ज़मींदार के मित्र अंगरेज़ ने तारीखें मिलाईं, तो जद्दू अन्तिम बार अगस्त में आसाम के बग़ीचे में गया था, और लूती को लिवा लाया था।

***

. CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूक्ष्म शरीर के पार्थिव शरीर में परिवर्त्तित होने में और उस विवाह-संस्कार और अपने ज़मींदार के चमत्कार-पूर्ण आसव में, जद्दू का उतना ही दृढ़ विश्वास था, जितना अन्य लोगों का। यदि विश्वास—अन्ध-विश्वास—की भित्ति पर उसकी सादगी और प्रीति आधारित न होती, तो साहस उसका साथ कभी न देता। यह ठीक है कि जद्दू ने लूती की प्राप्ति में अपनी सम्पूर्ण शक्तियाँ लगा दी थीं, और लूती को घायल करने वाले बघेरे को मारने के पश्चात् कौटुम्बिक वैर के कारण उसके हृदय में यह आशंका बनी रही थी, कि कहीं ज़मींदार का वचन भी ख़ाली न जाय, इसीलिए उसने प्रणय का नवीन मार्ग निकाला। आख़िर प्रेम के पन्थ निराले ही होते हैं। जद्दू और लूती उसमें फलीभूत हुए, इसमें आश्चर्य ही क्या? वे तो बधाई के पात्र हैं, और उनकी लीला काव्यमयी है। हाँ, यह भेद अब तक नहीं खुला कि जद्दू ने उस बघेरे को, जो लूती को उठा ले गया, दस दिन बाद कैसे मारा। संसार की अनेक बातें रहस्यमयी हैं। जद्दू की वह घटना भी किसी को न मालूम हुई तो क्या?

***

लूती की आसाम जाने और आने की बात जद्दू के भाई-बन्धों को नहीं मालूम हुई, और न उस अंगरेज़ ने ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किसी से कही। उनकी विश्वास-सरिता समय के धरातल पर अब भी अविरत गति से वह रही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जंगल का डाकू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जंगल का डाकू

जीवन प्रगतिशील होना चाहिए और प्रगतिशीलता के अर्थ होने चाहिएँ आध्यात्मिक और मानसिक क्षितिज को बैढ़ाते रहना; पर, अधिकांश लोगों के साथ, अमली जीवन में, हो यह जाता है कि, जीवन की कुछ समस्याओं को समझने में तो वे उदारता दिखाते हैं, और किन्हीं गुत्थियों के विषय में वे कट्टरपन्थी हो जाते हैं। भौतिक विज्ञान पर समाज की नींव रखने वाले आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों को प्रतिक्रियावादी कहते हैं, और स्वयम् किसी सत्य को न समझने की उनकी प्रवृत्ति कठमुल्लेपन में आती है। असंप्रज्ञात समाधि उनके लिए ठीक वैसे है, जैसे नासमझ सवर्ण हिंदुओं के लिये हरिजनों का मन्दिर-प्रवेश।

और कठमुल्लापन—आप उसे कट्टरता, रूढ़िवाद,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतिक्रियावाद कह सकते हैं——मन की वह अवस्था है, जब मनुष्य यह समझने लगता है, कि संसार की तीन-चौथाई अक़्ल उसमें है, और शेष एक चौथाई संसार में बटी है। इसी कारण अपनी संकीर्णता में, बुद्धि के सीमित होने के कारण, हम लोग निष्पक्ष भाव से कभी-कभी साधारण बातों तक को न मानने, अथवा न समझने की ज़िद करते हैं। उदाहरण के लिए जंगली जानवरों के स्वभाव की बात लीजिये। शहरों और गाँवों के कोनों पर, गलियों के मोड़ों पर कुत्ते क्यों पेशाब करते हैं? क्या यों ही? नहीं। यदि किसी से कहो कि कुत्तों की इस प्रकार की आदत में उनकी Sex-प्रेरणा निहित है, तो वह उस पर सहसा विश्वास नहीं करता। किसी से यदि यह कहा जाय कि शेर और बघेरे अपनी शिकार-प्राप्ति के लिए अन्य जानवरों की बोलियों की नक़ल तक कर बैठते हैं, कभी-कभी तो बहुत-से कठमुल्ले इसे चंडूखाने की गप कहेंगे। उनके लिए रामराज्य अथवा साम्राज्य की स्थापना सम्भव है, पर शेर और बघेरे का दूसरे जानवरों की बोलियों की नक़ल करना असम्भव है।

असल में बात यह है कि मनुष्य की बुद्धि बहुत सीमित है, और अपनी बुद्धि के परे की बात को वह अनहोनी कह देता है।

***

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मई के महीने में, हिमालय की तराई के जंगलों में, एक नदी के किनारे दो अंग्रेज़—नौलेज़ और रौकबी—खेमे लगाये पड़े थे। रात थी चाँदनी और चन्द्रिका की श्वेत चादर पेड़ों पर पड़ी थी। दूर के पहाड़ सुषुप्तावस्था में, कुछ ऊँघते-से दिखाई पड़ते थे। कभी-कभी समीर जो अठखेलियाँ करने, गुदगुदाने आता तो मानो प्रकृति-परी खिलखिला कर हँस पड़ती। जंगल की राजनीति के दावपेच भी चल रहे थे, पर खेमों के पास तो एक स्वप्निल चित्र-सा खिंचा था, और दोनों अंगरेज़ जंगल की चाँदनी रात के मद से शराबोर आराम-कुर्सियों पर लेटे-से थे। रात के दो बजे होंगे। खेमे स्फटिक-से पड़े प्रतीत होते थे; और दोनों अंगरेज़ों की आँखों में नींद के स्थान में चन्द्रिका बैठ गई थी। निद्रा-प्रवेश के वे दो द्वार—नयन—खुले थे। सिगरेट का धुआँ चक्कर काटता हुआ, कुहासे की भाँति धीरे-धीरे उठता था। यों ही ग़प-शप हो रही थी, कि अकस्मात् एक बूढ़ा मुसलमान गाड़ीवान उनके सामने आया, मानो उस अर्धरात्रि में कोई प्रेत सामने आ गया हो। लम्बी दाढ़ी और विनीत मुखाकृति से उसकी आन्तरिक वेदना की गुरुता और भी बढ़ी हुई मालूम देती थी। गाड़ीवान के पीछे फ़ौरेस्ट-गार्ड था और दोनों अंगरेज़ों के नौकर भी जाग कर वहाँ आ खड़े हुए।

"अब्दुल्ला कैसे आये ? इस वक़्त तक तो तुम्हें अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चिरान पर पहुँच जाना चाहिए। तुम्हारे मालिक क्या कहेंगे ?"—रौकबी ने पूछा ?

बूढ़े गाड़ीवान ने जिसका सम्पूर्ण जीवन जंगल में ही बीता था और जिसके साथ अनेक रोमांचकारी घटनाएँ घटी थीं, और जो न जंगली हाथी से डरता था और न शेर से; और जिसके साथ केवल दो बैल थे—कहा, "हुज़ूर, मैंने जंगल के ठेकेदारों और साहब लोगों की नौकरी इन्हीं जंगलों में अब तक की है। रात हो या दिन मैं आप लोगों का सामान ढोने से नहीं हिचका हूँ। पर मैंने ऐसा निडर और हिम्मतवर (साहसी) शेर नहीं देखा जो सामान से लदी और जुती हुई गाड़ी पर आ बैठे—बिना छेड़खानी किये मेरी गाड़ी में बैठने की ज़िद करे।"

बूढ़े गाड़ीवान की बात सुन कर दोनों अंगरेज़ हँस पड़े, और गाड़ीवान ने अपनी मुद्रा गम्भीर करके कहा—"आप यक़ीन करें या न करें, पर मेरा कहना ठीक है। मैं आठ मील चल कर आया हूँ; सो भी अपने बचे हुए बैल के सहारे। नहीं तो मटक-धूंधरी उजियाली में, मैं नदी-तट से नीचे खड्ड में गिर कर मर गया होता। बैल ने मुझे रास्ता दिखाया। रास्ता भूल कर मैं ढलवाँ चट्टान पर जा पहुँचा और बैल आगे न बढ़ा, अड़ गया और मुझे लौटना पड़ा।"

"तो क्या तुम्हारे बैल को शेर ने मार डाला"—रौकबी ने पूछा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"हाँ हुजूर"—ठंडी साँस खींच कर बूढ़ा बोला।

"पर यह तो साफ़-साफ़ बताओ कि आखिर हुआ क्या? क्या और गाड़ियाँ तुम्हारे साथ न थीं—" रौकबी ने पूछा।

"हाँ थीं। पर वे सब ठीक हैं। अल्लाह उन गाड़ीवानों को ग़ारत करे, जिन्होंने मुझे अकेला छोड़ दिया"—अब्दुल्ला ने आवेश में आकर कहा।

"कैसे अकेला छोड़ दिया"?—आतुर रौकबी साहब ने पूछा।

"बात यह थी कि मेरी गाड़ी औरों की बनिस्बत ज़्यादा लदी थी। लाज़िमी तौर से वह पीछे रह गई। मेरे प्यारे बच्चे—बैल—रास्ते पर खिचड़ते रहे और झूले की तरह हिलने-जुलने से मुझे नींद आ गई। थोड़ी देर बाद मैंने सपना देखा कि डाकू मुझ पर हमला कर रहे हैं, और मैं अपने पैने से ही अपने मालिकों के सामान की हिफ़ाज़त कर रहा हूँ, और फिर मुझे ऐसा ख़याल हुआ कि कुछ डाकू गाड़ी के पीछे चढ़ आये, और उलार होने से गाड़ी ऊपर को उठ गई, जुआ की ओर से और बाँस के काबुक से बतख़ों और मुर्ग़ों ने ऐसा शोर मचाया कि मैं बबक कर जाग गया, और जो मैंने देखा तो मेरी बोलती बन्द हो गई। एक खौफ़नाक शेर की थाप मेरी गर्दन पर रखी थी, और मैं नथा-सा पड़ा था। मैं फ़ौरन समझ गया कि इस घाटी का शैतान शेर है, जिसने अब तक सब शिकारियों को छका रखा है। और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई शेर इतना ढीठ और साहसी नहीं हो सकता। शेर जान-बूझ कर मेरे पास आया और गुर्राहट से मुझे चुपचाप पड़े रहने की चेतावनी दी। मुझे उसके हुक्म की तामील करनी पड़ी, क्योंकि उस दैत्य के लिये मैं भुनगे के बराबर था और मैं असहाय चुप पड़ा रहा"—बूढ़े ने दम लेते हुए कहा।

"पर क्या तुम्हें विश्वास है कि वह शेर ही था ?—रौकवी ने शक किया।

"शेर !" अब्दुल्ला ने विस्मय से कहा।

"हाँ शेर ! क्या तुम्हारी गर्दन पर उसका कोई नख-चिन्ह हैं ?"—रौकवी ने पूछा।

"हुज़ूर यह तो आप जानते हैं कि बिल्ली की जाति चलते में आहट नहीं करती—मख़मली थाप रख कर चलती है, और ख़ुदा ने उन्हें ऐसा बनाया है कि उनके चलने में आहट नहीं होती। और मेरी गर्दन पर वह अपने जुर्म का क्या चिन्ह छोड़ जाता। क्रोध में वह अपना नख निकाल कर रखता तो नख का चिन्ह तो क्या मेरी लाश ही वहीं रह जाती। और फिर मैंने तो उसकी साँस की गरम भाप भी सूँघी थी। ऐसा मालूम होता था, मेरे मुँह के सामने, मानो पतीली से गरम-गरम बदबूदार भाप निकल रही हो, और फिर सब से बड़ी बात यह थी कि उसने गुर्राहट से चेतावनी दी थी।"—बूढ़े ने अधिकारी-मुद्रा में कहा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"अच्छा ख़ैर, बताओ, फिर क्या हुआ"—रौकबी ने कहा।

बूढ़ा बोला, "जब शेर के बोझ से गाड़ी जुआ की ओर से ऊपर उठ गई, तब मेरे बैल गाड़ी में-से खुल गये; और खुल कर वे कुछ क़दम आगे बढ़े, और खड़े हो गये। तब शेर गाड़ी की पिछाड़ी से मेरी ओर को बढ़ा, और गाड़ी का अगला भाग, जुआ के ज़मीन से लगते ही धड़ाम से नीचा हो गया। मैंने समझा था कि शेर ऐसा होते ही उतर जायगा; पर नहीं। वह तो गाड़ीवान की बैठने की जगह पर चारों पंजों के बल बैठ गया और मेरे भयभीत बैलों को सड़क पर भागता हुआ देखता रहा, वहीं से बैठे-बैठे।"

"इस घटना की सचाई पर मुझे विश्वास नहीं होता"—नौलेज़ ने कहा।

"जंगलों के अपने विचित्र अनुभव से मैं किसी भी बात को अनहोनी नहीं कहता"—रौकबी ने उत्तर दिया। "हाँ, फिर क्या हुआ (बूढ़े की ओर संकेत करते हुए) उसकी बात तो पूरी होने दो।—" रौकबी ने विश्वास की भावना से कहा।

बूढ़े गाड़ीवान ने फिर ताँता बाँधा, "जब मेरे बैल भाग गये तब भी शैतान शेर ने उनका पीछा नहीं किया, और मैंने सोचा कि यह घूमकर मेरा ख़ातमा करेगा। पर मेरे ताज्जुब की हद न रही, जब मैंने देखा कि बिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की भाँति वह धीरे से गाड़ी से उतरा और मस्त चाल से धीरे-धीरे रास्ते पर चला। उस समय उसकी आकृति चाँदनी में स्पष्ट और बड़ी भयङ्कर मालूम देती थी—ख़ास तौर से उस समय जब वह मेरी ओर को आड़ा हुआ। थोड़ी देर में वह फिर घने जंगल में घुस गया। दम घुटाने वाली ख़ामोशी-सी थी उस समय। मुझे अपनी साँस ख़ुद सुनाई पड़ती थी। पर मैं तो अपने बैलों की खोज पर जाने को उतारू था, और गाड़ी से नीचे उतरने ही वाला था कि मैंने भागते बैलों की आहट सुनी। रँभाते हुए वे शीघ्र ही मेरे निकट आ गये। पुचकार कर मैं उन्हें धीरज बँधाने वाला ही था कि इतने ही में मुझे बैलों के पीछे शेर की सूरत दिखाई पड़ी। पर यह सूरत पहले के शेर से कुछ छोटी थी। मैंने सोचा रोशनी के कारण धोका होगा; पर फ़ौरन ही जंगल के एक किनारे से वही शैतान शेर फिर आ गया और मेरे एक बैल को उसने दबोच डाला! धीमे से मेरा बैल रँभाया और धड़ाम से नीचे गिर गया। मेरा दूसरा बैल डर के मारे गाड़ी के चारों ओर भागने लगा। उसके पकड़ने के लिये मैं उसके पीछे हुआ और जैसे-तैसे कर के उसी के सहारे यहाँ आ पाया हूँ।"

"शेरनी ने शिकार को शेर की ओर हाँका! जाड़े के दिनों में—प्रणय के दिनों में—शेर और बघेरों की यह साधारण आदत होती है कि मादा नर की ओर शिकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को घेर कर, कर देती है"—रौकबी ने मुसकराते हुए कहा।

"पर शेर बैलों को गाड़ी से ढिलाने के लिये गाड़ी ऊँची कर दे—यह बात समझ में नहीं आती—" विस्मय से नौलेज़ ने पूछा।

रौकबी ने कहा, "मेरा अपना निजी अनुभव यह है कि जंगली जानवरों के बारे में हमें अपना मन खुला रखना चाहिये—अविश्वास की भावना से कोई बात नहीं सुननी चाहिये। यह ठीक है कि देहाती लोग बात को बढ़ा कर कहते हैं; पर गाड़ीवान की बात सम्भव है। जंगली जानवरों के साथ होता यह है कि यदि उन्हें कोई अनुभव किसी दुर्घटना से या किसी और प्रकार से प्राप्त होता है तो उस अनुभव से उनकी पशु-बुद्धि (Instinct) प्रखर हो जाती है, और वह पशु-बुद्धि विकसित हो कर तर्क-बुद्धि की सीमा-तक पहुँच जाती है। अकस्मात् मुठभेड़ होने से शेर कभी कभी आक्रमण कर देता है और आदमी को भुनगे की भाँति कुचल डालता है। फलस्वरूप उसे मनुष्य की कमज़ोरी का पता चल जाता है, और ऐसी साधारण बात से वह मनुष्य-भक्षी बन जाता है। यह शेर बुड्ढा और काहिल प्रतीत होता है। शेर या बघेरे जैसे-जैसे बूढ़े होते जाते हैं, वैसे वे मक्कार और निडर होते जाते हैं। ख़ुशी की बात तो यह है, कि आस-पास के जंगल शिकार से भरे पड़े हैं, नहीं तो आदमख़ोर शेर या बघेरे हमारे खेमों पर भी धावा बोल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देते। मुझे पहले भी खबर मिली है कि गाड़ी के मार्ग पर एक बड़ा शेर बहुत उत्पात मचा रहा है। यह शेर वही शैतान है।"

फ़ौरेस्टर गार्ड और बूढ़े गाड़ीवान की बातों से मालूम हुआ कि शेर ने पहली बार ही ऐसी हरकत न की थी, वरन् ऐसा करने की उसकी आदत पड़ गई थी, क्योंकि बैलों को नहे-नहाये मारने से शेर को उनकी गर्दन पर वार करने में कठिनाई होती थी, और किसी प्रकार जुते हुए बैलों को मार डाला तो गाड़ी के नीचे से खींचने में बड़ी दिक़्क़त होती थी।

"बस, बस ठीक है। मैं समझ गया। बुढ़ापे या कमज़ोरी ने उसे यह चाल सिखा दी तो कोई आश्चर्य नहीं"—रौकबी ने कहा।

"हुज़ूर! चलिये साथ अभी गाड़ी में बैठ कर। अभी तो काफ़ी रात है; और बात की सचाई को जाँच लीजिए। मैं गाड़ी हाँकूँगा, आप बैठे रहें और देखें कि शेर गाड़ी में पीछे बैठ कर गाड़ी को कैसे उठा देता है—उत्तेजित गाड़ीवान बोला—

"जीवन में ऐसा अवसर फिर कहाँ मिलेगा।"—कुर्सी से उछल कर रौकबी साहब कहने लगे।

***

चाय पी कर नौलेज़ और रौकबी बैलगाड़ी में चले।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब्दुल्ला गाड़ीवान के बैल को एक चपरासी थाम कर कुछ दूर चला। पड़ाव से कई सौ गज़ की दूरी तक गाड़ी गई होगी कि अब्दुल्ला का बैल पगहा तुड़ा कर भागा और गाड़ी की ओर आया। घेर-घार कर बैल को क़ाबू में किया और यह प्रबन्ध कर के कि बैल फिर ऊधम मचा कर न भाग सकेगा, दोनों अंगरेज़ आराम से बैलगाड़ी में बैठ गये, उनकी रायफलें पास ही तैयार रखी थीं। गाड़ी कुछ ही आगे बढ़ी होगी कि पड़ाव की ओर के जंगल से धीमी रँभाने की आवाज़ अकस्मात् सुनाई पड़ी।

रँभाने की आवाज़ सुनते ही अब्दुल्ला गाड़ी से कूद पड़ा और उत्तेजित हो कर कहने लगा, "शेर द्वारा मारे गये बैल की प्रेतात्मा बुला रही है।" अब्दुल्ला के बैल ने भी ऊधम मचाना शुरू कर दिया। पगहा तुड़ाने के लिए वह ज़ोर मारने लगा, और आदमियों पर घबरा कर हमला भी करने लगा। बैल की विचित्र दशा देख कर अब्दुल्ला ने कहा, "मेरे बच्चे को जाने दो ताकि वह अपने भाई को ढूंढ़ ले।" अब्दुल्ला भावावेश में था और अन्य नौकर-चाकर मंत्र-मुग्ध-से हो गये थे, और रात की निस्तब्धता को चीरता हुआ रँभाने का शब्द पहले धीरे और फिर ज़ोर से आ रहा था। अब्दुल्ला ने अपने बैल को पकड़ा और पुचकारा पर वह जंगल की ओर भागना चाहता था जिधर से रँभाने की आवाज़ आ रही थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह आश्वासन दिलाये जाने पर कि दोनों अंगरेज़ उसके साथ रँभाने की आवाज़ की ओर चलेंगे अब्दुल्ला को सान्त्वना मिली।

***

परिस्थिति के अनुसार एक नई योजना बनी। एक नए आदमी को गाड़ीवान बनाया गया और उसको आज्ञा दे दी गई कि वह गाड़ी को नदी की तलहटी में ले जाय और वहाँ पर हाँकने और चलाने से यह बहाना करे मानो गाड़ी कहीं फँस गई हो। अब्दुल्ला मय अपने बैल के रौकबी साहब के साथ गाड़ी से कुछ पीछे, पर नदी के किनारे पर, छिप कर डट गया। रौकबी साहब की रायफ़ल तो तैयार ही थी। और अगर शेर गाड़ी का पीछा कर रहा था तो वह गाड़ी की ओर ज़रूर जायगा, और नदी की सूखी और खुली तलहटी में ज़रूर दिखाई पड़ेगा।

नौलेज़ और एक दूसरा शिकारी उधर गये, जिधर से रँभाने की आवाज़ आ रही थी। रँभाने की आवाज़ घने जंगल से नदी के किनारे की ओर को बढ़ रही थी। नौलेज़ का ध्येय यह था कि आवाज़ की ओर ऐसे बढ़ा जाय जिससे रँभानेवाला जानवर उसके और गाड़ी के बीच हो जाय। नौलेज़ और एक दूसरा शिकारी लापरवाई से जंगल में घुसे, और कोई दो सौ गज़ ही आगे बढ़े होंगे कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

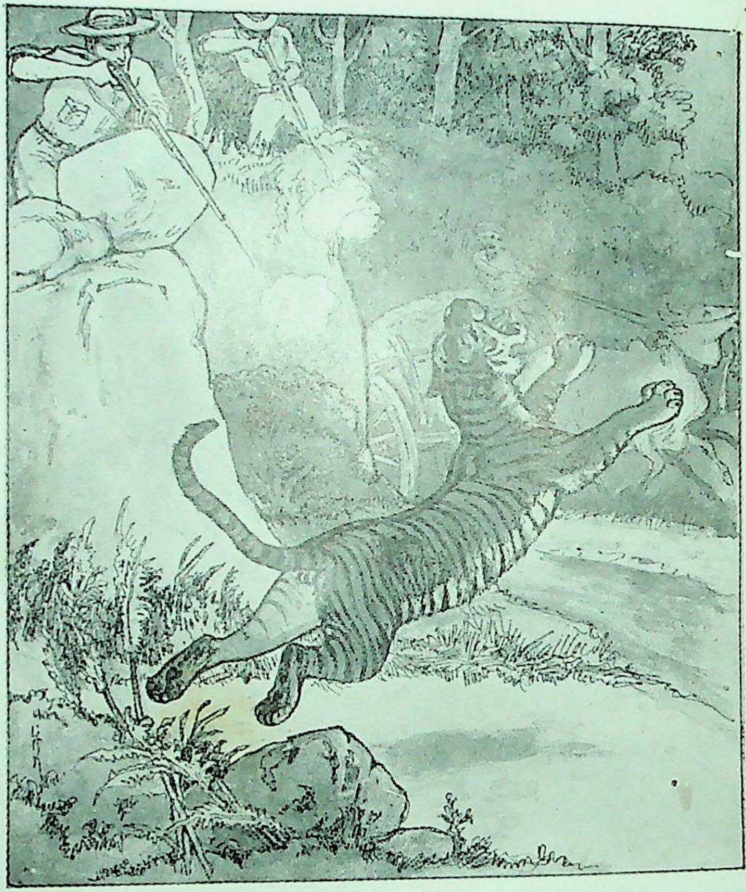

"रायफ़ल-ध्वनि के उपरान्त गुर्राहट हुई, और फिर पीड़ाजनक भयानक गर्जना।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाड़ियों से दमघोटने वाली गंध आने लगी। अब किसी प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं थी। शेर की गंध थी वह, और इसमें कोई सन्देह नहीं था कि रँभाने की आवाज़ शेर ही करता था। नौलेज़ और शिकारी शोर करते हुए नदी की ओर बढ़े ताकि शेर नदी की तलहटी की ओर जाय। शीघ्र ही नौलेज़ और शिकारी नदी के ऊँचे तट पर आ गये, और उनकी बैलगाड़ी रेती में फँसी-सी साफ़ दिखाई पड़ी और गाड़ीवान भी इसी प्रतीक्षा में था कि शेर कब आक्रमण करे; पर शीघ्र ही उनके ठीक नीचे—करार से नीचे—कोई जानवर तेज़ी से, पर चुपचाप निकल पड़ा, रेती की ओर को। दाहिनी ओर को वह कुछ लपका और घात लगा कर छपक-सा गया और फिर धीरे-धीरे वह आगे बढ़ा और अस्पष्ट-सा दिखाई देने लगा। कुछ क्षणों के लिए उनका हृदय उत्तेजित हो गया। पर थोड़ी ही देर बाद गगनभेदी रायफ़ल का शब्द हुआ। ध्वनि और प्रतिध्वनि से जंगल काँप गया और रायफ़ल-ध्वनि के उपरान्त गुर्राहट हुई और फिर पीड़ा-जनक भयानक गर्जना। रौकबी साहब की रायफ़ल गरजी थी और शेर के रीढ़ में गोली लगी थी।

***

नापने से नौ फ़ुट साढ़े आठ इंच शेर निकला।

***

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वास्तविक बात यह है कि शेर आवश्यकतानुसार साँभर, गाय और बैल की बोली बोल लेता है, और बघेरा अन्य छोटे जानवरों की बोली बोलता है। शेर ने अब्दुल्ला का एक बैल मार कर दूसरे के लिए पड़ाव तक पीछा किया। साधारणतया शेर और बघेरे भरपेट खाने के बाद चैन से सोते हैं, और विना भूख शिकार पर नहीं जाते। संग्रह करने की लालसा उन्हें नहीं होती; पर कभी-कभी वे ख़ून के ऐसे प्यासे हो जाते हैं—मारने में उन्हें ऐसा मज़ा आता है कि, खाने के लिए नहीं वरन् मारने की ग़रज से ही वे मारते हैं। यह शैतान शेर भी अब्दुल्ला के एक बैल को मार कर और शायद अपनी साथिन शेरनी के लिए उसे छोड़ कर अथवा स्वयम् भोग लगा कर ख़ून की प्यास में दूसरे बैल को हथियाने बढ़ा। बैल की बोली की नक़ल करने का अभिप्राय यही था कि दूसरा बैल बहक कर उसके क़रीब पहुँचे और उसका शिकार बने। न मालूम कितनी बार शैतान शेर की यह चाल चली होगी; पर उस दिन उसके सुख की अन्त्येष्टि हो गई—

बेग़म हैं ऐश कब चमने रोज़गार के,
खटके लगे हैं कूचए गुल में भी ख़ार के।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काले कारनामे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काले कारनामे

'बुभुक्षितः किन्न करोति पापम्' वाली बात जिस प्रकार मनुष्यों के लिए लागू है, उसी प्रकार पशुओं के लिए भी। यह भी ठीक है कि जिन्हें भूख और उत्पीड़न के कारण ख़ून के आँसू नहीं बहाने पड़ते, वरन् जो धन-दौलत के दलदल में गले तक फँसे रहते हैं, उनमें-से बहुतेरे भूखों और असहायों की अपेक्षा अति जघन्य पाप करते हैं—शायद केवल स्वाद और विलासिता के कारण। शेर और बाघ भी, मनुष्य के ख़याल से, पाप करते हैं—मनुष्यभक्षी हो जाते हैं। क्यों? भोजन की कमी, कमज़ोरी, बुढ़ापे और स्वाद के कारण। योगियों और पागलों को छोड़ कर कितने हैं, जो रसना के वशीभूत न हों?

* * *

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आसाम में एक छोटी नदी के किनारे एक स्त्री का शव दाहक्रिया के लिए ला कर ज्यों ही रखा गया, त्यों ही वहाँ एक कोने से अपने बच्चे के साथ एक शेरनी अकस्मात् आ निकली। श्मशान में आये हुए अनेक लोग तीर और कमान से सुसज्जित थे। शेरनी को आते देख, शोकाकुल विधुर को आशंका हुई कि कहीं वह उसकी सहयोगिनी के शव को खाने न आई हो। उस इलाक़े में उस समय कोई मनुष्यभक्षी शेर या बाघ न था; पर फिर भी उस शेरनी के उस ओर—उतनी भीड़ के होते हुए भी—आने का तात्पर्य उस शव को खाने के अतिरिक्त और क्या हो सकता था—यह ख़याल करके दुखी पति ने आवेश में आकर शेरनी पर तीर चला दिया। चोट खाकर शेरनी तड़पी, और अपने आक्रमणकारी पर झपटी। लोगों में भगदड़ पड़ गई। काई-सी फट गई। साहस और भय संक्रामक होते हैं। लोगों को भागते देख कर वीर पति के भी पैर उखड़ गये। वह भी एक ओर भागा और ठोकर खाकर गिर गया। शीघ्र ही शेरनी उसपर टूट पड़ी। शेरनी मनुष्यभक्षी न थी, इसलिए शोरग़ुल से भगा दी गई; पर अपने आक्रमण-कारी को बुरी तरह घायल कर गई। भाग्य से वह बच गया।

कभी-कभी अति साधारण-सी बातों से ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो जाती हैं, जिनका हमें स्वप्न में भी ख़याल नहीं आता, और जिनके लिए कभी-कभी व्यक्तियों को ही नहीं, वरन्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राष्ट्र तक को रोना पड़ता है। घटनाएँ होती तो अनायास ही हैं; पर उनके कड़ुए फल भोगने पड़ते हैं औरों को। पिता का पाप पुत्र को ले बैठता है। नेताओं और जेनरलों के साधारण-से काम से देश की सत्ता कभी-कभी डूब जाती है। वह आसामी बुरी तरह घायल हुआ, और भाग्य से बच भी गया। कितनी साधारण-सी बात थी! पर वह साधारण-सी बात न थी—ताण्डवनृत्य का प्रारम्भमात्र था। शेरनी को उस दिन की घटना से मनुष्य की कमज़ोरी और उसके मारने की सरलता का अनुभव हुआ। साथ में बड़ी मार्के की बात यह हुई कि मनुष्य का मधुर रुधिर उसकी दाढ़ से लग गया। फलस्वरूप वह चौपायों को छोड़ कर दोपायों—मनुष्यों—को पकड़ने लगी। गाँवों में घूमती और बेखबर स्त्री या पुरुष को पकड़ ले जाती। खुद आदमी का मीठा मांस खाती, और अपने बच्चे को भी उसी के बढ़िया मांस पर पालती। शेरनी की माँ ने वह व्यंजन कभी उसे चखाया न था। उसके स्वाद का अनुभव उसे यों ही हो गया। शेरनी पूर्णरूप में मनुष्यभक्षी बन गई। इस क्रूर कृत्य का पाठ उसने अपने बेटे को भी पढ़ाया, अथवा यों कहना चाहिए कि बचपन से ही आदमी का ख़ून उसके मुँह को लग गया। शेरनी मनुष्यों के शिकार के लिए आती और किसी-न-किसी को पकड़ ले जाती। चारों ओर उसका आतंक था। होते-होते उसकी ढिठाई और साहस इतने बढ़े कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिन-दोपहर को भी वह आदमियों को पकड़ने लगी। घर के द्वार पर बैठे लोगों तक को उठा ले जाती। हाहाकार मच गया। लोग परेशान थे। पेशाब और पाख़ाने जाने में लोगों की धुकधुकी चलती कि कहीं पिशाचिनी आकर उठा न ले जाय। हथेली पर जान रख कर लोग घर से बाहर निकलते; पर इस दोपाये के हथियार—बुद्धि—के सामने किसी चौपाये की पेश थोड़े ही जाती है।

लोगों ने टोली बाँध कर उस पिशाचिनी शेरनी और उसके बच्चे को मारने की ठानी। विशेष आयोजन से शिकार का प्रबन्ध किया गया, और शेरनी को मार डाला गया; पर उसका प्रतापी पुत्र, जो अब बढ़ कर पूर्णतया जवान और भयंकर शेर हो गया था, लोगों के चंगुल में न आया। उसको मारने की लोगों ने प्राणपण से चेष्टा की; पर सब विफल हुई। उसने अपनी माँ के कृत्य को न केवल जारी रखा, वरन् और भी पुष्ट कर दिया। सब उपायों से काम लिये गये। धोकाधड़ी बरती गई। मानवी प्रतिमा रख कर उसको ठगने का प्रयास किया गया; पर शेर में वास्तविक और कल्पित मनुष्य पहचानने की सूझ न-जाने कहाँ से आ गई थी। मनुष्य और शेर के हथकण्डों में बाज़ी लगी हुई थी, और देवी अपने वाहन को बलि लेने के लिए प्रोत्साहन दे रही थी। बहुत दिनों तक नर-बलियाँ चढ़ती रहीं। लोगों के किये कुछ न हुआ। चाय के कई इलाक़ों में शेर ने ऊधम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मचा दिया था। कई इलाक़ों में वह बारी-बारी से जाता और आदमियों को खाता। गोरे और काले सभी को उसका डर था। मनुष्य मात्र को वह एक ही दृष्टि से देखता था—सभी उसके लिए स्वादिष्ट खाद्यपदार्थ थे। घर और बाहर कहीं भी कोई सुरक्षित न था। होते-होते नौबत यहाँ तक पहुँची कि चाय की एक मुख्य फ़ैक्टरी के समीपवर्ती चाय के बग़ीचे को बन्द कर दिया गया। शेर ने उस बग़ीचे में अपना अड्डा-सा बना लिया। तीन दिन तक लगातार वह एक-एक करके तीन मनुष्यों को उठा ले गया। आतंक का भूकम्प-सा आ गया। सब मज़दूर काम छोड़ कर बग़ीचे से इस प्रकार भाग गये, जैसे धुआँ दिखाने से बर्रें छत्ता छोड़ कर भाग जाती हैं। एक गोरखा चौकीदार लोगों की कायरता पर बहुत हँसा, और उसकी हँसी पर बग़ीचे के मूक प्राणी—वृक्ष—हँसे। गोरखा अपनी ड्यूटी से न हिला, और शेर का भोजन बना। जब उसके मारे जाने की खबर उसके दो गोरखा मित्रों को मिली, तब उन्होंने ख़ून का बदला ख़ून से लेने की ठानी, और अपने मैनेजर को बिना सूचना दिये ही वे उस बग़ीचे की ओर गये; पर वहाँ से एक ही गोरखा लौटा। उसका साथी न-मालूम कैसे ग़ायब हो गया। उसके ग़ायब होने का रहस्य लौटे हुए गोरखे ने बताया।

बग़ीचे की बाहरवाली फ़ैक्टरी के बंगले के बरामदे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में, दोनों गोरखे जा डटे। अपनी भरी हुई रायफ़लों के घोड़े उन्होंने चढ़ा लिये, और बारी-बारी से उन्होंने शेर की प्रतीक्षा में रतजगा किया। प्रातःकाल तीन बजे के क़रीब जीवित लौटे हुए गोरखे ने अपने साथी को जगाया। उसका साथी स्वस्थ और जागरूक होकर, अपनी रायफ़ल सँभाल कर बैठ गया, और जगाने वाला साथी निश्चिन्त होकर सो गया। प्रातःकाल सूर्य निकलने पर जब उसकी आँखें खुलीं, तब उसका साथी ग़ायब था! रायफ़ल वहीं रखी थी। वह अपने ग़ायब साथी के अत्यन्त निकट ही सोया था—इतना निकट कि वे एक दूसरे को छू सकते थे। उठ कर उसने अपने साथी को इधर-उधर ढूँढ़ा और पुकारा। ऐसा करने में निस्तब्धता मानो उसका उपहास कर रही थी, और संकेत कर रही थी कि आगे बढ़ कर बग़ीचे के मार्ग की ओर देखो। आगे बढ़ कर जो देखा, तो शेर के भयानक खोजों से वह सन्न रह गया। शेर आया, उसके साथी को उसके कान के पास से उठा ले गया, उसे मालूम भी न हो पाया, और उसके साथी ने चीख भी न निकाली। सम्भवतः दानवरूप शेर ने अपनी भयङ्करता से उसे इतना डरा दिया होगा—हिपनोटिज़्म-सा कर दिया होगा—कि वह मुँह भी न खोल सका होगा।

***

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस ख़बर को सुन कर चाय-बग़ान के दो सीनियर मैनेजर ए० और एफ़० एक सहायक मैनेजर के साथ उसी दिन मध्याह्न में, घोड़ों पर सवार हो कर, उस मनहूस बग़ीचे की ओर चल पड़े। साथ में उनके एफ़० का टैरियर कुत्ता भी था। उन तीनों अंगरेज़ों ने अपने साथ और किसी को न लिया—साईसों को भी नहीं।

वह ऊजड़ बग़ीचा केन्द्रीय फ़ैक्टरी से पाँच मील की दूरी पर था, और मार्ग था जंगली। तीनों अंगरेज़, घोड़ों पर चढ़ कर, वार्त्तालाप करते हुए चल पड़े। आगे-आगे टैरियर ज़मीन को सूँघता जाता था। बग़ीचे के बँगले से जब वे आधे मील की दूरी पर रहे होंगे, तब वे मार्ग के एक नुकीले मोड़ पर आये। मोड़ पर आते ही टैरियर एकदम उत्तेजित हो गया, और गर्दन के बाल फुला कर, लगा हाँव-हाँव करके भोंकने। सड़क पर लोगों ने नज़र डाली, तो शेर के ताज़े खोज थे। खोजों से प्रतीत होता था कि मनुष्य-भक्षी शेर हाल में ही वहाँ से निकला था। तीनों अंगरेज़ अभी खोजों का ही निरीक्षण कर रहे थे कि टैरियर एकदम जंगल की ओर दौड़ गया और लौटता हुआ दिखाई न दिया। दूर घने जंगल में कुत्ते का भोंकना सुनाई पड़ा। फिर थोड़ी देर बाद निस्तब्धता छा गई; पर कुत्ता न लौटा। टैरियर—बुल टैरियर नहीं—कुत्ते इतने साहसी नहीं होते कि शेर का पीछा कर सकें; पर उस टैरियर के व्यवहार से यह बात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्पष्ट होती थी कि उसमें साहस की मात्रा बहुत थी। उन तीनों अंगरेज़ों को एक दूसरे से पृथक् होने का साहस न होता था, और वे कुत्ते की खोज में, अलग-अलग तो क्या साथ-साथ भी, नहीं जा सकते थे। ऐसा करना आत्म-हत्या करना था; पर वे कुत्ते को बहुत चाहते थे, और सायंकाल तक उसकी प्रतीक्षा करते और पुकारते रहे। अँधेरे में और अधिक प्रतीक्षा करना अनुचित था, इसलिए वे लोग मन मार कर बग़ीचे की ओर चल पड़े।

घनघोर जंगल के बीच, बग़ीचे के बीच में चाय के कटे हुए पेड़ वर्गाकार में खड़े थे। पूर्णमासी का चाँद आकाश से अपनी ज्योत्स्ना बरसा रहा था। बँगले के सामने के बरामदे में चन्द्रिका छिटकी हुई थी। बँगले पर छप्पर था, इसलिए छत पर बैठने को स्थान न था। तीनों अंगरेज़ घोड़ों का उचित प्रबन्ध करके आराम-कुरसियों पर बैठ गये। उनके सामने बरामदे की सीढ़ियों से, चाय की झाड़ियों में हो कर, जंगल तक, दो फर्लांग की दूरी तक, चौड़ा मार्ग था। तीनों कुरसियों पर बैठ कर सुस्ताने लगे। भरी हुई रायफ़लें उनकी गोद में रखी थीं। उन्होंने कुत्ते के बारे में वार्त्तालाप प्रारम्भ कर दिया। बातें करते-करते सुबह के तीन-चार बजने को आये। एक-एक करके तीनों को नींद ने आ दबाया। तीन-चार बजे का समय और रात-भर की जगावट, और तिसपर मदभरी चाँदनी—कौन होगा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिस पर ऐसी अवस्था में रात अपनी जादू की लकड़ी न फेर दे; पर कुछ ही देर पश्चात् धीमे स्वर की चिल्लाहट 'बचाना' और उसके बाद ग़ुर्राहट ने ए० तथा सहायक मैनेज़र को चौंका कर जगा दिया। चौंकने से उनकी भरी हुई रायफ़लें पत्थर के फ़र्श पर खड़ाक से गिरीं, जिसे सुन कर पहले से भी भयंकर ग़ुर्राहट हुई। ए० के ठीक सामने, उससे कुछ ही क़दम दूर, खीसें काढ़े हुए एक भीमकाय शेर मोहक चाँदनी में एफ़० की आराम-कुरसी की बग़ल में लम्बा छपका बैठा हुआ था। मैनेजर एफ़० की लटकती हुई बाँह धीमे से, पर बड़ी दृढ़ता से, शेर के ख़ूँख्वार जबड़ों में थी !

ए० और सहायक मैनेजर अवाक्, लकवे-से मारे हुए, बैठे थे। अपनी घातों से शेर ने एफ़० की बाँह को दबाना प्रारम्भ किया। जब कभी एफ़० तनक भी अपनी ओर को हाथ करते, या कोई शब्द निकालते, तभी शेर अपने दाँत उनकी बाँह में और भी गाड़ता, ताकि वे शेर का किसी प्रकार भी विरोध न कर सकें। ज़रा से हिलने या किसी और प्रकार की गति से शेर के दाँत उनकी बाँह के मांस में और भी गड़ जाते। साथ ही शेर की दृष्टि ए० पर थी। पकड़े हुए था वह एफ़० को; पर ए० की ओर उसने ऐसी टकटकी लगा रखी थी, मानो उनके तनक से हिलने और अंग-प्रत्यंग की किसी भी प्रकार की गति से वह उनपर टूट पड़ेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ए० तनक भी हिलने-डुलने का साहस न कर सकते थे। उस दानव शेर के सम्मुख रायफ़ल को सम्भालने की बात तो दूर, हाथ बढ़ा कर उसको छूने तक के मानी होते, उन तीनों का मारा जाना। हिलने-डुलने या किसी और प्रकार की गति होने से शेर एफ़० को छोड़ कर शेष दो आदमियों पर टूट पड़ता। एफ़० को तो वह रायफ़ल चलाने के लिए बेकाम कर ही चुका था। उनके दो साथियों की क्या बिसात थी, जो उस समय कुछ कर पाते। एक-एक पंजे में उनकी लोथें पड़ी मिलतीं। जो कुछ ए० कर सकते थे, वह यह था कि वे शेर की नज़रों से नज़र मिलाते रहते और बड़ी सावधानी से शेर को मारने का मौक़ा देखते। एफ़० को वे क्षण मृत्यु-वेदना का समय मालूम हो रहे थे। एक बड़ी अच्छी बात यह हुई कि सहायक मैनेजर डर के मारे ज्ञान-शून्य पड़ा था, क्योंकि अनुभवहीन शिकारी होने के कारण, सम्भव था, वह घबराकर कुछ ऐसा काम कर बैठता, जिससे तीनों को जान से हाथ धोने पड़ते। एफ़० शान्त पड़े रहे, क्योंकि उनका जीवन उनके अवसान पर ही निर्भर था। जब-जब शेर के दाँत उनकी बाँह में गड़ते, तब यह मालूम होता, मानो बाँह बखौरे में से निकली ही पड़ती है। एफ़० को यह भी मालूम था कि शेर रुक-रुक कर उनकी बाँह को क्यों दबाता था। बोलने और हरकत करने से शेर का भँभोड़ना स्वाभाविक था; पर अब तो एफ़० चुप पड़े थे,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फिर शेर रुक-रुक कर बाँह में दाँत क्यों गड़ाता था ? इसलिए कि वे पीड़ा के कारण उठ बैठें, और शेर उनको जंगल की ओर ठीक वैसे ले जाय, जैसे क़साई बकरे को कान पकड़ कर बूचड़ख़ाने की ओर घसीट ले जाता है। एफ़० ने बड़ी सावधानी और धैर्य से काम लिया, ताकि उनके साथियों को कुछ करने का अवसर मिल सके; पर शेर की चालों और तीव्र पीड़ा के सामने एफ़० की एक न चली। अन्त में घबरा कर उनकी चीख़ निकली—"ख़ुदा के वास्ते फ़ायर करो।"

तुरन्त ही क्रोधित गर्जन से मकान गूँज गया, और जैसे ही अपने मुँह में बाँह दबाये हुए शेर उठा, वैसे ही वेदना से पीड़ित एफ़० को भी उठना पड़ा। शेर अपने शिकार को सीढ़ियों पर से ले चला। एफ़० लम्बे क़द के आदमी थे, और अपनी बाँह की पीड़ा कम करने के लिए उन्हें कुछ भुक कर, उस दोज़ख़ी ख़ूनी शेर के बराबर, चलना पड़ा। उस दृश्य को देख कर किसको बेहोशी न आ जाती—यह कहना कठिन है।

कुरसी में से आगे भुक कर अपनी रायफ़ल उठाने में भी ए० को, चुपचाप और शेर के बिना देखे ही, कुछ हिलना तो था ही। शेर अपने शिकार को लिये जाता था; पर उसकी नज़र कुर्सियों वाले आदमियों पर थी। जब-जब वह एफ़० को मोड़ पर हो कर लाता था, तब तक वह चेता-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वनी-स्वरूप दोनों व्यक्तियों पर ग़ुर्राता भी जाता था, और बड़े ज़ोर से एफ़० की बाँह में झटका मारता जाता था। ए० को अपनी रायफ़ल उठाने का ज्यों ही अवसर मिला, त्यों ही सहायक मैनेजर चीख़ मार कर अपनी कुरसी से उछला और भाग कर बँगले में घुस गया, और धड़ाम से दरवाज़े बन्द कर लिये।

शेर का सन्देह जाग्रत हो गया। एफ़० की बाँह को लगभग छोड़ कर वह मुड़ा, और उसने कलेजा दहलाने वाली गर्जन की। वह एफ़० को मार ही डालता, यदि ठीक उसी समय एक दैवी घटना न घटी होती, यानी यदि टैरियर ने आकर हस्तक्षेप न किया होता। टैरियर, जिसको उन्होंने खोया समझ रखा था, ढूँढ़ता हुआ वहाँ पर आ गया। जहाँ से वह उनसे अलग हुआ था, वहाँ से वह केन्द्रीय फ़ैक्टरी गया था, और वहाँ से फिर लौट कर बँगले पर आया। यह छोटी-सी बात—टैरियर का ऐन मौक़े पर आ जाना—दैवी हस्तक्षेप था। कुत्ते की आवाज़ सुन कर शेर को बहुत-से आदमियों की आशंका हुई होगी, इसलिए उसने एफ़० की बाँह फिर पकड़ ली, और उनको जंगल की ओर ले चला। टैरियर उनके पीछे-पीछे उत्तजित हो कर भोंकने लगा। कुत्ते के शेर के पीछे लगे रहने से ए० को फ़ायर करने का अवसर मिला; पर दूर से फ़ायर करने में बड़ी जोखम थी, क्योंकि ऐसा करने में एफ़० के गोली लगने या शेर के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

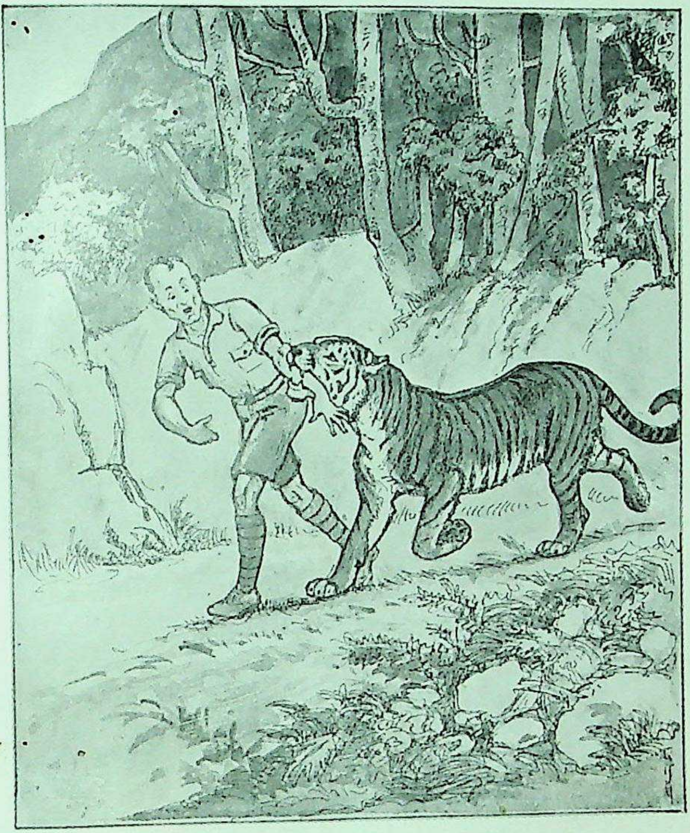

"उसने एफ़० की बाँह फिर पकड़ ली और उनको जंगल की ओर ले चला।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घायल होने की आशंका थी। दोनों ही बातें भयावह थीं, इसलिए ए० ने शेर का पीछा करने की ठानी।

"बचाओ" की हृदयविदारक चीख़, चन्द्रिका-चुम्बित निस्तब्धता को चीर कर, बँगले की ओर आ रही थी। ए० शेर के गुर्राने और कुत्ते के भोंकने के साथ आगे बढ़ रहे थे। अन्त में वे सावधानी के दाँव-पेंच भूल गये, और क्रोध के आवेश में आकर उन्होंने जोखिम का काम किया। तेज़ी से आगे बढ़े और निशाना लेकर फ़ायर कर दिया। फ़ायरिंग की आवाज़ और उसकी प्रतिध्वनि अ र र र से जंगल काँप गया! गोली शेर के सिर में लगी, और वह वहीं रह गया!

***

प्रातःकाल का मदपूर्ण समीर बह-बह कर जीवन की अनित्यता का गान गुनगुना रहा था, और शेर मरा पड़ा था। एफ़० भी भले-चंगे हो गये। मनुष्यभक्षी शेर के काले कारनामों का अन्तिम काण्ड समाप्त हुआ!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रोमांचकारी कुश्ती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रोमांचकारी कुश्ती

वेदान्त का प्रथम सूत्र है—'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' और संसार के अनेक जीवों का जीवन-सूत्र है—'अथातो युद्धजिज्ञासा'। युद्ध-जिज्ञासा मानव-धर्म का मूल-मन्त्र न हो; पर साम्राज्यवादी प्रवृत्ति युद्ध-जिज्ञासारूपी शराब पर ही ज़ोर मारती है। व्यक्तिगत रूप से भी युद्ध-जिज्ञासा संसार में चली आई है। जंगल के जीवों में भी कुछ ऐसे बिगड़ैल, लड़ाकू और अनुभवहीन होते हैं कि, तनक-सी बात पर वे कट मरते हैं। जीवन उनके लिए खिलवाड़ होता है—मरने या मारने के लिए। साम्राज्यवाद तो इस दुपाये—मनुष्य—की ही करतूत है—दूषित पूँजीवाद की सन्तान।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शहर और आबादियों की युद्ध-जिज्ञासा, पापलिप्सा और अनुपम त्याग की घटनाएँ हम आँखों देख लेते हैं। और कुछ नहीं होता, तो थियेटर और सिनेमाओं में सुखान्त और दुःखान्त नाटक देख लेते हैं; पर जंगल के रंगमंच पर खेले जाने वाले नाटकों को कम ही लोग देख पाते हैं, और देख कर कितने हैं, जो अपनी कल्पनाशक्ति को जंगल के दृश्यों से पैनी कर सकें—ऐसी पैनी कि वह दिलों को चीर कर पार हो जाय !

जंगल के रोमांचकारी नाटक, आबादी से दूर, प्रकृति के प्रांगण में खेले जाते हैं, जहाँ पर जंगली जन्तुओं का ही बोलबाला होता है। वे रोमांचकारी घटनाएँ ऐसी होती हैं, जिन्हें देख कर जमा हुआ भी खून एक बार दौड़ने लगता है, हृदय की धड़कन बढ़ जाती है, और तन्मयता तो ऐसी हो जाती है, मानो दर्शक समाधिस्थ हो गया हो।

एक दिन जैम्स इंगलिस नामक एक गोरा अपनी नील की कोठी का निरीक्षण कर रहा था। इतने में उसको खबर लगी कि कोठी से कुछ दूर शेर ने एक गाय मारी है। शीघ्रता से उस ओर जा कर देखा, तो हाल की मारी हुई गाय की लाश मिली—गरम खून से लथपत। क़रीब ही शेर के पग-चिह्न भी मिले। बस, फिर क्या था, बैठने का स्थान बनने लगा। एक गड्ढा खोदा गया। चारों ओर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से उसे काँटों और लक्कड़ों से सुरक्षित बना कर इंगलिस साहब एक गुमाश्ते के साथ उस गढ़े में घुस गये।

दस बजे रात का समय होगा। अर्धचन्द्र बादलों के क्षीण टुकड़ों से टक्कर लेता हुआ, छिप-छिप कर अपने मार्ग पर जा रहा था। दूर—काफ़ी दूर—पर रात्रि की नीरवता में गंगा की धार अनवरत रूप से जम्हाई-सी लेती सुनाई पड़ती थी। ठंडी हवा का झोंका जैसे ही लम्बी घास से अठखेलियाँ करता निकलता, वैसे ही जान पड़ता, मानो रात्रि देवी के हृदय से एक ठंडी कँपकँपाती-सी आह निकल रही है। यह आह 'साँय-साँय' और 'हअर-हअर' करती मैदान की ओर घबराई-सी निकल जाती। पेड़ों की डालियाँ और लताओं की फुनगियाँ भी, ख़ुशामदी मुसाहिबों की भाँति, उसी हअर-ध्वनि के साथ हाँ-में-हाँ मिलातीं। सहसा नदी किनारे से चकवा की पुकार 'केंऊँ' निस्तब्धता को भंग करती; पर फिर शीघ्र ही नीरवता का राज्य फैल जाता। कुछ देर के लिए जंगल की आत्मा साँस-सी साध लेती। थोड़ी देर बाद उस दृश्य की फिर आवृत्ति होती।

गड्ढे में बैठे दोनों आदमी सजगता की प्रतिमा बने प्रकृति की छटा देख और महसूस कर रहे थे। वायु के मन्द झकोरों, पेड़ों की शाखाओं की किलोलों, चकवा की केंऊँ, चन्द्रमा की शराबी की-सी चाल और जंगल की आत्मा की गोचर छटा को देखते और अनुभव करते हुए जब कभी सेही,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोमड़ी अथवा गीदड़ के पैर की आहट होती, तब शेर की आशंका से उनका हृदय धौंकनी की भाँति चल उठता।

कुछ प्रतीक्षा के उपरान्त गुमाश्ते ने साहब बहादुर का हाथ दबाया और कान में इतने धीरे से कुछ कहा कि साहब बहादुर केवल इतना ही सुन पाये कि दाईं ओर को देखो। उधर जो गोरे ने आँख उठाई, तो रोमांचकारी बिजली-सी शरीर में दौड़ गई। धुँधले क्षितिज पर, रात्रि की लम्बी और भूरी छाया में, एक भीमकाय आकार अस्पष्ट-सा दिखाई पड़ा, जिसको गुमाश्ते ने असाधारण सूअर बताया। वह ठीक गड्ढे की ओर आ रहा था—धीमी, अलमस्त और निश्शंक चाल से। कभी-कभी आत्मतोष प्रकट करने के लिए थम कर वह 'हुक्ख़' करता और अपनी थूथनी से ज़मीन खोद कर जड़ें खाता आता था। उसकी लचीली थूथनी हलके फाले की भाँति ज़मीन को फाड़ती थी।

गोरे ने बन्दूक़ उठा कर जैसे ही छाती का निशाना साधा, वैसे ही सूअर ने अपना सिर ऊपर उठाया, और उसका आकार स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा। अपार शक्ति और शान का वह प्रतिविम्ब अकड़ कर खड़ा हो गया। उसी समय अकस्मात् जंगल से ग़ुर्राहट और गर्जना सुनाई पड़ी। वनराज अपने शिकार-पथ पर था। गुमाश्ते ने गोरे की बाँह ज़ोर से दबाई और उसके कान से अपना मुँह लगा कर अति क्षीण ध्वनि में कहा—"शेर!"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गड्ढे में दोनों आदमियों की स्नायुएँ खिच गईं; उत्सुकता से दिल की धड़कन बढ़ी। शूकरराज चौकन्ना, पर लापरवाई से, खड़ा था। उसके ढंग से प्रतीत होता था कि उसका रोम-रोम कह रहा है—"शेर हो अथवा मल्कुल-मौत, 'यहाँ कुम्हड़ बतियाँ कोउ नाहीं'। शेर और शेर का नगड़दादा मेरी काँपों (Tusks) पर......" सिर झुका कर और क्रोधपूर्ण झटके से उसने भयावना शब्द किया—"हू-हुक्ख।" जंगल से आवाज़ आई—"ऊँग़ा।" सूअर ने उत्तर दिया वही—"हू-हुक्ख।" देहात में जैसे एक लठैत किसी को गाली दे और उसका प्रतिद्वन्द्वी गाली में ही उसे उत्तर दे और फिर शीघ्र ही खटाखट लाठी चलने लगे, ठीक वैसे ही शेर के चैलेंज को सूअर ने स्वीकार कर लिया। शेर ने सूअर को भागते न समझ और भी कम्पोत्पादक गर्जना की, मानो शेर ने भी चैलेंज की स्वीकृति दे दी हो। तुरन्त ही उस अखाड़े में एक बलशाली पट्ठा शेर कूद पड़ा। वह क्रोध से भन्नाया हुआ था। होट पीछे खींचे, मूँछें खड़ी किये, दाँतों का प्रदर्शन करते और पूँछ को अपनी बग़लों से मारते हुए, गर्दन के बड़े बालों को सतर किये, विजय और युद्धजिज्ञासा से शेर दावघात करने को आ खड़ा हुआ। यौवन की उन्मत्तता में—नदी की बाढ़ के समान—वह किसी को गिननेवाला न था। सैकड़ों सूअरों को उसने खा डाला था। दो-चार ने हमला भी किया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था; पर एक ही थाप में उसने उनका कचूमर निकाल दिया था। यों थोड़ी-बहुत खरोंच और एक-आध घाव सूअर की काँप के लगे थे; पर वे सब सूअरों की ओर से आत्म-रक्षा में लगे थे। उसके गर्जन-तर्जन और ग़ुर्राहट से हिरन और गाय-भैंस घबरा कर ढीले हो जाते थे। फिर उसका भब्बराता यौवन! यौवन की आँधी अनेकों को उखाड़ फेंकती है। यौवन ऐसा नशा है कि उसके सुरूर में कुछ-का-कुछ दिखाई पड़ता है। जवानी में जवानों के पैर ज़मीन पर ऐसे पड़ते हैं, मानो उनमें 'इलैस्टिक' लगी हो। दुःख, भय और आशंका-रूपी अन्धकार यौवन-प्रभात से पलाय-मान हो जाता है। शेर भी जवानी की धार में बह रहा था। दम तो उसमें बेहद था; पर अनुभव की पूरी घाटी में हो कर वह न गुज़रा था, इसलिए जब वह सूअर से भिड़ने आया, तब वह समझता था कि सूअर उससे डरेगा और अवसर पाकर वह उसे मार गिरायेगा। सूअर ने बचाव के लिए किसी झाड़ी का सहारा लिया होगा।

और सूअर? सूअर ने शेर की तनक भी परवा न की। उसने 'हू-हुक्ख' की ताल ही नहीं ठोकी, वरन् शेर की ओर उसने एक छोटी दौड़-सी भी लगाई, और गर्दन के बाल फुलाकर अपनी पूँछ ज़रा ऊपर को की। सूअर की पूँछ का उठना आक्रमण का सिगनल है। सूअर विकट भट होता है, और एक बार हमले की ठान कर पीछे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

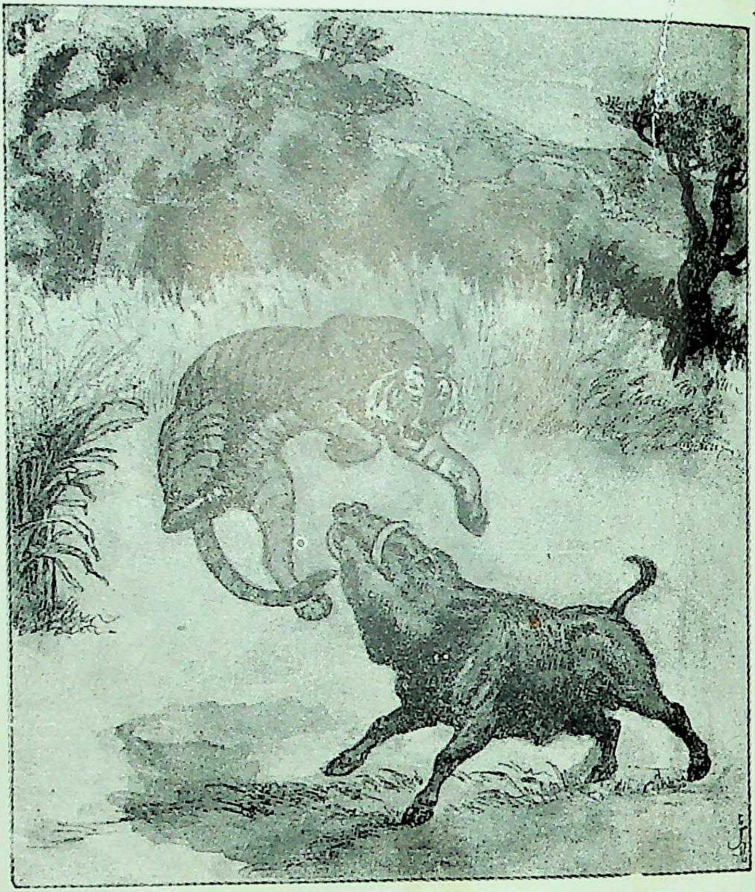

"जंगल को दहलाने वाले गर्जन के साथ शक्ति का वह पुंज विद्युतगति से सूअर पर टूट पड़ा।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पीठ नहीं दिखाता। सूअर ने भी समझा कि उस स्थान पर वह पहले से क़ाबिज़ था। शेर का वहाँ आना मदाखलत बेजा है, इसलिए, अपने अधिकार की रक्षा के लिए शेर को सबक़ सिखाना चाहिए।

मैदान में दोनों लड़ाके जम गये। शेर घात लगा कर कभी छपकता और कभी सूअर के चारों ओर रेंगता-सा चलता, कि किसी प्रकार पीछे से उस पर हमला करे। सूअर भी शेर की घात का ख़याल करके पैंतरे बदलता और अपना सिर उसकी ओर ही रखता। दाएँ-बाएँ गोलाकार चक्कर में, शेर और सूअर, सम्हले और तने, कुछ देर तक हमले का अवसर देखते रहे। पैंतरों का चक्कर कुछ और संकीर्ण हुआ। गुर्राहट और हू-हुक्ख के ताल दोनों ही पहलवान ठोंक रहे थे। दावघात और ताल-ठुकाई कुछ ही सेकेण्डों के लिए हुई। शेर एक बार लम्बा हो कर ज़मीन से मिल-सा गया। पुट्ठों और स्नायुओं को खींच कर उसने अपने कसे-कमाये और फुर्तीले शरीर को एकत्र-सा किया, और जंगल को दहलाने वाले गर्जन के साथ शक्ति का वह पुंज विद्युत्गति से सूअर पर टूट पड़ा। एक मिनट के लिए दोनों की लड़ाई में रोमांचकारी उत्तेजना थी। एक ही तेज़ और कौशलपूर्ण थाप से, जो सूअर के जबड़े पर पड़ी थी, बलिष्ठ सूअर लड़खड़ाने लगा। उस थाप के साथ शेर का बोझा तीव्र गति से सूअर के ऊपर गिरा था; पर सम्हल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर सूअर ने 'हू-हुक्ख' की, और क्रोध-पूर्ण जलती हुई आँखों से पैंतरा बदल कर उसने अपनी अटूट गर्दन और मज़बूत सिर से तीन-चार तीव्र वार, दाएँ और बाएँ, शेर पर किये।

सूअर के पेंच चार ही तो होते हैं, और वे चारों पेंच उसको खूब रवाँ होते हैं—सीधी टक्कर मारना, दांएँ और बाएँ काँपें घुसेड़ना, और कच-कच कर के दाँतों से चबा डालना। अन्तिम पेंच वह प्रायः अपने अन्तिम समय में ही करता है। घायल हो कर जब वह आदमी को चबाता है, तो आदमी का बचना कठिन ही है। पैर पकड़ कर चबाता है, और ऊपर घुटने और जाँघ तक हड्डियों को कच-कच करता हुआ तोड़ डालता है—भुरकुट कर डालता है। साधारणतया टक्कर मारता हुआ वह भाग जाता है। शिकारी निशाना चूकने पर टक्कर लगते ही कलामुंडी खा कर गिरता है, और हाथ-पैर झाड़ तथा थोड़ी-बहुत चोट झेल कर बच जाता है। पेंच नम्बर दो और तीन—दाएँ और बाएँ टक्कर मारने के मानी हैं, पैनी काँपों को शत्रु के शरीर में इंचों गहरी और लम्बी घुसाना। कभी-कभी लगातार एक के बाद दूसरे, पहले, दूसरे और तीसरे नम्बर के पेंचों को चला कर वह क़हर ही ढाता है। अब सूअर ने सम्हल कर दूसरे और तीसरे नम्बर के पेंच चलाये, और शेर की बग़ल में तीन-चार छेद कर दिये। शेर के शरीर से खून के झरने-से झरने लगे।

इस प्रकार पहली कुश्ती बराबर पर छूटी; पर मार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिक खाई सूअर ने। शेर के प्रहार से सूअर के सिर और गालों पर खाल और मांस के चिथड़े लटक रहे थे, ऊपर सिर की खाल उधड़ कर बुरके की भाँति सूअर की आँखों पर आपड़ी थी। फलस्वरूप वह अर्धअन्ध-सा हो गया था; लेकिन सूअर की युद्ध-प्रवृत्ति और क्रोध की मात्रा घटी न थी, वरन् और भी प्रज्ज्वलित हो गई थी।

शेर साहब पर भी बुरी तरह बीत रही थी। छाती और बग़ल के छेदों से फ़व्वारे फूट निकले थे। पूँछ की गति उसकी अनिश्चित मनोवृत्ति की द्योतक थी। उससे यह झलक रहा था, मानो शेर कह रहा हो कि मैं किस बला में आ फँसा!

सूअर क्रोध से भन्ना रहा था। बिगड़ कर और लल-कार—'हू-हुक्ख'—कर वह शेर पर टूट पड़ा! भगकर उसने पेंच नम्बर एक को चला कर दूसरे, तीसरे और चौथे नम्बर के पेंचों को क्रमानुसार और क्षणों में ही चलाना चाहा; पर फुर्ती की प्रतिमा शेर ने सूअर के प्रथम दाव को बचाया, और जैसे दोहरी-सी हो कर बिल्ली चूहे पर टूट पड़ती है, वैसे ही शेर उछलकर सूअर की गर्दन पर आ गिरा। शीघ्र ही सूअर के अगले पुट्ठों में शेर के कीले घुस गये, और उसके पंजों ने उन्मत्त और कम्पित सूअर को फाड़ना प्रारम्भ किया। भँभोड़ने और फाड़ने से भारी-भरकम सूअर की दुर्दशा होने लगी, और ऐसा प्रतीत हुआ कि अपनी उद्दण्डता का फल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सूअर को मिल गया। शेर तगड़ा ही नहीं पड़ रहा था, वरन् अपने प्रतिद्वन्द्वी को ठंडा करता हुआ दिखाई देता था। सूअर लड़खड़ा कर आगे को गिरा। मार की चोट से, अथवा दावघात से, सो कहना कठिन है। यह हुई दूसरी कुश्ती, जो बराबर रही; पर शेर ने सूअर की दुर्गति कर डालीं।

मगर सूअर के गिरने का फल हुआ शेर का सूअर के सिर पर हो कर आगे गिर पड़ना। शेर के आगे गिरते ही सूअर उसकी छाती पर चढ़ बैठा। अपने अगले पैर शेर की छाती पर रख कर तीन-चार विकट हमले सूअर ने किये। अपनी पैनी और बड़ी काँपों से उसने शेर की छाती को फाड़ डाला। जैसे कड़ी ज़मीन में फाला चर्र करता हुआ जाता है, वैसे ही सूअर की तीखी काँपों ने शेर की छाती को जोत-सा डाला। 'आव, घुर्र' करके शेर पंजे और मुँह चलाता था; पर शेर की तोमड़ी बन्द थी, और सूअर का भी नाकों दम था। चोट करके, शेर को छोड़ कर, सूअर लड़खड़ाता और थका हुआ-सा कुछ दूर जा बैठा; पर क्रोध और युद्ध-जिज्ञासा से अब भी वह अपने जबड़े कच-कच करके चला रहा था। क्रोधित शेर हाँपता हुआ एक ओर वहीं पड़ा-पड़ा फूँ-फाँ करके, अपना रोष प्रकट कर रहा था। यह थी तीसरी कुश्ती, जिसमें सूअर तगड़ा पड़ा; पर जोड़ रहा बराबर।

***

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राण-वेदना को कम करने के लिए दो आवाज़ें हुईं— "धाँय-धाँय!" जंगल गूँज गया। चकवा ने कौतूहल से पूछा—"कें ऊँ?" दूसरे तट से चकवी ने उत्तर दिया— "केंऊँ।" जंगल प्रतिध्वनित हुआ—'अ र र र घ र र र!' और दोनों लड़ाके शान्त हो गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्घटना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्घटना

मेघाच्छादित आकाश में, बिजली कैसी टेढ़ी-मेढ़ी दीख पड़ती है, बर्फ़ानी नदी की गति कैसी वक्र होती है; पर हैं दोनों सजीव। बिजली की तड़प और सरिता के प्रवाह में उच्चतम त्याग और सेवा-भाव छिपे हैं। उनकी संहारशक्ति नगण्य है। तड़ित-दर्प पौदों और वृक्षों को नाइट्रोजन देता है, और सरिता-गति पृथिवी को उर्वराशक्ति तथा जल प्रदान करती है। मानव-संसार में भी वे ही व्यक्ति बिजली और सरिता के समान सजीव और शक्तिशाली होते हैं, जिनके जीवन के मूलमन्त्र हैं—त्याग और सेवा-भाव। तालों और पोखरों के अचल पानी के समान अपने ही में केन्द्रीभूत—अपने ही लिए संग्रह करने की भावना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में विनाश के कीटाणु स्वतः ही रहते हैं। केवल अपने लिए संग्रह की भावना, और अपनी विभूति को दूसरों में बाँटने के अभावजन्य दोष—जिन्हें दूषित पूँजीवाद के दुष्परिणाम भी कह सकते हैं—जीवन के अनेक पहलुओं में फैल गये ह। फलस्वरूप एक ओर विलासिता की वैतरणी बह रही है, तो दूसरी ओर दारुण दरिद्रता की प्रचण्ड ज्वाला मानव-पुतलों को जला रही है। विलासिता-वैतरणी में ग़ोते खानेवालों के हृदयों में बच्चों के रुदन, ग़रीबों के क्रन्दन और पीड़ितों के चीत्कार से चोट नहीं लगती। दूषित पूँजीवाद के दो यमों ने—विलासिता और घोर दरिद्रता ने—त्याग, सेवा-भाव और सिद्धान्त के लिए मरमिटने की आकांक्षा-रूपी धवल शिखरों को ढक-सा लिया है; पर इस विषम परिस्थिति में, आदर्शहीनता के निविड़ अन्धकार में भी, जीवन-नौका खेनेवाले समझदार माझी को, आदर्श, त्याग, सेवा और कर्त्तव्यपालन-रूपी दिव्य ज्योति दृष्टिगोचर होती है, और ऐसे दीपकों से लोगों के हृदयों में साहस, त्याग और सेवा का प्रकाश होता है।

***

१९०९ ई० की बात है। शाही जर्मन सेना के एक वीर सैनिक—पाल ग्रेट्ज़—ने मोटर द्वारा मध्य-अफ़्रीका को, हिन्द-महासागर से अटलांटिक महासागर के तट तक,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पार किया। सन् १९०९ में इस प्रकार की यात्रा का बड़ा महत्त्व था। यात्रा की सफलता ने साहसी ग्रेट्ज़ की खोज विषयक अभिलाषा को और भी तीक्ष्ण कर दिया। इस कारण उसने बर्लिन लौट कर मध्य-अफ़्रीका को—पूर्व से पश्चिम तक—मोटर-नाव से पार करने की ठानी, और निश्चय किया कि वह ज़म्बज़ी नदी, बैंगवीयलो झील और कांगो नदी के मार्ग से अपनी यात्रा करेगा। लगभग छह हज़ार मील की यात्रा थी, और मार्ग के अनेक भाग बिना खोजे हुए थे। पाल ग्रेट्ज़ ने इसलिए यात्रा की ख़ूब तैयारी की। मार्ग का उसने एक अच्छा मानचित्र तैयार किया, और प्रस्थान से पूर्व सभी बातों की विस्तृत योजना बना ली। उसने अपनी मोटर-नाव का नाम रखा—'सरौती'। 'सरौती' में केवल सात व्यक्तियों को ले जाने की ताक़त थी। ग्रेट्ज़ ने अपने साथी भी चुन लिये। मोटर-नाव से, बिन खोजे हुए प्रदेश में जाना—और सो भी मध्य-अफ़्रीका के उस समय के अगम्य स्थानों में हो कर—एक साहसिक मुहिम थी। ग्रेट्ज़ के साथी सब चुने हुए—वीरता के पुतले थे। वे थे—वाइस्कोप फोटोग्राफ़र फ़रासीसी फ़ाइरे, अफ़्रीकन रसोइया जेम्स और चार अफ़्रीका-निवासी।

सम्पूर्ण तैयारी के उपरान्त पोर्चगीज़ पूर्वीय अफ़्रीका के एक छोटे बन्दरगाह कुइलीमेन से ग्रेट्ज़ अपने छह साथियों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समेत चल पड़ा। 'सरौती' में बैठे उन सातों वीरों के हृदय बल्लियों उछल रहे थे। 'सरौती' भी पानी को चीरती, सजीव प्राणी की भाँति, प्रफुल्ल हो चलने लगी। पाल ग्रेट्ज़ की आत्मा आनन्द-विभोर थी। किसलिए? शिकार के लिए? केवल शिकार के लिए नहीं। अर्थ-लाभ के लिए? सो भी नहीं। उसे तो अपनी कीर्ति और नाम की लालसा थी। सन् १९०९ तक किसी भी व्यक्ति ने मार्गस्थित बैंगवीयलो झील की खोज न की थी। किसी गौरांग के उधर जाने की बात तो दूर, ग्रेट्ज़ ने अमेम्बा जाति के लोगों से सुना था कि, बैंगवीयलो झील के निकट और दूरवर्ती लोग, झील के नाम तक को अशुभ समझते हैं। यह झील उत्तरी-पूर्वीय रोडेशिया के बीचोबीच है। ग्रेट्ज़ ने अपनी पहली यात्रा में लोगों से इस झील के विषय में हृदय-कम्प करनेवाली किम्वदन्तियाँ सुनी थीं। लोगों का ख़याल था कि बैंगवीयलो झील में अनेक टापू हैं, वहाँ भीमकाय हाथी और जिराफ़ रहते हैं, और पानी में विशाल अजगर तथा अन्य भयंकर जीवों का निवास है। धरातल से ऊपर उठते हुए गरम पानी के सोतों के अस्तित्व की भी जनश्रुति थी, और जो कोई झील के किनारे जाने का साहस करता था, वह महामारी फैलानेवाली वायु से, जो दलदल के समीप बहती थी, समाप्त हो जाता था। ग्रेट्ज़ को लोगों ने यह भी बताया था कि जो अफ़्रीकन अपने डोंगों में झील को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गये, वे कभी लौट कर ही न आये ! उनके मत से बैंगवीयलो झील दिवंगत आत्माओं के लिए रौरव नरक था। बहुत से लोगों के मत से बैंगवीयलो झील मृत मनुष्यों का परलोक था, जहाँ पर कोई भी पार्थिव देहधारी मनुष्य जा ही नहीं सकता था। ऐसी किम्वदन्तियों ने ग्रेट्ज़ की खोज-लालसा को और भी तीव्र कर दिया। अतिशयोक्ति और विकृत कल्पनाशक्ति का ख़याल करते हुए भी ग्रेट्ज़ को बैंगवीयलो झील के अन्वेषण में एक विशेष आकर्षण था।

वास्तविक बात यह थी कि झील के चारों ओर मीलों तक अगम्य और गहरा दलदल था। उससे लगे अधकीचड़ प्रदेश में बड़े नरकलों का जंगल-सा था। इस कारण बैंग-वीयलो झील तथा उसके तटस्थ प्रदेश की खोज का संयोग उस समय बहुत कम था। ग्रेट्ज़ को पूरी आशंका थी कि बैंगवीयलो झील की खोज में उसका अदम्य उत्साह और विकट साहस कसौटी पर कसा जायगा, उसे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, और असफलता भी अनेक प्रयत्नों में रोड़े अटकायेगी; पर वह साहसिकता ही क्या, जिसमें उत्तेजना, मौत के आलिंगन की सम्भावना और विषम कठिनाइयाँ न पड़ें। यदि राष्ट्र और व्यक्तियों के जीवन में-से विपदाएँ तथा आदर्श के लिए मरने-मारने की घटनाएँ निकाल दी जायँ, तो वे केवल जानदार मुर्दे अथवा कंकाल-स्वरूप ही रह जायँगे। जितनी ही अधिक विपत्तियों और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुर्घटनाओं की कल्पना ग्रेट्ज़ के दिमाग़ में आती, उतना ही अधिक उसका उत्साह बढ़ता जाता।

इसके अतिरिक्त उसकी एक और भी लालसा थी। अमेम्बा-जाति के लोगों से उसने सुना था कि बैंगवीयलो झील के दलदली किनारों के निकट, असाधारण आकार के जंगली भैंसे पाये जाते हैं। वे इतने भयंकर और इतने विशाल काय सुने गये थे कि एक अद्भुत प्रकार के भैंसे प्रतीत हुए। झील के प्रथम गोरे अन्वेषणकर्त्ता की कीर्ति के साथ वह उन महिषासुरों के कुछ नमूने भी प्राप्त करना चाहता था। खोज की अभिलाषा के साथ भयंकर भैंसों की शिकार-लालसा ने आग में घी का काम किया।

***

'सरौती' बड़े मज़े से नदी की धार काटती हुई चली। एक-एक मील करके नदी की यात्रा होने लगी। कुइली-मैन से लगा कर फ़ाइफ़ नदी के वाटरशेड तक कोई विशेष घटना नहीं घटी। वहाँ से विशेष रूप से तैयार की हुई पहियेदार गाड़ी पर लाद कर, 'सरौती' को ज़म्बज़ी के तट तक लाया गया। भीषण गरमी और निरन्तर परिश्रम के कारण, ग्रेट्ज़ का दल काफ़ी थका हुआ था; पर वह हतोत्साह न था। जैसे-तैसे करके 'सरौती' को नदी में रखा गया। बस, यहीं से कठिनाइयों का सूत्रपात हुआ,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सो भी उग्र रूप में। 'सरौती' से पहले, छोटी डोंगियों के अतिरिक्त वहाँ से झील की ओर और कोई नाव नहीं गई थी। बीच में रेतियाँ और उथली ज़मीनें भी पड़ जाती थीं। हिप्पो (दरियायीघोड़ा या जलसूअर) छोटी 'सरौती' पर चढ़ने, या उसे पलटने की कोशिश कर रहे थे। मन्दगति से 'सरौती' धार की ओर चली जा रही थी। हिप्पो-आतंक, उसके फँस जाने की आशंका तथा अन्य किसी भावी भय से ग्रेट्ज़ और उसके साथियों के कलेजे मुँह को आ रहे थे; पर बैंगवीयलो झील के लगभग निकट पहुँचने तक कोई दुर्घटना नहीं हुई।

एक दिन प्रातःकाल प्राची दिशा से सूर्यदेव की तूलिका ने विश्व-पट पर रजनी-तम को पोत कर ज्यों ही सुनहरा रंग भरा, त्यों ही अनेकों किरणें—कूँचियाँ—ग्रेट्ज़ के नदी किनारे लगे तम्बू में प्रवेश कर गईं। मानो उन्होंने व्यंग्य से कहा—"ओ खोजियों, उठो! अभी बैंगवीयलो झील नहीं पहुँचे हो, सतर्क हो जाओ, प्राकृतिक जगत् में परिस्थितियाँ इस वेग से बदलती हैं कि, सुख और विषम दुःख के आगमन की कोई सूचना नहीं मिलती।" ग्रेट्ज़ और उसके साथी उठे। चारों ओर नीरवता थी। पहाड़ की चोटियाँ बालरवि-प्रदत्त सुवर्णाभूषणों से अलंकृत थीं। नदी के धरातल पर से कुहरे की चादर छिन्न-भिन्न हो रही थी। अपने दैनिक पथ पर सूर्य के कुछ बढ़ते ही ग्रेटज़ और उसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साथी 'सरौती' पर आ गये, और नदी की धार में बैंगवीयलो की ओर चल पड़े। प्रकृति के राज्य में कोई विशेष बात न थी। चारों ओर शान्ति थी। हाँ, नदी-तटवर्ती वृक्षों पर कभी-कभी पक्षी और बन्दर अपने नित्य के प्रोग्राम पर विषाद-सा करते सुने जाते थे।

इसी प्रकार बहुत देर तक चलने के उपरान्त, कलेऊ का समय हो आया। उचित स्थान देख कर ग्रेट्ज़ ने 'सरौती' को किनारे लगा दिया। नौकरों ने भोजन परोसने की तैयारी की। ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे मज़े से तम्बाकू पीते हुए बबर्ची जेम्स की पाचन-कला को निहार रहे थे। इतने ही में जेम्स ने कलेऊ के लिए बुलाया। ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे प्रसन्नतापूर्वक मेज़ की ओर जाने को खड़े हुए; पर क्या अन्न-जल की प्राप्ति में भाग्य प्रबल नहीं है? यदि नहीं, तो परसी थाली में हाथ से तोड़ा ग्रास कभी-कभी मुँह तक क्यों नहीं पहुँचता? दार्शनिक दृष्टि से हम भाग्य की भले ही यह परिभाषा कर सकें कि अपने कर्मों के शुभ और अशुभ फल का नाम भाग्य है; पर शिकारी जीवन में और उस जीवन में, जहाँ सफलता प्रायः संयोग पर निर्भर रहती है, भाग्य के मानी हैं, विधि की अमिट रेखा। ज्यों ही ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे खड़े हुए, त्यों ही वे सामने एक दृश्य देख कर स्तब्ध रह गये! वे मूर्तिवत खड़े थे। आँखें पथरा-सी गई थीं। कोई जादू-टोना की बात न थी, वरन्

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनसे पन्द्रह-सोलह गज़ की दूरी पर तीन भीमकाय भैंसे नदी-किनारे खड़े थे! आश्चर्य-मुद्रा में वे तीनों उन दोनों को घूर रहे थे। भैंसे चुपचाप खड़े थे। वे वहाँ तक इतनी सावधानी से आये थे कि किसी को उनके आने का पता तक न चला था।

वे साधारण भैंसे न थे। ग्रेट्ज़ को तो ऐसा प्रतीत हुआ, मानो वे पूर्व-इतिहास-काल के जानवरों में-से हों। दो-एक क्षण के लिए घोर नीरवता रही, और वह नीरवता मौत-सूचक नीरवता के समान थी, जब विश्व के सब प्राणी साँस लेना बन्द-सा कर देते हैं, और जीवन-ज्योति धीमी पड़ के बुझ जाती है। दो-तीन क्षण के उपरान्त भैंसों से आकस्मिक भेंटजन्य मोह दूर हुआ, और ग्रेट्ज़ को सामने खड़े हुए यमत्रय से भय की परिस्थिति प्रतीत होने लगी। बस, फिर क्या था। युद्ध के अटल नियम मारो या मरो का अनुसरण किया गया। लड़ाई में प्रायः वही जीतता है, जो मरना ही नहीं, मारना भी जानता है। यह ठीक है कि, जो मरना नहीं जानता, वह जीना भी नहीं जानता; पर सर्वदा मरना और पिटना किसी व्यक्ति तथा राष्ट्र के लिए श्रेयस्कर नहीं। मध्यकालीन भारत में हिन्दुओं की हार का एक विशेष कारण था। वे मरना तो जानते थे; मरने के उनके जैसे उदाहरण कम मिलते हैं, पर उन्हें मारना न आता था। पर जहाँ मरो या मारो की स्थिति हो—और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई बचाव की सूरत ही न हो, वहाँ पर पहले वार करना ही हितकर है। ग्रेट्ज़ की प्रसिद्ध मौज़र-रायफ़ल विद्युत्गति से उसके कन्धे पर लग गई, मानो उसने कहा—"शान्त शान्त क्षणं मूढ़ा मधु यावत् पिवाम्यहम्।" फिर मौज़र-कालिका दर्पी—धाँय। फ़ाइरे की भवानी ने भी शीघ्र ही आग उगली—धाँय। पक्षी विचलित हो गये। कालिका की धाँय वृक्षों को थर्राती और नवीन जीवन-ज्योति जगाती, दूर के पर्वत-शिखरों से टकराई, और वहाँ स्थान न पाकर और मार्ग रुका समझ कर, प्रतिध्वनि-रूप में लौटी—थर-र-र-र....आगे वाले भैंसे ने ठोकर-सी खाई। घुटना कर फिर उठा। धक्के और पीड़ा से उसने अपना भारी सिर हिलाया, फिर नदी के ऊपर को सरपट भागा और झाड़ियों में अदृष्ट हो गया। उसके दो साथी भी उसीके साथ विलीन हो गये। फ़ाइरे रायफ़ल लिये तन्मय खड़ा था कि कहीं घायल भैंसा आक्रमण न कर दे; पर दुबारा गोली चलाने का अवसर ही उसे न मिला। रह-रह कर भागते हुए भैंसों के आकार झाड़ियों में-से दिखाई पड़ जाते थे। वास्तव में दो ही भैंसे नज़र आते थे।

तीसरे भैंसे का क्या हुआ—यह प्रश्न था, जो ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे के सम्मुख था। अभी वे ख़तरे से बाहर न थे, क्योंकि घायल भैंसे के आक्रमण का भय था। जंगली भैंसा घायल हो जाने पर छिप कर और पीछे लौट कर भी आक्रमण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर बैठता है। फ़ाइरे और ग्रेट्ज़ को दो आशंकाएँ थीं। सम्भवतः घायल भैंसा आक्रमण करने फिर लौटे, और साथ ही यह भी सम्भावना थी कि तीनों साथ ही हों, और भगदड़ में दो ही दृष्टिगोचर होते हों। कुछ देर सोचने के उपरान्त एक तीसरी स्थिति भी उनकी समझ में आई, और वह यह कि घायल भैंसे ने अपने साथियों का संग ही कहीं न छोड़ दिया हो। घायल होने पर—विशेषकर अधिक घायल होने पर—सभी जानवर एकान्त और छिपा स्थान पसन्द करते हैं, ताकि वे वहाँ बेखटके पड़े रहें। यदि भैंसा अपने साथियों से अलग हो गया, तो वह अवश्यमेव बुरी तरह घायल हुआ होगा। ऐसी दशा में, ग्रेट्ज़ को विश्वास था कि, वह भैंसे का सिर प्राप्त कर सकेगा, इस खयाल के आते ही ग्रेट्ज़ अपने भाग्य को सराहने लगा; पर मनुष्य का भाग्य केवल भावनाओं और शेखचिल्ली की-सी योजनाओं से ही नहीं जाना जाता। भैंसे की प्राप्ति की आकांक्षा ने ग्रेट्ज़ की नस-नस में बिजली-सी फूँक दी। अब उन्होंने घायल भैंसे का पीछा करने की ठानी। कलेऊ यों ही रखा रह गया। आतुर शिकारी से घर-बार, भूख तथा अन्य झंझटों की ओर ध्यान देने की आशा करना अग्नि से शीतलता की आशा करना है। जेम्स तथा दो अफ़्रीकन लोगों को अनछुआ भोजन उठाने और 'सरौती' को लाद-लूद कर चलने की तैयारी करने का आदेश देकर, फ़ाइरे और ग्रेट्ज़ भैंसे की खोज पर चल पड़े।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खोज पर जाना कोई कठिन काम न था। झाड़ियों, पत्थरों, घास और पत्तियों पर ख़ून और मांस के टुकड़े मिले। ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे सतर्क पर प्रसन्न खोज पर चले जा रहे थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि भैंसा बुरी तरह घायल हो चुका है। खोज ज़म्बज़ी के किनारे की ओर को था, और भैंसा निःसन्देह बैंगवीयलो झील के चारों ओर वाले नरकलों में छिपने गया था। ऐसी दशा में ग्रेट्ज़ को उस रहस्यमयी झील के दर्शन का सौभाग्य, निश्चित समय से पूर्व ही, प्राप्त होने की सम्भावना थी।

घंटे-पर-घंटे बीतने लगे। बालरवि की अवस्था बढ़ कर पूरी तरुणाई को पहुँची, और उसकी प्रचण्ड किरणें शरीर को भूनने लगीं; पर धुन के पक्के और भैंसे की प्राप्ति के व्रत पर आरूढ़ ग्रेट्ज़ ने भूख, प्यास, गर्मी तथा अन्य बेचैनियों को धता बताई, और भैंसे की खोज पर वह बढ़ता ही गया। उस भीमकाय भैंसे को मारने की उसकी आसक्ति और भी प्रबल हो रही थी। उसने निर्णय कर लिया था कि जब तक भैंसा न मिलेगा, तब तक वह अपने शरीर और मन को किसी प्रकार का आराम नहीं लेने देगा। जो चीज़ घायल कर ली है, उसे मारना ही चाहिए।

छह-सात घंटे की निरर्थक खोज के उपरान्त शरीर ने जवाब-सा देना प्रारम्भ किया—प्रकृति के अटल नियम ने ग्रेट्ज़ को विश्राम लेने के लिए वाध्य किया, क्योंकि उस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिन प्रातःकाल से उसके पेट में कुछ भी न पड़ा था, और फिर शिकार में भूख का क्या ठिकाना। अपच, कुपच, अधपच तथा मन्दाग्नि शिकार की रगड़ में किनारा कर जाते हैं। और फिर स्वस्थ व्यक्ति की पाचनशक्ति तो भस्माग्नि का रूप धारण कर लेती है। ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे ने गत सायंकाल को भी कुछ नहीं खाया था। दोपहर लौट चुका था, और बिना कुछ खाये उस भयंकर खोज पर जाना अत्यन्त कठिन था। अतः कुछ देर विश्राम की ठहरी। ग्रेट्ज़ ने अपने एक अफ़्रीकन नौकर द्वारा जेम्स को नदी के मार्ग से, वहाँ आने का आदेश भेजा। ग्रेट्ज़ और उसके साथी पेड़ों की छाया में सहारा लेकर लेट गये और भोजन की प्रतीक्षा करने लगे।

सूर्यास्त से एक घंटा पूर्व मोटर-नाव वहाँ आ पहुँची, और जेम्स ने झटपट भोजन की तैयारी की। कलेऊ, दोपहर का भोजन और चाय सब एक ही खुराक में होने वाले थे। भोजन की तैयारी के समय मुँह आँखों से भोजन का स्वाद ले रहा था। जब भोजन तैयार हो रहा था, तब ग्रेट्ज़ ने अपने अफ़्रीकन नौकरों में-से तीन को घायल भैंसे की खोज के लिए भेजा, क्योंकि भैंसा वहीं कहीं पड़ोस की झाड़ी में अवश्य छिपा पड़ा था। भैंसे की प्राप्ति के लिए वह दृढ़ संकल्प हो चुका था। ग्रेट्ज़ ने भैंसे के ढूँढ़ने पर उनको यथेष्ट पुरस्कार देने का भी वचन दिया। पुरस्कार की लालसा से वे तीनों तेज़ी से घनी झाड़ियों में घुस गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे ने अभी भोजन समाप्त ही किया था कि वे तीनों अफ़्रीकन दौड़ते हुए वापस आये, और घायल पर्वताकार भैंसे के देखने की सूचना दी। ग्रेट्ज़ को अपने भाग्य पर भरोसा था, और उसी प्रकार के समाचार की वह आशा भी कर रहा था। फ़ाइरे और ग्रेट्ज़ उत्तेजित हो कर उछल पड़े, और अपनी रायफ़लें लेकर चल पड़े। थोड़ी ही देर में उनके सामने की लम्बी घास फटी और भैंसा उन पर टूट पड़ा, मानो पृथिवी के गर्भ से वह यम उनके लिए निकल पड़ा हो।

ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे ने एकदम फ़ायर किये। दोनों की रायफ़लों की आवाज़ एक ही मालूम हुई। फ़ायर करने के उपरान्त ग्रेट्ज़ क्रोधित भैंसे के आक्रमण से बचने के लिए एक ओर कूद गया। कूदने में ग्रेट्ज़ का पैर घास में छिपे एक पेड़ की जड़ में उलझ गया, और वह आगे घुटनों के बल गिरा। यह साधारण-सी, पर दैवी घटना ही उसकी जीवन-रक्षा का सहारा हुई। यदि कूद कर कहीं वह खड़ा रहता, तो भैंसे के चौड़े और भयंकर सींगों से बिंध गया होता।

जैसे ही ग्रेट्ज़ आगे को गिरा, वैसे ही क्रोध से फुंकारते हुए भैंसे ने नीचे को सिर किया। अपने उन क्रूर सींगों से उसने ग्रेट्ज़ को आकाश में उछालने का भरसक प्रयत्न किया; पर उसका शरीर सींगों में न पड़ सका। अन्त में ग्रेट्ज़ तेज़ी से उठा और अपनी सम्पूर्ण शक्ति समेट कर भैंसे के सींगों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से चिपट गया। ग्रेट्ज़ का अनुमान था कि अत्यन्त घायल होने के कारण भैंसा या तो गिर ही पड़ेगा, या फिर फ़ाइरे को सावधानी से फ़ायर करने का अवसर देगा। दो-एक क्षण तक, जो घंटे प्रतीत हुए, भैंसा और ग्रेट्ज़ की लड़ाई होती रही। खून की अत्यधिक कमी से पैदा हुई शिथिलता के कारण भैंसा बुरी तरह और शीघ्रता से क्षीण हो रहा था। इधर ग्रेट्ज़ का प्रयत्न था किसी प्रकार भैंसे को गिराना, अथवा इस प्रकार पकड़े रहना, जिससे फ़ाइरे अपनी गोली से उसको समाप्त कर सके; पर उस महिषासुर की अतोल शक्ति के सामने ग्रेट्ज़ की क्या बिसात? वह तो एक भुनगे के समान भी न था, और उसका साथी फ़ाइरे फ़ायर ही नहीं कर रहा था।

यह सब दृश्य दो-एक सेकेण्ड तक रहा। भैंसा ग्रेट्ज़ को अपने सींगों से झकझोर कर दूर करना चाहता था। सींगों पर से हिला कर गिराने की चेष्टा में वह अपना सिर इधर-उधर को हिलाता था। अपने विशालकाय सिर के हिलाने में उसके बाएँ सींग का अन्तिम सिरा ग्रेट्ज़ के दाहने गाल में घुस गया। पीड़ा के मारे उसकी चीख निकल गई। उसने तब अपने को पृथिवी पर से ऊपर उठते और आकाश की ओर फिंकते हुए महसूस किया। फिर क्या हुआ, सो ग्रेट्ज़ को कुछ नहीं मालूम। प्रकृति देवी ने उसकी चेतना शक्ति पर एक परदा-सा डाल दिया। फिर उसने महिषा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुर-संग्राम के अन्तिम और बीभत्स दृश्य को नहीं देखा।

ग्रेट्ज़ को बाद में मालूम हुआ कि अपने जीवन का कुछ भी विचार न कर उसी समय फ़ाइरे वीरतापूर्वक उसकी सहायता के लिए आ गया। उसने तब तक फ़ायर नहीं किया, जब तक उसे इस बात का पूरा विश्वास न हो गया कि गोली ग्रेट्ज़ के न लग कर भैंसे के लगेगी। जैसे ही भैंसे ने ग्रेट्ज़ को उछाल कर फेंका, वैसे ही फ़ाइरे ने दन्न से रायफ़ल दाग़ दी, और वह मारने के स्थान में उसे केवल घायल कर सका। उस गोली से भैंसे के क्रोधानल में नवीन आहुति-सी पड़ गई। बिगड़ कर और भन्ना कर वह एकदम फ़ाइरे पर टूट पड़ा, और उसको बार-बार सींगों पर रख कर आसमान पर उछाल-उछाल कर ऐसे फेंका—जैसे, लड़के फुटबॉल को ज़मीन पर आते ही ठोकर मारते हैं। फ़ाइरे का शरीर सींगों की मार से क्षत-विक्षत हो गया। भैंसा भी अचेत हो कर ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे के बीच गिर पड़ा।

ग्रेट्ज़ को जब चेतना हुई, तब उसने अपने-आप को खून से लथपथ और घोर पीड़ा से पीड़ित नदी-तट पर, दो अफ़्रीकनों की गोद में पड़े पाया। एक तीसरा आदमी उसके घाव धो रहा था। नीचे नदी में 'सरौती' समवेदना प्रकट करती हुई प्रतीत होती थी।

"दूसरा 'बवाना' (मालिक) कहाँ है?"—ग्रेट्ज़ ने धीमे स्वर से, मगर बड़े प्रयासपूर्वक पूछा। इतने ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

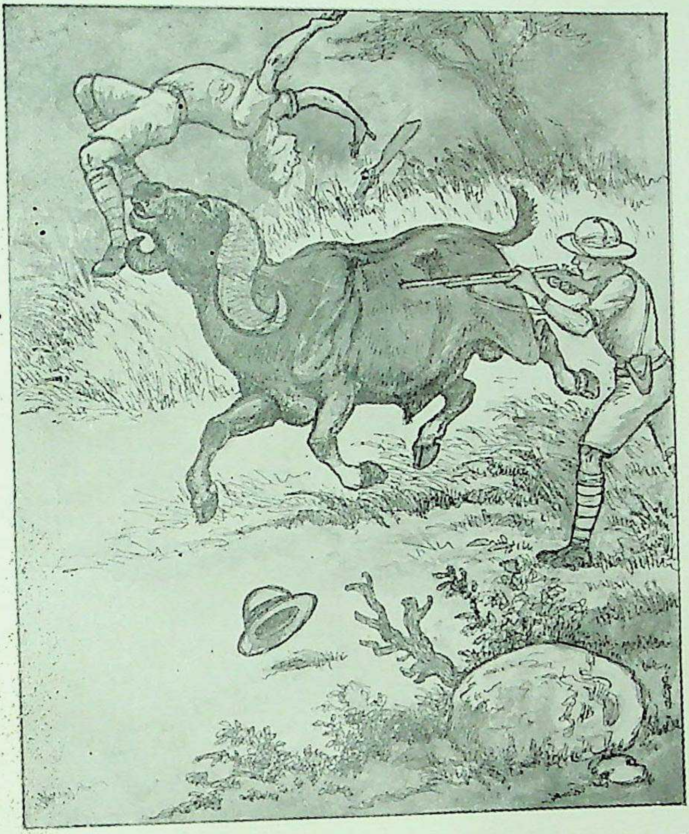

"जैसे ही भैंसे ने ग्रेट्स को उछाल कर फेंका, वैसे ही फ़ायरे ने दन्न से रायफ़ल दाग़ दी।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रयत्न से पीड़ा का वेग और भी बढ़ गया। थोड़ी देर के लिए उसे फिर बेहोशी आ गई।

"और लोग उसे यहाँ ला रहे हैं। वह शीघ्र ही मर जाएगा।"—एक आदमी ने शोकाकुल भाव से कहा।

"और भैंसा ?"

"मर गया।"—सूक्ष्म-सा उत्तर ग्रेट्ज़ को मिला। ग्रेट्ज़ के चेहरे की दाईं ओर और मुँह से गाढ़े ख़ून का पत-नाला-सा चल रहा था। दोनों अफ़्रीकनों ने उसे नदी-तट पर लगे तम्बू में रखा। तनक-सी गति से दर्द और रक्त-प्रवाह बढ़ जाता था। ग्रेट्ज़ ने बड़े परिश्रम से कहा—"जल्दी करो। ओषधि-बक्स लाओ।"

साथियों ने ओषधि-बक्स ला दिया। केवल एक ही काम हो सकता था, और वह था, जितनी जल्दी हो सके, घावों को यथाशक्ति सी दिया जाय। डाक्टरी सुई और धागा जितनी ही बार खाल में हो कर निकलने के मानी थे जीवनशक्ति की उतनी ही बूँदें शरीर में रखना। बस, एक आदमी ने हजामत वाले शीशे को आगे थामा, एक ने पीछे से ग्रेट्ज़ को थामा, और ग्रेट्ज़ ने कच्चे मांस में सुई भोंकी। टेढ़ा-बकुचा हथेली के बराबर घाव दाएँ कपोल में था, और ग्रेट्ज़ का नीचे का होंठ ढीला और कँपकँपाता हुआ लटक रहा था। लोग उसके घाव और उसकी सुई की गति पर घूर कर सहम रहे थे। जैसे-तैसे उसने टाँके लगाये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तोप से उड़ाये जाने, हलाहल पीने और एकदम मरने को बहुत लोग तैयार रहते हैं; पर इतनी कमज़ोरी में जब तनक से प्रयत्न से बेहोशी आ जाती हो, अपने-आप विकृत और गहरे घाव को सी कर स्वयं पीड़ा पहुँचाना टेढ़ी खीर है। शरीर के स्नायुओं तक ने जवाब-सा दे दिया था, और कमज़ोरी की घोर निद्रा उसे थपकियाँ दे-देकर आह्वान कर रही थी; पर ग्रेट्ज़ अद्वितीय साहस से डटा रहा। उसका नीचे का जबड़ा दो जगहों पर टूटा हुआ था—कान के निकट और होटों के समीप। इन टूटे हुए भागों से सटे, मसूड़ों और नसों के मांस से लगे, एक लम्बी हड्डी और तीन दाँत लटक रहे थे। कपोल के भयानक खुले भाग से दाँत, जड़ें और हड्डियाँ सफ़ेद और काँपती हुई दृष्टिगोचर होती थीं। भैंसे के सींग का सिरा जीभ में छिद गया था, और जड़ की ओर से जीभ अधटूटी हो गई थी। ग्रेट्ज़ को बार-बार थूकना पड़ता था, और थूक में हड्डी और टूटे दाँत के टुकड़े आते थे।

इस चीर-फाड़ के उपरान्त ग्रेट्ज़ ने पट्टी बाँधी और थोड़ी-सी ब्राण्डी पी, जिससे उसमें फ़ाइरे के घावों के चीर-फाड़ करने की शक्ति आ गई। जब ग्रेट्ज़ अपने घावों को जूते की भाँति सी रहा था, जेम्स ने फ़ाइरे और उसके लिए तम्बू में अलग-अलग बिस्तरे लगा दिये। जब ग्रेट्ज़ वहाँ पहुँचा, तब तक जेम्स ने क़ैंची से फ़ाइरे के कपड़े कतर डाले और उसके भयंकर घावों की देख-भाल ग्रेट्ज़ के ऊपर छोड़

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दी। ज्यों ही वह फ़ाइरे की ओर लड़खड़ाया, त्यों ही उसको चेतना हुई। धीमें से उसके होठ केवल दो शब्द उच्चारण कर पाये—"ईश्वर मालिक !"

... फ़ाइरे की दशा बड़ी शोचनीय थी। उसके बचने की कोई आशा न थी। ग्रेट्ज़ ने उसको मारफ़िया (अफ़ीम) का इंजेक्शन दिया, और फिर उसको अधिक-से-अधिक सुविधा पहुँचाने का प्रयत्न किया। जितनी भी उसकी पीड़ा कम की जा सकती थी, उतना ही उसके लिए अच्छा था। कम-से-कम तीन बार भैंसे ने उसे उछाल कर फेंका था, और तीनों ही बार उसके सींग घुसे थे। उसकी छाती के बाएँ भाग का पुट्ठा कच्चे मांस के साथ लटक रहा था। हृदय और फेफड़े सुरक्षित थे, और उसकी बाईं ओर पेड़ू और हृदय के बीच गहरा घाव था। इस घाव को ग्रेट्ज़ ने तुरन्त ही सी कर अन्य घावों के लिए यथोचित प्रबन्ध किया। ग्रेट्ज़ की इस चीर-फाड़ के उपरान्त जेम्स ने घाव धो और पट्टी बाँध कर फ़ाइरे को बिस्तर पर लेटा दिया। ग्रेट्ज़ भी इतने परिश्रम के कारण बड़ी कमज़ोरी महसूस कर रहा था, और अपने प्रिय साथी के लिए कुछ और करने के अयोग्य-सा था। फ़ाइरे ने विधिवत् साँस लेना प्रारम्भ किया। अपने बिस्तर पर पड़े-पड़े ग्रेट्ज़ उसकी श्वास-गति सुनता रहा। अब उसको उसके विषय में कुछ आशा-सी होने लगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रात्रि को घुप अन्धकार के वक्ष:स्थल में वह प्रदेश लीन हो गया। ग्रेट्ज़ के लिए वह कालरात्रि थी। असह्य पीड़ा और मुँह में दहकते हुए कोयले रखे की-सी वेदना से बेचैनी का कुछ ठिकाना न था। प्रात:काल थोड़ी देर के लिए अर्ध-निद्रा-सी उसे आई, और उसी से उसे काफ़ी आराम मिला। उषाकाल में वही कष्ट फिर प्रारम्भ हो गया। श्मशान का-सा वातावरण चारों ओर प्रतीत होता था।

चिल्लाने की बात तो दूर, ग्रेट्ज़ से बोला तक न जाता था। ताली बजा कर उसने अपने नौकरों को बुलाया। उतनी ही गति से बेहोशी-सी आती मालूम दी और पीड़ा बढ़ गई। नौकर आये, ब्राण्डी की एक ख़ुराक ले कर वह बड़ी कठिनाई और पीड़ा से उठा और फ़ाइरे की ओर को लड़खड़ाया। सूर्य की ज्योति के आगमन से पूर्व फ़ाइरे की जीवन-ज्योति बुझ चुकी थी, और ग्रेट्ज़ को फ़ाइरे के भाग्य पर बड़ी ईर्ष्या थी, क्योंकि आँखें बन्द हो जाने पर सब दु:खों का अन्त है।

***

यात्रा की सफलता की चौखट पर पैर रखते ही—बैंगवीयलो झील के किनारे पहुँचते ही—ग्रेट्ज़ की आशा पर पानी फिर गया। भाग्यचक्र ने उसके एक साथी का तो अन्त ही कर दिया था, और स्वयं भी वह बुरी तरह घायल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा बेकार हो चुका था। विधि की लकीरें अमिट होती हैं। जेम्स ने वीर फ़ाइरे को तम्बू के निकट ही दफ़नाने का प्रबन्ध किया।

सब से निकट स्थान उत्तरी पूर्वीय रोडेशिया का कासमा स्थान था। ग्रेट्ज़ ने सहायता के लिए समाचार भेजा, और सहायता के आने तक अपूर्व धैर्य से उसने परिस्थिति का सामना किया।

दिन-रात चल कर कासमा से डाक्टर और मैजिस्ट्रेट दो दिन में वहाँ आ पहुँचे, और उन चार-पाँच दिनों में—डाक्टरी सहायता के आने तक—ग्रेट्ज़ को जो शारीरिक और मानसिक कष्ट हुआ, उसकी कल्पना ही की जा सकती है।

डाक्टर ने बड़ी नाज़ुक हालत में ग्रेट्ज़ के चीरा लगाया, और एक साधारण से स्ट्रैचर पर रख कर उसे कासमा लाया गया। यात्रा के कष्ट और फ़ाइरे की मौत से ग्रेट्ज़ की दुर्गति हो गई। उसके साथ फ़ाइरे का शव भी ले आया गया। यात्रा-भर ताज़ियेदारी रही, कई मास तक कासमें में उसकी शुश्रूषा हुई, और शरीर में शक्ति आने पर उसे अन्तिम चीर-फाड़ के लिए दारुस्सलम जाना पड़ा।

* * *

ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे के आदर्श प्रत्येक शिकारी और सैनिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के लिए माननीय और अनुकरणीय हैं। अपने साथी की सहायता करना, और सो भी अपनी जान जोखिम में डाल कर, प्रत्येक भले आदमी और विशेषकर प्रत्येक खिलाड़ी का कर्त्तव्य है। फ़ाइरे अपनी जान बचा सकता था। भैंसे से उसका भिड़ पड़ना स्वार्थ की दृष्टि से ठीक न हो; पर नहीं, सच्चे शिकारी साथी की दृष्टि से उसका वह कृत्य उचित और प्रशंसनीय था। लोग मरते और जीते रहते हैं; पर वास्तव में वे ही जीते हैं और उन्हीं का नाम लिया जाता है, जो औरों के लिए निष्काम सेवा करते हुए मरते हैं। ग्रेट्ज़ का अदम्य साहस और उसकी सहिष्णुता भी कम प्रशंसनीय नहीं है। ग्रेट्ज़ और फ़ाइरे पक्के शिकारी थे। वे विलासी शिकारी नहीं थे, जिनकी शिकार-कला—शिकार-लिप्सा—केवल जीवों के मारने में ही होती है। बहुत-से आदमी हज़ारों और लाखों रुपये केवल इसी बात के लिए फूँक देते हैं कि बस, उनकी रायफ़ल से बूचड़ का काम हो जाय। उनकी गोली से चीज़ मर जाय, चाहे शिकार की उत्तेजना, परिश्रम और सैनिक शक्ति का सुख या दुःख कोई और भोगे। इन पंक्तियों का लेखक ऐसे शिकारियों के कृत्य को, जो वर्त्तमान दूषित पूँजीवाद के दुष्परिणाम हैं, निन्दनीय समझता है; पर फ़ाइरे और ग्रेट्ज़ जैसे शिकारियों को वह नतमस्तक प्रणाम करता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'प्राणों का सौदा' के लेखक

प० श्रीराम शर्मा की लिखी अन्य पुस्तकें

शिकार

'शिकार' में क्या है ? शिकार केवल बन्दूक़ और रायफ़ल की धाँय-धाँय नहीं, उसमें प्राकृतिक दृश्यों का सजीव वर्णन, अद्भुत वीरता के रोमाञ्चकारी वृत्तान्त और मनोभावों का सूक्ष्म विश्लेषण है। ग़रीबों और किसानों के चरित्र-चित्रण को पढ़कर आप मन्त्र-मुग्ध हो जायँगे।

साहित्याचार्य स्व० प० पद्मसिंह शर्मा ने लेखक की लेखन-शैली पर लिखा है—

"आप के लेखों का निशाना सीधा पाठकों के हृदय पर बैठता है। पढ़ने वाला लोट-पोट हो जाता है। आप ऐसा जीता-जागता चित्र खींचते हैं कि देखकर सहृदय पाठक आश्चर्य-चकित रह जाता है। लेखक की क़लम चूमने को जी चाहता है। आपकी वर्णन-शैली बड़ी सजीव, भाव-विश्लेषण मनोविज्ञान-सम्मत और भाषा विषय के अनुरूप बड़ी सुघड़ होती है।" छह चित्र, मूल्य केवल २॥)

सुलभ संस्करण

'शिकार' का संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित हुआ है, जो संयुक्त प्रान्तीय हाई स्कूलों के लिए भी स्वीकृत हो चुका है। इस संस्करण का मूल्य ॥=)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

(तिरङ्गे सुन्दर चित्र सहित)

झाँसी की मरदानी रानी स्वनामधन्या श्रीमती लक्ष्मीबाई के नामी नाम से कौन परिचित नहीं है! उस वीर देवी की कीर्ति-पताका आज सारे भारतवर्ष में फहरा रही है। लक्ष्मी-बाई के वीरतापूर्ण कार्य-कलाप को देख कर उनके विरोधियों को भी आश्चर्य से दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है। पण्डित श्रीराम शर्मा ने उन्हीं वीर-विदुषी रानी लक्ष्मीबाई की जीवनी लिख कर अपनी जादू-भरी क़लम का कमाल बड़ी ख़ूबी के साथ दिखाया है। ऐसी ओजस्विनी भाषा में इस प्रकार वीर भावों से भरी हुई लक्ष्मीबाई की जीवनी और कोई नहीं प्रकाशित हुई। पढ़ते ही शरीर में वीरता की बिजली कड़क जायगी और उत्साह से हृदय बल्लियों उछलने लगेगा। पहला संस्करण समाप्त हो गया। दूसरा सुन्दर संस्करण छप कर हाल ही में तैयार हुआ है। मूल्य ।।)

बोलती प्रतिमा

जुल्मों की आग में रात-दिन जलते और भूख की लपटों से झुलसते हुए ग़रीब किसानों की कथा का सजीव और स्वाभाविक चित्र देखकर दिल दर्द से तड़प उठता है, और पीड़ित मनुष्यता के प्रति, मन में स्वभावतः सहानुभूति की भावना उमड़ने लगती है। आज ही एक प्रति मँगा कर पढ़िए। मूल्य १।।) डाक-महसूल अलग।

पता—व्यवस्थापक, शङ्कर-सदन, आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रक्तपात

मूल लेखक—ख़्वाजा हसन निज़ामी

अनुवादक : श्रीराम शर्मा

'रक्तपात' में सन् १८५७ ई० के लोमहर्षकारी रक्तपात का वर्णन है। बिगड़े हुए विद्रोहियों ने गोरों को कैसे मारा और फिर गोरों ने कैसी ख़ूंरेज़ी की; दिल्ली को कैसी प्राणवेदना सहनी पड़ी; अन्तिम मुग़ल सम्राट् बहादुरशाह पर क्या बीती, इन सब बातों का हृदयविदारक वर्णन इस पुस्तक में है। जिस बहादुरशाह की हृत्तंत्री से यह निकला था कि :—

"न दरवेशों का ख़िरक़ा चाहिए, ना ताजे शाहाना।
मुझे तू होश दे इतना, रहूँ मैं तुझ पै दीवाना॥"

उसकी और उसका साथ देने वालों की दशा को कौन नहीं जानना चाहेगा। मूल्य १॥) डाक महसूल अलग

अश्रुपात

मूल लेखक—ख़्वाजा हसन निज़ामी

अनुवादक : श्रीराम शर्मा

प्रकाशक गंगा-पुस्तक-माला, लखनऊ

प० श्रीराम शर्मा की प्रस्तावित मौलिक रचनाएँ :—

१. पपीता ।), २. बनवासी २॥), ३. गंगाजी ५), ४. हिन्दुस्तानी मल्लविद्या ८), ५. किसान (उपन्यास) ४), ६. कैलाश यात्रा २), ७. जंगल के जीव ५)

मिलने का पता—व्यवस्थापक शङ्कर-सदन, आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुराग-रत्न

लेखक

स्वर्गीय महाकवि श्री प० नाथूराम शंकर शर्मा 'शंकर'

अनुराग-रत्न का यह दूसरा संस्करण वड़ी सुन्दरता से छपाया गया है। इसमें कुछ कविताएँ और बढ़ा दी गई हैं। इसमें ईश्वरभक्ति, धर्म-प्रेम, समाज-संशोधन, देशभक्ति आदि विविध विषयों पर सैकड़ों कविताएँ हैं। सर्वश्री स्वा० श्रद्धानन्द, ला० लाजपतराय, महात्मा हंसराज, डा० काशीप्रसाद जायसवाल, साहित्याचार्य प० पद्मसिंह शर्मा, साहित्याचार्य प० शालग्राम शास्त्री आदि महानुभावों तथा प्रसिद्ध-प्रसिद्ध पत्रों ने 'अनुराग-रत्न' की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। मूल्य १।।)

चिड़ियाघर

(द्वितीय संस्करण)

लेखक

प० हरिशंकर शर्मा

हास्यरस की सर्वश्रेष्ठ पुस्तक 'चिड़ियाघर' के होते हुए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोई भी सुरुचि-सम्पन्न हास्य-प्रेमी यह नहीं कह सकता कि हिन्दी में शुद्ध, परिष्कृत तथा सुरुचिवर्द्धक हास्य का अभाव है। बड़े-बड़े साहित्य-महारथियों ने इस बात को मुक्तकण्ठ से स्वीकार कर लिया है। जिसने इस पुस्तक को हाथ में लिया, उसके पेट में हँसते-हँसते बल पड़ गये और वह संसार की समस्त चिन्ताओं को भूल गया। मूल्य १)

प्रेम-प्रपंच

अनुवादक

श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र, बी० ए०, बी० एल०

प्रेम-प्रपंच सुप्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार तुर्गनेव का अद्‌भुत मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इस महान् कलाकार के उपन्यासों ने संसार में विशेष कीर्ति प्राप्त की है। यदि आप यह देखना चाहते हैं, कि एक महान् कलाकार किस प्रकार जीवन की गुत्थियों को खोलता है, और कठिन परिस्थितियों में किस सुन्दरता से हमें उपदेश भी देता है, तो एक बार प्रेम-प्रपंच अवश्य पढ़िये। मूल्य १।)

पता—व्यवस्थापक, शङ्कर-सदन, आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुद्रक—पी० टोपा, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh